THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

epaper.vaartha.com

वर्ष-29 अंक : 174 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टणम, तिरुपति से प्रकाशित) **भाद्रपद शु.12 2081 रविवार, 15 सितंबर-2024**

प्रधान संपादक - **डॉ. गिरीश कुमार संघी** हैदराबाद नगर ✲ **पृष्ठ : 16+32 मूल्य : 8 रुपये**

Sri koppula Praveen Kumar
TPCC Secretary

Sri G.S. Seetha Rama Raju

KOTTA RAGHU GOUD
On taking oath as new President of TPCC
Mass Hearted Leader
Hearty Congratulations to

Mr. MAHESH KUMAR GOUD ANNA

Sri Dr. G. Prashan Goud

Sri TGS (P) Sangreddy
Nakka Nagraju Goud

BHEEMAGOUNI DEVENDER GOUD
City President -Telangana Goud Sangham
Sr. Congress Leaders

PALLE LAKSHMAN RAO GOUD
Founding President --Telangana Goud Sangham,
TPCC Former Gen. Secretary , Contested M.P. Hyderabad

TCS Hyderabad Rangareddy Society

बारामूला में तीन आतंकवादी ढेर

जम्मू, 14 सितंबर (एजेंसियां)। कश्मीर के बारामूला जिले में शनिवार को सुरक्षाबलों ने मुठभेड़ में तीन आतंकवादियों को मार गिराया है। पुलिस ने बताया कि बारामूला जिले के पट्टन तहसील के चक टप्पर क्रीरी इलाके में हुई मुठभेड़ में तीन आतंकवादी मारे गए। पुलिस ने बताया, 'बारामूला जिले के चक टप्पर क्रीरी इलाके में सुरक्षाबलों और आतंकवादियों के बीच शुक्रवार देर शाम मुठभेड़ शुरू हुई थी।' उन्होंने कहा, 'बीती रात खराब रोशनी के कारण अभियान स्थगित कर दिया गया था। आज सुबह अभियान फिर शुरू किया गया और मुठभेड़ में तीन आतंकवादियों का ढेर कर दिया गया है।' अधिकारियों ने बताया, 'इलाके में तलाशी अभियान अभी भी जारी है। मारे गए आतंकवादियों की सही पहचान और उनके संगठन का पता लगाया जा रहा है।' इस बीच, जम्मू डिवीजन के किश्तवाड़ जिले के चटरू गांव में आतंकवाद विरोधी अभियान अभी भी जारी है, जहां शुक्रवार को आतंकवादियों के एक समूह के साथ मुठभेड़ में सेना के दो जवान शहीद हो गए और दो अन्य घायल हो गए थे।

बता दें कि चिनाब घाटी क्षेत्र के डोडा, किश्तवाड़ और रामबन जिलों में फैली आठ विधानसभा सीटों के साथ-साथ दक्षिण कश्मीर के अनंतनाग, पुलवामा, शोपियां और कुलगाम जिलों की 16 सीटों पर पहले चरण में 18 सितंबर को मतदान होगा। जम्मू, कठुआ और सांबा जिलों में 25 सितंबर और 1 अक्टूबर को जम्मू-कश्मीर चुनाव के दूसरे और तीसरे चरण में मतदान होगा। जम्मू डिवीजन के पहाड़ी जिलों पुंछ, राजौरी, डोडा, कठुआ, रियासी और उधमपुर में पिछले दो महीनों से अधिक समय से सेना, सुरक्षाबलों और नागरिकों पर आतंकवादी हमले हुए हैं। आतंकवादी घात लगाकर अचानक हमला करते हैं और फिर पहाड़ी क्षेत्रों के जंगलों में गायब हो जाते हैं। इन हमलों के लिए विदेशी आतंकवादियों के एक समूह को जिम्मेदार बताया जा रहा है। यह आतंकी 40 से 50 की संख्या में हैं। यह रिपोर्ट आने के बाद सेना ने उन जिलों के घने जंगलों वाले इलाकों में 4,000 से अधिक प्रशिक्षित सैनिकों को तैनात किया है, जिनमें विशिष्ट पैरा कमांडो और पर्वतीय युद्ध में प्रशिक्षित सैनिक शामिल थे।

चोरों ने आधी रात में 40 लाख का माल बोरी में भरकर ले गए

नागपुर, 14 सितंबर (एजेंसियां)। नागपुर में एक मोबाइल की दुकान में चोरी का सीसीटीवी सामने आया है। चोरों ने इस दुकान से 35 से 40 लाख रुपए की कीमत के मोबाइल पर हाथ साफ किया है। ये चोर बोरी में भरकर मोबाइल ले गए। नागपुर में एक मोबाइल की दुकान में 3 चोर बीती रात को घुस गए और दुकान का सारा माल साफ कर दिया। मामलादिघोरी में स्थित मोबाइल शॉपिंग का है। ये पूरी घटना सीसीटीवी में कैद हो गई। तीनों मिलकर शटर को ऊपर करते हैं। इस दौरान एक आदमी दुकान के अंदर घुस जाता है और बाकी के दो नजर बाहर रहते हैं।वह बड़ी-बड़ी दो बोरियों में लगभग 80 मोबाइल भरकर शटर के पास रखता है। उसकी पीठ पर जो बैग था, इसके बाद चोर शॉपिंग केंद्र से बाहर निकलता है और बोरियों समेत चंपत हो जाता है।

'ये शर्मनाक है', व्यवसायी के वित्त मंत्री से माफी मांगने के विवाद पर भड़के सीएम स्टालिन

चेन्नई, 14 सितंबर (एजेंसियां)। तमिलनाडु में व्यवसायी के केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से माफी मांगने के मामले ने तूल पकड़ लिया है। अब तमिलनाडु के सीएम एमके स्टालिन ने भी इसे लेकर बयान दिया है और केंद्रीय वित्त मंत्री की आलोचना की। स्टालिन ने कहा कि जिस तरह से वित्त मंत्री ने स्थिति को संभाला, वह बेहद शर्मनाक है। शनिवार को एक कार्यक्रम के दौरान तमिलनाडु के सीएम एमके स्टालिन ने कहा कि 'जिस तरह से केंद्रीय वित्त मंत्री ने स्थिति को संभाला, वह बेहद शर्मनाक है क्योंकि व्यवसायी ने जीएसटी को लेकर सही मांग की थी।' हाल ही में केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण कोयंबटूर के दौरे पर गईं थी। उस दौरान एक कार्यक्रम में मशहूर रेस्तरां चेन श्री अन्नपूर्णा रेस्तरां के मालिक श्रीनिवासन ने जीएसटी की जटिलता की शिकायत वित्त मंत्री से की। व्यवसायी ने कहा कि मिठाई पर जीएसटी 5 प्रतिशत है, जबकि नमकीन पर 12 प्रतिशत। क्रीम से भरे बन पर जीएसटी 18 प्रतिशत है, जबकि बन पर कोई जीएसटी नहीं है। ग्राहक अक्सर इसकी शिकायत करते हैं और कहते हैं कि हमें सिर्फ बन दे दीजिए, हम खुद उसमें क्रीम लगा लेंगे। श्रीनिवासन की बातें सुनकर कार्यक्रम में मौजूद सभी लोग हंस पड़े। इस दौरान वित्त मंत्री भी मुस्कुराती नजर आईं और उन्होंने इस पर विचार करने का आश्वासन दिया। हालांकि इसके बाद भाजपा की मीडिया सेल के समन्वयक के अकाउंट से एक वीडियो साझा किया गया, जिसमें व्यवसायी श्रीनिवासन केंद्रीय वित्त मंत्री से माफी मांगते नजर आ रहे हैं। इस दौरान श्रीनिवासन ने वित्त मंत्री से उन्हें माफ करने की विनती की और स्पष्ट किया कि वह किसी राजनीतिक पार्टी का हिस्सा नहीं हैं। हालांकि इस वीडियो के सामने आते ही इसकी आलोचना शुरू हो गई और यूजर्स ने इसे व्यवसायी का अपमान बताया और कहा कि ऐसा लगता है कि व्यवसायी को माफी मांगने के लिए मजबूर किया गया। विवाद बढ़ता देख तमिलनाडु भाजपा के अध्यक्ष के अन्नामलाई ने भी माफी मांगी थी।

मणिपुर के लोगों को निरंतर पीड़ा और पीएम देश-विदेश घूमते हैं

लेकिन मणिपुर जाने से बच रहे हैं: कांग्रेस

इंफाल, 14 सितंबर (एजेंसियां)। कांग्रेस ने मणिपुर में हिंसा को लेकर शनिवार को एक बार फिर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर निशाना साधा और आरोप लगाया कि वह देश के विभिन्न हिस्सों तथा दूसरे देशों की यात्रा कर रहे हैं, लेकिन इस अशांत प्रदेश में जाने से जानबूझकर बच रहे हैं। मणिपुर में पिछले साल मई से अब तक मैतेई और कुकी समुदायों के बीच संघर्ष में 200 से अधिक लोग मारे जा चुके हैं और हजारों लोग बेघर हो गए हैं।

कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, "तीन मई, 2023 को मणिपुर में हिंसा भड़की और जलने लगा। 3 जून, 2023 को हिंसा और दंगों के कारणों तथा इसके फैलने की जांच के लिए तीन सदस्यीय जांच आयोग का गठन किया गया था। इसे अपनी रिपोर्ट सौंपने के लिए छह महीने का समय दिया गया था।" उन्होंने कहा कि अभी तक कोई रिपोर्ट नहीं सौंपी गई है तथा आयोग को ऐसा करने के लिए अभी 24 नवंबर 2024 तक का समय दिया गया है। रमेश ने कहा कि इस बीच मणिपुर के लोग निरंतर पीड़ा का सामना कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि "नॉन-बायोलॉजिकल" प्रधानमंत्री देश के अन्य हिस्सों और विदेश में यात्रा करने की योजना बनाते रहते हैं तथा इस सबसे अशांत राज्य की यात्रा को जानबूझकर टालते रहते हैं।

क्या स्मृति ईरानी होंगी दिल्ली में भाजपा का चेहरा?

नई दिल्ली, 14 सितंबर (एजेंसियां)। दिल्ली में भाजपा ने अपनी चुनावी तैयारियां तेज कर दी है। रायबरेली लोकसभा चुनाव में हार के बाद पूर्व केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी की सक्रियता दिल्ली में बढ़ती दिखाई दे रही हैं। ऐसे में कयास लगाए जा रहे हैं कि आगामी विधानसभा चुनावों में स्मृति दिल्ली में भाजपा का चेहरा हो सकती हैं। भाजपा ने स्मृति ईरानी को दिल्ली में 14 जिला यूनिट में से 7 में सदस्यता अभियान की देखरेख का जिम्मा सौंपा गया है। सदस्यता अभियान से संबंधित कार्यक्रमों में वे सक्रिय रूप से शामिल हो रही हैं। बताया जा रहा है कि उन्होंने दक्षिण दिल्ली में एक घर भी खरीदा है। पार्टी को दिल्ली में एक ऐसे नेता की तलाश हैं मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व वाली आम आदमी पार्टी (आप) को कड़ी टक्कर दे सके।

पार्टी इस बार यहां किसी महिला चेहरे पर दांव लगा सकती है। दिल्ली की राजनीति में महिला चेहरा भी काफी चला है। सुषमा स्वराज दिल्ली में 1998 में दिल्ली में मुख्यमंत्री बनी। इसके बाद शीला दीक्षित ने 1998 से 2013 तक दिल्ली की कमान संभाली। 2015 में भी भाजपा ने किरण बेदी के चेहरे पर दांव लगाया था। 2015 में भाजपा ने तेजतर्रार पुलिस अधिकारी रहीं किरण बेदी पर दांव लगाया था। हालांकि केजरीवाल के सामने भाजपा का यह दांव पूरी तरह फेल हो गया। 2020 में तो पार्टी ने किसी को भी मुख्यमंत्री उम्मीदवार घोषित नहीं किया था।

2013 में भाजपा मात्र 3 सीटें ही जीतने में सफल रही जबकि 2020 में पार्टी 8 सीटें ही हासिल कर सकी। भाजपा के कई नेताओं और कार्यकर्ताओं का मानना है कि सुषमा स्वराज की तरह ही तेज तर्रार नेता मानी जाने वाली स्मृति केजरीवाल एंड पार्टी को कड़ी चुनौती दे सकती है। हालांकि सुषमा की बेटी और भाजपा सांसद बांसुरी स्वराज, मनोज तिवारी, वीरेंद्र सचदेवा समेत कई नेता भी खुद को दिल्ली में भाजपा की ओर से मुख्यमंत्री पद का दावेदार हो सकते हैं।

सुप्रिया श्रीनेत के रिएक्शन पर नोएडा के डीएम की प्रतिक्रिया, कहा- ' एक्स पर अकाउंट हुआ हैक'

नई दिल्ली, 14 सितंबर (एजेंसियां)। गौतमबुद्ध नगर के डीएम के आधिकारिक एक्स हैंडल से कांग्रेस की सुप्रिया श्रीनेत को ट्रोल करने वाली टिप्पणी वाली घटना कल से सुर्खियों में है। हालांकि, इस मामले में नोएडा के डीएम मनीष वर्मा ने अपना स्टैंड स्पष्ट कर दिया है। उन्होंने एक्स पोस्ट पर लिखा कि उन्हें शुक्रवार देर शाम को खुद को अकाउंट हैक होने की जानकारी मिली। डीएम मनीष वर्मा ने कहा, हमने पुलिस को सतर्क कर दिया है और उचित कार्रवाई की जा रही है। डीएम ने एक्स की लिखी चिट्ठी में कहा, किसी असामाजिक तत्व ने डीएम गौतमबुद्ध नगर की आईडी का दुरुपयोग किया है और गलत टिप्पणी पोस्ट की है। इसे गंभीरता से लेते हुए, तुरंत एक प्राथमिकी दर्ज की गई है और कार्रवाई की जा रही है। गलत ट्वीट और टिप्पणी की साइबर सेल द्वारा जांच की जा रही है।

'इतिहास बदला नहीं जा सकता'

दरअसल, शाम करीब छह बजे कांग्रेस नेता सुप्रिया श्रीनेत ने एक्स पर एक वीडियो पोस्ट किया, जिसमें उन्होंने कहा, "इतिहास बदला नहीं जा सकता, इतिहास बनाया जाता है, नरेंद्र मोदी जानते हैं कि इतिहास उन्हें कैसे याद रखेगा, इसीलिए वे चिंतित हैं।"

'संवैधानिक पदों पर बैठे लोग दे रहे नफरत को हवा'

इसके जवाब में नोएडा डीएम के आधिकारिक हैंडल से की गई टिप्पणी में कहा गया, "अरे तुम अपने और अपने पप्पू के बारे में सोचो।" इस पर सवाल उठाते हुए सुप्रिया श्रीनेत ने इसका स्क्रीनशॉट शेयर किया और लिखा, "ये डीएम नोएडा हैं। वे पूरे जिले के लिए जिम्मेदार हैं। देश के विपक्षी नेता राहुल गांधी के बारे में उनकी भाषा और सोच जरूर देखी जानी चाहिए। साफ है कि प्रशासनिक अमला संघियों से भरा हुआ है और अब वे संवैधानिक पदों पर बैठकर नफरत को हवा दे रहे हैं।" बता दें कि साल 2017 में दिल्ली से सटे नोएडा के अकाउंट के 2 से 3 हजार से ज्यादा फॉलोअर्स हैं।

चुनाव में एमवीए के बीच सुलझा सीट शेयरिंग का मसला

उद्धव ठाकरे और शरद पवार कर रहे इतनी सीटों की मांग

मुंबई, 14 सितंबर (एजेंसियां)। महाराष्ट्र में इस साल होने वाले चुनाव में अभी कुछ महीने ही बाकि हैं, जिसको लेकर सियासी सरगर्मियां तेज हो गई हैं। इससे पहले विधानसभा चुनाव 2019 में हुआ था। इस बार सबकी निगाहें इस बात पर टिकी हैं कि प्रदेश की जनता किसके हाथ में सत्ता सौंपेगी। महाविकास अघाड़ी और महायुति की ओर खास रणनीति के तहत चुनावी तैयारी शुरू कर दी गई है। कहा जा रहा है कि महाविकास अघाड़ी में सीट बंटवारे की चर्चा अंतिम चरण में है। यानी मुंबई की 36 विधानसभा सीटों को लेकर चल रहा झगड़ा जल्द ही सुलझने वाला है। मुंबई की 36 सीटों में से शिवसेना ठाकरे ग्रुप 20 सीटों, कांग्रेस 18 सीटों और एनसीपी शरद चंद्र पवार ग्रुप 7 सीटों की मांग कर रहा है।

इन 18 सीटों पर कांग्रेस दे रही जोर

कांग्रेस मुंबई की 18 सीटों पर ज्यादा जोर दे रही है। जिसमें धारावी, चांदीवली, मुंबादेवी, मलाड पश्चिम, सायन कोलीवाड़ा, कोलाबा, कांदिवली पूर्व, अंधेरी पश्चिम, वर्सोवा, बांद्रा पश्चिम, घाटकोपर पश्चिम, कुर्ला, भायखला, जोगेश्वरी पूर्व, मालाबार हिल, माहिम, बोरीवली, चारकोप शामिल है। बता दें कि 2019 के महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में बीजेपी 105 सीटों पर जीत दर्ज कर सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी थी। उस समय बीजेपी और शिवसेना ने गठबंधन में चुनाव लड़ा था।

उस समय संयुक्त शिवसेना 56 सीटों के साथ दूसरे नंबर पर रही थी। वहीं राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) ने कांग्रेस के साथ मिलकर बीजेपी-शिवसेना गठबंधन के खिलाफ चुनाव लड़ा था। एनसीपी ने 54 और कांग्रेस ने 44 सीटों पर जीत दर्ज की थी। यानि 2019 के चुनाव में कांग्रेस चौथे स्थान पर रही थी। वहीं मुंबई की 36 सीटों में से शिवसेना-बीजेपी गठबंधन ने 19 सीटें जीती थीं। इसके अलावा, 28 सीटों पर लड़ने वाली कांग्रेस सिर्फ 4 सीटें ही जीत पाई थी। वहीं एक सीट एनसीपी और एक सीट समाजवादी पार्टी ने जीती थी। इस बार मुंबई की 36 सीटों पर कड़ा मुकाबला देखने को मिल सकता है

घाटकोपर इलाके की एक बिल्डिंग में लगी आग, 13 घायल, 90 लोगों को सुरक्षित निकाला गया

मुंबई, 14 सितंबर (एजेंसियां)। मुंबई के घाटकोपर इलाके के एक इमारत में आग लगने की खबर सामने आई है। सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची फायर ब्रिगेड की गाड़ियों ने आग पर काबू पा लिया है। फायर ब्रिगेड की टीम ने बताया कि 90 से ज्यादा लोगों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया है। जबकि इस घटना में 13 लोग घायल हो गए हैं। वहीं घायलों को सांस लेने में दिक्कत होने के बाद नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बता दें आग की यह घटना रमाबाई अंबेडकर मगसवर्गीय हाउसिंग सोसाइटी में हुई है। घायलों की पहचान हर्ष अनिल भिसे, स्वीटी संदीप कदम, जानवी मिलिंद रायगांवकर, प्रियंका काले, जसीम सलीम सैय्यद, ज्योति मिलिंद रायगांवकर, फिरोजा इकबाल शेख, लक्ष्मी लक्ष्मण कदम, लक्ष्मण रामभाऊ कदम, मानसी श्रीवास्तव, अक्षरा सचिन दाते, आबिद शाह और अमीर इकबाल खान के रूप में हुई है।

बीजेपी विधायक मुनिरत्ना की बढ़ीं मुश्किलें

दो एफआईआर दर्ज; कांग्रेस के पूर्व सांसद ने बोला हमला

बंगलूरू, 14 सितंबर (एजेंसियां)। भाजपा विधायक और पूर्व मंत्री मुनिरत्ना की मुश्किलें बढ़ती नजर आ रही हैं। उनके खिलाफ व्यालिकावल पुलिस स्टेशन में दो एफआईआर दर्ज की गई हैं। ये मामले ठेकेदार चेलवाराजू द्वारा दर्ज कराई गई शिकायत से जुड़े हुए हैं।

क्या है मामला?

दरअसल, चेलवाराजू ने राजराजेश्वरी विधायक पर उत्पीड़न और धमकी देने का आरोप लगाया है। पहला मामला जान से मारने की धमकी का है, जिसमें मुनिरत्न, वीजी कुमार, अभिषेक, वसंत कुमार सहित चार लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। एफआईआर में धारा 37, 506, 505, 385, 420 और 323 के तहत आरोप शामिल हैं।

कांग्रेस के पूर्व सांसद ने लगाए आरोप

इस मामले को लेकर कांग्रेस के पूर्व सांसद डीके सुरेश ने भाजपा पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा, 'राजराजेश्वरी विधायक ने बहुत ही घटिया भाषा का इस्तेमाल किया है। उन्होंने दलित समुदाय का अपमान किया है। भाजपा के राष्ट्रीय नेताओं को इसका जवाब देना चाहिए। उन्होंने इससे पहले भी वोक्कालिगा समुदाय को नीचा दिखाया था।' उन्होंने आगे कहा, 'भाजपा ने अभी तक इस घटना पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है। उन्हें अब तक भाजपा ने बर्खास्त कर दिया होगा। एक ऑडियो में, उन्हें पैसे के बारे में पूछते हुए सुना जा सकता है और उन्होंने ठेकेदार को धमकी भी दी है। मैं भाजपा और एनडीए से मुनिरत्ना को तत्काल बर्खास्त करने की मांग करता हूं। उन्होंने दलित समुदाय और एक मां का अपमान किया है। उनके खिलाफ स्वतः संज्ञान मामला दर्ज किया जाना चाहिए और तुरंत कार्रवाई की जानी चाहिए। भाजपा को भी माफीनामा जारी करना चाहिए।'

पत्नी की सोशल मीडिया की लत से परेशान पति ने उठाया खौफनाक कदम, पुलिस थाने पहुंच कर खुद कबूला जुर्म

नई दिल्ली, 14 सितंबर (एजेंसियां)। दिल्ली के प्रशांत विहार थाना इलाके से एक शख्स द्वारा अपनी पत्नी का उसकी ही चुन्नी से गला घोंट कर हत्या करने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। हत्या के बाद आरोपी पति खुद ही थाने पहुंचा और फिर पुलिस को अपनी पत्नी कंचन की हत्या की बात बताते हुए सरेंडर कर दिया। उसके स्वीकारनामे के आधार पर पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। आरोपी की पहचान, राम कुमार (33) के रूप में हुई है। वह राजापुर में किराए के मकान के अपनी पत्नी के साथ रहता था और मजदूरी का काम करता है। 13 सितम्बर को सुबह तकरीबन 7 बजे, राम कुमार नाम का शख्स प्रशांत विहार थाना पहुंचा और उसने बताया कि उसने अपनी पत्नी की हत्या कर दी है। उसने बताया कि 7 साल पहले उसकी शादी उसकी पत्नी कंचन के साथ हुई थी।

रील बनाने के चक्कर में ऑफिस का काम भूलीं एचएएस ओशिन शर्मा, अब बिना पोस्टिंग के मिला तबादला

धर्मपुर, 14 सितंबर (एजेंसियां)। हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले के धर्मपुर के संधोल में तैनात तहसीलदार और एचएएस अधिकारी ओशिन शर्मा पर सोशल मीडिया पर रिल्स बनाना महंगा पड़ गया है। जिसके बाद सोशल मीडिया स्टार कही जाने वाली ओशिन शर्मा एक बार फिर सुर्खियों में आ गई हैं।

ओशिन शर्मा का तबादला कर दिया गया है। उनका ट्रांसफर बिना नई पोस्टिंग के हुआ है। ओशिन शर्मा को शिमला में डिपार्टमेंट ऑफ पर्सनल में रिपोर्ट करने के लिए कहा गया है। इससे पहले उन्हें एसडीएम धर्मपुर ने नोटिस जारी करते हुए पूछा था कि प्रशासनिक और जनहित से जुड़े कार्यों में देरी क्यों की जा रही है? दरअसल, ओशिन शर्मा जो कि हिमाचल प्रशासनिक सेवा (एचएएस) की अधिकारी हैं, वो जो रील्स और मोटिवेशनल वीडियो बनाने में इतनी मशगूल हो गईं कि अपना असल काम भूल गईं। जिसके बाद पता पता चला कि उनकी तहसील में कई काम पेंडिंग पड़े हैं, जिसके कारण एसडीएम धर्मपुर जोगिंदर पटियाल ने नोटिस जारी किया। एक हफ्ते पहले ही उन्हें नोटिस मिला था। जिसके बाद चर्चाएं तेज हो गई कि क्या प्रशासनिक और जनहित के कार्यों में देरी को लेकर यह गाज गिरी है। क्योंकि सोशल मीडिया पर उनको जमकर ट्रोल किया जा रहा है।मालूम हो कि ओशिन कांगड़ा जिले की रहने वाली हैं। मंडी के संधोल से पहले महिला अधिकारी कुल्लू के नग्गर में तैनात थी। ओशिन शर्मा सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव और पॉपुलर हैं। उनके लाखों में फॉलोवर्स हैं। महिला अधिकारी रील्स और मोटिवेशनल वीडियो बनाती हैं, जिससे इन्हें लाखों में व्यूज आते हैं।

विभागीय पदोन्नति के लिए संबंधित विभाग का अनुभव आवश्यक, हाईकोर्ट का अहम आदेश

जबलपुर, 14 सितंबर (एजेंसियां)। हाईकोर्ट ने अपने अहम आदेश में कहा है कि विभागीय पदोन्नति के लिए संबंधित विभाग का अनुभव आवश्यक है। सीधी भर्ती में अन्य संस्थान का अनुभव मान्य होता है। हाईकोर्ट जस्टिस संजय द्विवेदी की एकलपीठ ने उक्त आदेश के साथ याचिका को खारिज कर दिया। याचिकाकर्ता सुशीला दद्हरे की तरफ से दायर की गयी याचिका में कहा गया था कि शासकीय मेडिकल कॉलेज शिवपुरी में नर्सिंग अधिकारी के रूप में पदस्थ है। विभाग के द्वारा फरवरी 2022 में सीनियर नर्सिंग अधिकारी के लिए विभागीय पदोन्नति के लिए आवेदन आमंत्रित किये थे। आवेदन के लिए निर्धारित योग्यता पांच का अनुभव तथा जीवित रजिस्ट्रेशन था। उसने भी आवेदन दायर किया था पर यह कहते हुए विचार नहीं किया गया कि मेडिकल कॉलेज में नर्सिंग का उसे पांच साल का अनुभव नहीं है। याचिकाकर्ता की तरफ से तर्क दिया गया कि निर्धारित योग्यता में पांच का अनुभव उल्लेखित किया था। पूर्व में वह जिस संस्थान में कार्यरत थी उसका अनुभव प्रमाण-पत्र प्रस्तुत किया गया था। याचिका की सुनवाई के दौरान सरकार की तरफ से तर्क दिया गया कि विभागीय पदोन्नति के लिए प्रदेश के 13 मेडिकल कॉलेज में कार्यरत कर्मचारियों के लिए विज्ञापन जारी किया गया था। विभागीय पदोन्नति के लिए संबंधित विभाग का अनुभव आवश्यक है। सीधी भर्ती में अन्य संस्थान का अनुभव को मान्य किया जाता है। पदोन्नति के लिए जारी विज्ञापन में कोई त्रुटि नही है। एकलपीठ ने अपने आदेश में कहा है कि है विज्ञापन विभागीय कर्मचारियों के लिए जारी किया गया था। इसलिए संबंधित विभाग का अनुभव आवश्यक है। एकलपीठ ने उक्त आदेश के साथ याचिका को खारिज कर दिया।

कुएं में एक साथ मिला चार शव, मृतकों में तीन महिलाएं व एक बच्ची शामिल; इलाके में फैली सनसनी

सागर, 14 सितंबर (एजेंसियां)। सागर जिले के देवरी थाना अंतर्गत ग्राम जेतपुर कोपरा गांव में शनिवार सुबह एक कुएं में तीन महिलाओं और एक बच्ची का शव मिलने से सनसनी फैल गई। इनमें दो महिलाएं आधे भरे कुएं में फंदे पर लटकी मिलीं, जबकि एक वृद्ध महिला और बच्ची का शव पानी में उतराता मिला। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और चारों शवों को कुएं से निकलवाने के लिए एसडीईआरएफ की टीम को बुलाया गया है। मामला देवरी थाना क्षेत्र के कोपरा गांव का है। देवरी एसडीओपी शशिकांत सरयाम ने बताया कि महिलाओं की पहचान भारती लोधी, आरती लोधी, भागवती लोधी और रोमिका लोधी के रूप में हुई है। इनमें भारती और आरती देवरानी जेठानी हैं।

रूसी सेना के साथ काम कर रहा तेलंगाना का युवक भारत लौटा

नई दिल्ली, 14 सितंबर (एजेंसियां)। रूस-यूक्रेन युद्ध में रूसी सेना के साथ 'सपोर्ट स्टाफ' के तौर पर काम कर रहा तेलंगाना का एक युवक शनिवार को भारत लौट आया। उसे एक रोजगार एजेंट ने नौकरी दिलाने का झांसा देकर रूस भेज दिया था। नारायणपेट जिले का निवासी सूफियान (22) पिछले साल नवंबर में रूस गया था, जहां वह यूक्रेन के खिलाफ युद्ध में रूसी सेना की मदद करता था। अब उसके स्वदेश लौटने से उसके परिजनों का कष्टदायक इंतजार खत्म हो गया है। सूफियान ने कहा, "सुरक्षा से संबंधित नौकरी देने का वादा किया गया था, लेकिन यह नहीं बताया गया कि मुझे युद्ध में सैनिकों की मदद करनी है।" उसे यह बताया गया था कि तीन महीने तक प्रशिक्षण लेना होगा जिसके बाद उसका वेतन बढ़ा दिया जाएगा। सूफियान के भाई सलमान ने इस साल जुलाई में कहा था कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की रूस यात्रा के बाद अब उन्हें उम्मीद है कि उनका भाई जल्द ही वापस लौट आएगा। प्रधानमंत्री मोदी ने रूस की यात्रा के दौरान राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के समक्ष रूसी सेना के साथ 'सपोर्ट स्टाफ' के तौर पर काम कर रहे भारतीय नागरिकों को जल्द से जल्द वापस भेजने के मुद्दे को 'बहुत मजबूती' के साथ उठाया था, जिसके बाद उन्होंने इस मांग पर सहमति जताई थी।

THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

epaper.vaartha.com

कांग्रेस सांसद ने दिया विवादित बयान

कैथल, 14 सितंबर (एजेंसियां)। हरियाणा विधानसभा चुनाव प्रचार के दौरान कांग्रेस सांसद जय प्रकाश ने महिलाओं को लेकर विवादित बयान दिया है। सोशल मीडिया पर बयान वायरल होने के बाद राज्य महिला आयोग ने जय प्रकाश के खिलाफ नोटिस जारी करने की बात कही है। हरियाण महिला आयोग की अध्यक्ष रेणु भाटिया ने कहा कि, यह बहुत शर्मनाक विषय है कि कांग्रेस के सांसद लगातार तीसरी, चौथी बार इस तरह से महिलाओं के खिलाफ अपमानजनक शब्दों का इस्तेमाल कर रहे हैं। अभी हाल ही में आपको याद होगा कि लोकसभा चुनाव में रणदीप सुरजेवाला अभद्र भाषा का प्रयोग हेमा मालिनी के लिए किया था।

वर्ष-29 अंक : 174 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टणम, तिरुपति से प्रकाशित) भाद्रपद शु.12 2081 रविवार, 15 सितंबर-2024

प्रधान संपादक - डॉ. गिरीश कुमार संघी हैदराबाद नगर * पृष्ठ : 16+32 मूल्य : 8 रुपये

'जम्मू-कश्मीर को 3 खानदानों ने बर्बाद किया'

श्रीनगर, 14 सितंबर (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार (14 सितंबर) को जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव प्रचार के लिए डोडा पहुंचे। यहां स्पोर्ट्स स्टेडियम में मोदी ने 45 मिनट की स्पीच दी। इस दौरान पीएम मोदी ने परिवारवाद, आतंकवाद, पत्थरबाजी, कश्मीरी पंडित और आर्टिकल 370 जैसे मुद्दों पर जनता को संबोधित किया।

पीएम ने कहा, जम्मू-कश्मीर को कांग्रेस, नेशनल कॉन्फ्रेंस और पीडीपी खानदान ने बर्बाद किया। इन तीन खानदानों ने मिलकर आपके साथ जो किया, वो किसी पाप से कम नहीं है। तीनों खानदान जम्मू-कश्मीर को दशकों तक बर्बादी देने के जिम्मेदार हैं। हम और आप मिलकर एक सुरक्षित कश्मीर का निर्माण करेंगे, ये मोदी की गारंटी है। वहीं मोदी ने हाल ही में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के बयान पर पलटवार करते हुए कहा, ये कहते हैं अगर 20 सीटें और आती तो मोदी समेत सभी नेता जेल में होते। आपको नेताओं को जेल भेजने के लिए सरकार बनानी है, या लोगों के भले के लिए। इस रैली के जरिए मोदी ने चिनाब घाटी के तीन जिलों, डोडा, किश्तवाड़ और रामबन की 8 विधानसभा सीटों को साधा। 18 सितंबर को चुनाव के पहले फेज में कुल 24 सीटों पर वोटिंग होगी।

एक तरफ तीन खानदान, उनके सामने कश्मीर के नौजवान :

पीएम मोदी ने परिवारवाद को लेकर कहा, जम्मू-कश्मीर का विधानसभा चुनाव 3 खानदानों और जम्मू-कश्मीर के नौजवानों के बीच में है।

एक तरफ तीन खानदान हैं, दूसरी तरफ सपने लेकर निकल पड़े नौजवान हैं। इन तीन खानदानों ने मिलकर आपके साथ जो किया, वो किसी पाप से कम नहीं है। तीनों खानदान जम्मू-कश्मीर को दशकों तक बर्बादी देने के जिम्मेदार हैं। इन तीन खानदानों ने यहां करप्शन को बढ़ावा दिया। जमीन कब्जा करने वाले गिरोहों को बढ़ावा दिया। छोटी-छोटी सुविधाओं के लिए आपको तरसाया गया। कश्मीरी पंडितों पर पीएम ने कहा, तीन दशक से ज्यादा हो गए, इसी दिन हमारे कश्मीरी पंडित टीका लाल टपलू को आतंकवादियों ने शहीद किया था। उनकी हत्या के बाद कश्मीरी पंडितों के साथ अत्याचार का अंतहीन सिलिसिला चला है।

'कांग्रेस ने किसानों और जवानों को धोखा दिया'

कुरुक्षेत्र (हरियाणा), 14 सितंबर (एजेंसियां)। हरियाणा विधानसभा चुनाव में पीएम नरेंद्र मोदी शनिवार को कुरुक्षेत्र से अपने चुनाव प्रचार की शुरूआत कर दी। प्रधानमंत्री दोपहर बाद गीता की धरा से जन आशीर्वाद रैली को संबोधित करने पहुंचे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हेलीकॉप्टर से कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय पहुंचे जहां सीएम नायब सैनी उन्हें रिसीव करने गए। पीएम नरेंद्र मोदी मंच पर पहुंचे तो सीएम नायब सैनी ने पगड़ी पहनाकर उनका स्वागत किया।

पीएम मोदी ने जय श्रीकृष्ण और राम राम के संबोधन के साथ रैली में संबोधन शुरू किया। उन्होंने हरियाणवी अंदाज में कहा कि मन्ने इस पवित्र धरती पै आणकै घणा आच्छा लाग रया सै। पीएम मोदी ने मंच से कहा कि कांग्रेस देश की एकता पर लगातार हमला कर रही है। भाजपा को बदनाम करने के लिए उसको भारत को बदनाम करने में शर्म नहीं आ रही है। इसलिए अब कांग्रेस और उसके साथियों से सावधान रहना है। आज की कांग्रेस अर्बन नक्सल का नया रूप बन गई है। कांग्रेस को अब झूठ बोलने में कोई शर्म नहीं आती है।

कोलकाता रेप-मर्डर : 'मैं आपकी दीदी बनकर आई हूं, सीएम नहीं'

डॉक्टरों के धरनास्थल पर पहुंचीं मुख्यमंत्री ममता बनर्जी

कोलकाता, 14 सितंबर (एजेंसियां)। पश्चिम बंगाल में कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज-अस्पताल में एक प्रशिक्षु महिला डॉक्टर से दुष्कर्म और हत्या के मामले में प्रदर्शन कर रहे जूनियर डॉक्टरों और राज्य सरकार के बीच गतिरोध जारी है।

इस बीच मुख्यमंत्री ममता बनर्जी प्रदर्शन कर रहे डॉक्टरों से मिलने स्वास्थ्य भवन पहुंचीं। इस दौरान डॉक्टरों ने हमें न्याय चाहिए के नारे लगाए। ममता बनर्जी ने कहा कि वह यहां दीदी के तौर पर डॉक्टरों से मिलने आई हैं। बता दें कि गुरुवार को डॉक्टरों का एक दल बैठक के लिए नबन्ना पहुंचा था, लेकिन यह बैठक नहीं हो पाई थी। ममता बनर्जी ने बताया कि उन्होंने जूनियर डॉक्टरों से मिलने के लिए दो घंटे तक इंतजार किया, लेकिन वे बैठक स्थल पर नहीं आए।

इसके बाद कहा कि वह पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने के लिए तैयार हैं।

ममता बनर्जी ने प्रदर्शन कर रहे डॉक्टरों को आश्वासन दिया कि वह उनकी मांगों पर गौर करेंगी और कोई दोषी पाया गया तो उसके खिलाफ कार्रवाई होगी। उन्होंने आगे कहा, मैं यहां आपसे मुख्यमंत्री नहीं बल्कि दीदी के तौर पर मिलने आई हूं। मैं खुद छात्र आंदोलन करके आगे आई हूं, मैंने अपने जीवन में भी बहुत संघर्ष किया है, मैं आपके संघर्ष को समझती हूं। मुझे मेरे पद की चिंता नहीं है। कल रात भर बारिश हुई आप यहां विरोध पर बैठे थे मैं रात भर परेशान रही।

सीबीआई ने एफबीआई से मिली जानकारी के आधार पर गिरफ्तार किया साइबर अपराधी, 57 सोने की छड़ें-16 लाख रुपये जब्त

नई दिल्ली, 14 सितंबर (एजेंसियां)। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने खुद को तकनीकी सहायक बताकर एक अमेरिकी नागरिक से 4.5 लाख अमेरिकी डॉलर की ठगी करने के आरोपी को मंबई से गिरफ्तार किया है। आधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी।

अधिकारियों ने बताया कि अमेरिकी जांच एजेंसी 'फेडरल ब्यूरो ऑफ इंवेस्टिगेशन' (एफबीआई) के साथ समन्वय में साइबर अपराधियों के खिलाफ 'ऑपरेशन चक्र-3' चलाया जा रहा है और इसी के तहत सीबीआई ने एक जटिल वर्चुअल संपत्ति और सोना-चांदी आधारित साइबर अपराध नेटवर्क का भंडाफोड़ किया, जो 2022 से दूसरे देशों में लोगों को निशाना बना रहा था। अधिकारियों के मुताबिक, गत दो दिनों में सात जगहों पर ली गई तलाशी के दौरान सीबीआई ने मुंबई से ठगी कर रहे कथित साइबर अपराधी विष्णु राठी के परिसरों से 100-100 ग्राम के 57 सोने के बिस्कुट, 16 लाख रुपये नकद, मोबाइल फोन, क्रिप्टो करेंसी के प्रबंधन में इस्तेमाल होने वाला लैपटॉप, लॉकर के विवरण और अन्य आपत्तिजनक सामग्री जब्त की। अधिकारियों ने बताया कि एजेंसी को ऐसी सामग्री मिली है, जिससे पता चलता है कि यह अंतर्राष्ट्रीय साइबर अपराध नेटवर्क अपराध से की गई कमाई को वर्चुअल परिसंपत्तियों और सोने-चांदी में तब्दील कर रहा था।

संवेदनशील सूचना के चलते उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति में हो रही देरी

केंद्र ने दी जानकारी

नई दिल्ली, 14 सितंबर (एजेंसियां)। केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में बताया है कि सरकार के पास मौजूद संवेदनशील जानकारी के चलते उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीशों की नियुक्ति में देरी हो रही है। अटॉर्नी जनरल आर वेंकटरमाणी ने मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की पीठ को बताया कि उन्हें केंद्र सरकार से कुछ इनपुट मिले हैं, जो संवेदनशील प्रकृति के हैं। अटॉर्नी जनरल ने अदालत में कहा कि इन मुद्दों को सार्वजनिक करना न तो संस्थान के हित में होगा और न ही इसमें शामिल न्यायाधीशों के हित में। अटॉर्नी जनरल ने इनपुट और सुझाव वाला एक सीलबंद लिफाफा पीठ के अवलोकन के लिए सौंपा। सुप्रीम कोर्ट अब इस मामले पर 20 सितंबर को सुनवाई करेगा। सुप्रीम कोर्ट अधिवक्ता हर्ष विभोर सिंघल द्वारा दायर याचिका पर सुनवाई कर रहा है। इस याचिका में केंद्र सरकार को सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम की सिफारिशों पर एक तय समय सीमा में फैसला लेने का निर्देश देने की मांग की गई है। याचिका में कहा गया है कि न्यायाधीशों की नियुक्ति के लिए कॉलेजियम की सिफारिशों को अधिसूचित करने के लिए समय सीमा तय नहीं होने से सरकार मनमाने ढंग से नियुक्तियों को अधिसूचित करने में देरी करती है। इससे न्यायिक स्वतंत्रता पर कुठाराघात होता है। साथ ही संवैधानिक और लोकतांत्रिक व्यवस्था खतरे में पड़ती है और न्यायालय की गरिमा और बुद्धिमत्ता का अपमान होता है। याचिका में ये भी कहा गया है कि यदि किसी नाम पर आपत्ति नहीं की जाती है या निश्चित समय अवधि के अंत तक नियुक्तियों को अधिसूचित नहीं किया जाता है, तो ऐसे न्यायाधीशों की नियुक्तियों को अधिसूचित माना जाना चाहिए।

कोलकाता में एसएन बनर्जी रोड के पास धमाका, जांच के दौरान फटा बैग

नई दिल्ली, 14 सितंबर (एजेंसियां)। पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता में बम विस्फोट हुआ है। एक तरफ जहां आरजी कर मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल की घटना को लेकर पूरे बंगाल में हंगामा मचा हुआ था, वहीं कोलकाता में बम विस्फोट हुआ। कोलकाता पुलिस ने बताया कि घटना में एक व्यक्ति घायल भी हुआ है। शनिवार को कोलकाता पुलिस ने जानकारी दी कि रात करीब सवा एक बजे ब्लोचमैन स्ट्रीट और एसएन बनर्जी रोड पर विस्फोट हुआ। इस घटना में कूड़ा बीनने वाला एक शख्स घायल हो गया। घटना की जानकारी मिलने के बाद तलतला के ओसी वहां पर गए और पता चला कि घायल को एनआरएस में ले जाया गया है और उसकी दाहिनी कलाई पर चोट लगी है। बम डिटेक्शन और डिस्पोजल स्क्वॉड टीम को बुलाया गया। बीडीडीएस के कर्मचारी पहुंचे, बैग और आस-पास की जांच की। फिलहाल इलाके में यातायात सामान्य बना हुआ है। इस धमाके की फोरेंसिक टीम भी जांच करेगी। चश्मदीद होने का दावा करने वाले एक व्यक्ति ने कहा कि जब विस्फोट हुआ, तब हम पास में ही खड़े थे।

पीएम मोदी के घर आया नया मेहमान

पीएम आवास में गाय ने बछिया को जन्म दिया। पीएम मोदी ने बछिया को दुलार करते हुए अपना वीडियो भी शेयर किया है।

हिजबुल्लाह ने इजरायल पर 1300 से ज्यादा ड्रोन और रॉकेटों से किया हमला, मिलिट्री बेस तबाह

नई दिल्ली, 14 सितंबर (एजेंसियां)। ईरान समर्थित लेबनान के आतंकी समूह हिजबुल्लाह ने शनिवार को इजरायली टारगेट्स पर 1307 ड्रोन्स और सैकड़ों रॉकेटों से हमला किया। दावा किया गया है कि सभी ड्रोन्स इजरायली टारगेट पर सटीक तरीके से गिरे। लेकिन इजरायल का कहना है कि उसके आयरन डोम ने अधिकतर हमलों को हवा में ही नष्ट कर दिया।

इजरायल ने कहा कि जो भी ड्रोन्स और रॉकेट ने इजरायली जमीन पर हमला किया, वो या तो खुले इलाके में गिरे या फिर उन्हें एयर डिफेंस सिस्टम ने आसमान में खत्म कर दिया। हिजबुल्लाह ने इजरायल को धमकी दी है कि अगर उसने गाजा पट्टी में फिलिस्तीनी लोगों का जनसंहार खत्म नहीं किया तो और ज्यादा घातक हमले होंगे। जब से इजरायल ने फिलिस्तीन के खिलाफ जंग छेड़ी है, तब से लेकर अब तक गाजा में 41 हजार फिलिस्तीनी लोग मारे जा चुके हैं। इसमें ज्यादातर महिलाएं और बच्चे हैं। इसके अलावा हिजबुल्लाह के रॉकेट हमले में अल-मायादीन के जलील में मौजूद इजरायली बेस बर्बाद हो गया।

'सिद्धारमैया ने दलित की जमीन पर अवैध तरीके से किया निर्माण'

एच डी कुमारस्वामी का आरोप

बेंगलूरू, 14 सितंबर (एजेंसियां)। केंद्रीय मंत्री एच.डी. कुमारस्वामी ने शनिवार को कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया पर आरोप लगाया कि उन्होंने उपमुख्यमंत्री रहते हुए एक एक दलित के लिए आवंटित जमीन पर अवैध तरीके से एक घर बनवाया।

जद (एस) नेता ने कहा कि मैसूर शहरी विकास प्राधिकरण (मुडा) पर 14 जगहों पर जमीन के गलत तरीके से आवंटन के आरोप हैं, जिनकी जांच के लिए राज्यपाल ने मंजूरी दी है। उन्होंने आरोप लगाया कि सिद्धारमैया ने एक ऐसे दलित के लिए आवंटित जमीन पर अवैध तरीके से घर बनवाया जो शारीरिक रूप से सक्षम नहीं था। कुमारस्वामी ने कहा, सिद्धारमैया ने एक दलित को 24 हजार रुपये का भुगतान करने के बाद हासिल की गई जमीन पर अवैध तरीके निर्माण कार्य किया। उन्होंने जाली दस्तावेजों के जरिए उस जमीन पर कब्जा

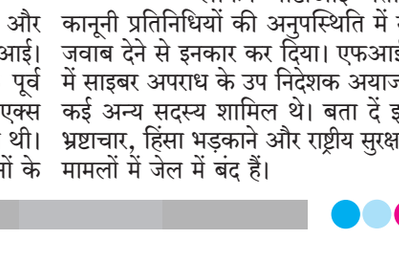

किया और वहां एक घर बनवाया। उस व्यक्ति ने देखा कि उसकी जमीन पर किसी और का घर बना हुआ है। उसके पास सभी दस्तावेज हैं, जो आरोपों को सही साबित कर सकते हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि सिद्धारमैया ने कई अवैध काम किए हैं और इस मुद्दे को उजागर करने से नया विवाद खड़ा हो सकता है। कुमारस्वामी ने यह भी कहा कि सिद्धारमैया का जीवन एक खुली किताब नहीं है, जैसा कि वह दावा करते हैं। वे अब बताएं कि उस जमीन की बाद में बिक्री किसे की गई और अभी उसका मालिक कौन है। सिद्धारमैया 1996 से 1999 और 2004 से 2005 तक कर्नाटक के उपमुख्यंत्री रहे हैं। हालांकि, कुमारस्वामी ने यह स्पष्ट नहीं किया कि यह घटना किस अवधि में हुई थी। उधर, मुख्यमंत्री कार्यालय (सीएमओ) ने जानकारी दी कि ठेकेदार चलुवराजू ने मुख्यमंत्री सिद्धारमया से मुलाकात कर भाजपा विधायक मुनिरत्ना के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की मांग की है। चलुवराजू ने आरोप लगाया कि मुनिरत्ना ने उन्हें जान से मारने की धमकी दी, जातिसूचक शब्दों का इस्तेमाल किया और पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज करने के बावजूद कोई कार्रवाई नहीं की।

200 करोड़ की एफडी फ्रॉड करने वाला मास्टरमाइंड गिरफ्तार

नोएडा, 14 सितंबर (एजेंसियां)। नोएडा की सेक्टर-58 थाना पुलिस और क्राइम ब्रांच की संयुक्त कार्रवाई में नोएडा अथॉरिटी के 200 करोड़ के एफडी धोखाधड़ी मामले में मास्टरमाइंड मन्नू भोला और दो अन्य वांछित आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। मन्नू भोला पर 25 हजार रुपये का इनाम घोषित था। इस कार्रवाई में भारी मात्रा में फर्जी दस्तावेज, पैन कार्ड, आधार कार्ड और फर्जी बैंक संबंधी दस्तावेज बरामद किए गए हैं।

अब 'बापू' की शरण में जाएंगे सरकारी कर्मचारी

राजघाट पर मोमबत्ती जलाकर करेंगे पुरानी पेंशन की मांग

नई दिल्ली, 14 सितंबर (एजेंसियां)। केंद्र द्वारा एनपीएस में सुधार कर लाई गई 'यूनिफाइड पेंशन स्कीम' (यूपीएस) को लेकर सरकार कर्मचारियों में आक्रोश कम नहीं हो पा रहा है। विभिन्न सरकारी कर्मचारी संगठन, पुरानी पेंशन यानी 'ओपीएस' बहाली की मांग को लेकर विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं।

पुरानी पेंशन की मांग के लिए लंबे समय से आंदोलन करने वाले कर्मचारी संगठन 'एनएमओपीएस' ने 26 सितंबर को देश के सभी जिला मुख्यालयों पर विरोध प्रदर्शन करने की घोषणा की है। इससे पहले 15 सितंबर को सरकारी कर्मचारी ओपीएस की मांग को लेकर बापू के समाधि स्थल दिल्ली के राजघाट पर पहुंचेंगे। 'एनएमओपीएस' के राष्ट्रीय अध्यक्ष विजय कुमार बंधु के अनुसार, दिल्ली में राजघाट पर हजारों कर्मचारी पहुंचेंगे। ये कर्मचारियों के हितों की लड़ाई है। अब वे अपने हक की लड़ाई के लिए स्वयं आगे आएंगे। कर्मचारी, किसी का इंतजार नहीं करेंगे। वजह, केंद्र सरकार ने कर्मचारियों के भविष्य के साथ खिलवाड़ करते हुए यूपीएस लागू करने की बात कही है। एनएमओपीएस एक ऐसा संगठन है, जो केवल 'ओपीएस' के लिए लड़ रहा है। यूपीएस से सरकारी कर्मचारी बिल्कुल भी संतुष्ट नहीं हैं। यूपीएस का गजट भी नहीं आया है। केंद्र सरकार ने अभी तक यूपीएस की जो खूबियां गिनाई हैं, वे कर्मचारियों को रास नहीं आ रही। पुरानी पेंशन व्यवस्था में यदि कोई कर्मचारी, स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेता है तो उसकी पेंशन, सेवानिवृत्ति की तिथि से ही शुरू कर दी जाती थी, लेकिन अब यूपीएस में उसे 60 वर्ष के बाद पेंशन देने की बात कही गई है।

इमरान खान के खिलाफ सरकारी अधिकारी को विद्रोह के लिए उकसाने का मामला दर्ज

इस्लामाबाद, 14 सितंबर (एजेंसियां)। पाकिस्तान की संघीय जांच एजेंसी (एफआईए) ने पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान और पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के संस्थापक के खिलाफ एक सरकारी अधिकारी को विद्रोह के लिए उकसाने का मामला दर्ज किया है।

रिपोर्ट के अनुसार, खान की गतिविधियों और बयानों की जांच के बीच यह जानकारी सामने आई। स्थानीय मीडिया ने कहा कि पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री ने कथित तौर पर अपने सत्यापित एक्स (पूर्व में ट्विटर) अकाउंट से एक पोस्ट शेयर की थी। इसमें प्रमुख सरकारी अधिकारियों और संस्थानों के खिलाफ भड़काऊ टिप्पणी की गई थी। जांच एजेंसी ने इस पोस्ट को सार्वजनिक अशांति भड़काने और देशव्यापी विरोध आंदोलन करने की अपील माना। एफआईए की एक टीम को इमरान खान से पूछताछ के लिए रावलपिंडी की अदियाला जेल भी भेजा गया था। लेकिन पीटीआई नेता ने अपने कानूनी प्रतिनिधियों की अनुपस्थिति में सवालों का जवाब देने से इनकार कर दिया। एफआईए की टीम में साइबर अपराध के उप निदेशक अयाज खान और कई अन्य सदस्य शामिल थे। बता दें इमरान खान भ्रष्टाचार, हिंसा भड़काने और राष्ट्रीय सुरक्षा के विभिन्न मामलों में जेल में बंद हैं।

तीन मंजिला मकान गिरा मलबे में आठ लोगों के दबे होने की आशंका

मेरठ, 14 सितंबर (एजेंसियां)। मेरठ स्थित लोहिया नगर थाना क्षेत्र के जाकिर कॉलोनी गली नंबर सात में एक 50 साल पुराना तीन मंजिला मकान गिर गया है। बारिश के कारण एक जर्जर मकान ढह गया है। मकान गिरने के कारण पूरा परिवार अंदर मलबे में दबा हुआ है। मकान में आठ से ज्यादा लोगों के दबे होने की सूचना है। मौके पर स्थानीय पुलिस और बचाव टीमें पहुंची है। मौके पर एसएसपी विपिन ताडा भी पहुंचे हैं। जानकारी के मुताबिक मकान 50 साल की बुजुर्ग महिला नफो का है।

'हिंदी-क्षेत्रीय भाषाओं में कोई प्रतिस्पर्धा नहीं'

> अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में बोले अमित शाह

नई दिल्ली, 14 सितंबर (एजेंसियां)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह आज चौथे अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में शामिल हुए। उन्होंने इस सम्मेलन में हिंदी भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला। सम्मेलन को संबोधित करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया कि हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं के बीच प्रतिस्पर्धा नहीं है। अमित शाह ने हिंदी को सभी क्षेत्रीय भाषाओं का दोस्त बताया। उन्होंने कहा कि हिंदी और सभी क्षेत्रीय भाषा एक-दूसरे के पूरक हैं।

अमित शाह ने कहा, कई लोगों का कहना है कि हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं के बीच प्रतिस्पर्धा है। मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं के बीच प्रतिस्पर्धा नहीं है, क्योंकि हिंदी सभी क्षेत्रीय भाषाओं की दोस्त है। हिंदी और क्षेत्रीय भाषाएं एक दूसरे के पूरक हैं। हमने फैसला किया कि हम हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं के बीच संबंधों को मजबूत बनाएंगे। प्रत्येक लेख, भाषण या साहित्यिक कृति जो हिंदी में

है, उन सभी का अनुवाद क्षेत्रीय भाषाओं में किया जाएगा और इसके विपरीत क्षेत्रीय भाषाओं का अनुवाद हिंदी में होगा। मुझे लगता है कि यह समय की मांग है। अमित शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मंचों से दुनिया को हिंदी में संबोधित कर हिंदी के प्रति स्वीकार्यता बढ़ाई है। उन्होंने आगे कहा, जब अटल बिहारी वाजपेयी ने संयुक्त राष्ट्र को हिंदी में संबोधित किया था तो पूरी दुनिया आश्चर्यचकित हो गई थी। आज हम संयुक्त राष्ट्र की भाषा और 10 से अधिक देशों की दूसरी प्रमुख भाषा बन गए हैं। हिंदी अब अंतर्राष्ट्रीय भाषा बनने की राह में है।

बता दें कि इससे पहले अमित शाह ने आज हिंदी दिवस के मौके पर खास संदेश दिया। उन्होंने कहा कि हमारे सभी राज्यों की भाषाओं के लिए हिंदी बहुत महत्वपूर्ण है। पिछले 10 वर्षों में पीएम मोदी के नेतृत्व में हिंदी और स्थानीय भाषाओं को मजबूत करने के लिए काफी काम किया गया है।

'यूपी पीसीएस-जे परीक्षा में बड़ा घोटाला'

आयोग पर सवाल:इलाहाबाद हाईकोर्ट ने राज्य सरकार से फिर मांगा जवाब; अभ्यर्थी बोला- सीबीआई जांच हो

प्रयागराज, 14 सितंबर (एजेंसियां)। यूपीपीएससी की यूपी पीसीएस-जे 2022 मुख्य परीक्षा की उत्तर पुस्तिकाओं में गड़बड़ी के मामले में आयोग की ओर से की गई सिफारिश पर हाईकोर्ट ने सुनवाई की। कोर्ट ने एक बार फिर राज्य सरकार से जवाब तलब किया है। कोर्ट ने पूछा- आयोग ने पूर्व में चयनित जिन 2 अभ्यर्थियों को चयन से बाहर कर दिया। 2 नए अभ्यर्थियों को चयन में शामिल करने की सिफारिश की। इस पर सरकार ने क्या निर्णय लिया है? कोर्ट ने राज्य सरकार को इस पर जवाब दाखिल करने के लिए समय दिया है। अभ्यर्थी श्रवण पांडे ने मामले में सीबीआई जांच और एफआईआर दर्ज कराने की मांग की। इसपर कोर्ट ने अभ्यर्थी की ओर से प्रस्तुत संशोधन अर्जी पर जवाब देने को कहा है। इस अर्जी पर खास तौर पर सरकार से जवाब मांगा गया है। कोर्ट ने यह भी कहा है कि जब तक मामले की सुनवाई चल रही है। इस परीक्षा से संबंधित समस्त रिकॉर्ड सुरक्षित रखे जाएं। श्रवण पांडे की याचिका पर न्यायमूर्ति एसडी सिंह और न्यायमूर्ति डी रमेश की खंडपीठ सुनवाई कर रही है। उन्होंने मामले की अगली सुनवाई के लिए अगली डेट 30 सितंबर रखी है।

श्रवण पांडे के अधिवक्ता ने कहा- यह बड़ा घोटाला है

श्रवण पांडे का पक्ष रख रहे वरिष्ठ अधिवक्ता एसएफए नकवी ने कोर्ट के समक्ष आयोग की भूमिका पर कई सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि आयोग ने पहले 50 उत्तर पुस्तिकाओं में गड़बड़ी की बात स्वीकार की थी। मगर अब यह संख्या बढ़ती जा रही है। उनमें से दो अभ्यर्थी हाईकोर्ट में याचिका दाखिल कर चुके हैं, जबकि दो के चयन की स्वयं आयोग ने संस्तुति की है। कई अन्य अभ्यर्थी भी याचिका दाखिल करने की तैयारी में है। इससे जाहिर है कि यह संख्या आयोग द्वारा बताई जा रही संख्या से कहीं ज्यादा है। वरिष्ठ अधिवक्ता ने कहा कि यह बड़ा घोटाला है। आयोग ने पहले 7 लोगों का परिणाम कैंसिल करने के लिए कहा था। मगर बाद में छह की सूची जारी की और अंत में सिर्फ 2 अभ्यर्थियों के चयन की संस्तुति की। आयोग लगातार अपना स्टैंड बदल रहा है।

2 अन्य अभ्यर्थी भी पहुंचे कोर्ट

सुनवाई के दौरान 2 अन्य अभ्यर्थियों की ओर से भी अधिवक्ताओं ने कोर्ट में मेंशन कर कहा कि वह भी याचिका दाखिल कर रहे हैं। इस पर कोर्ट का कहना था कि उनकी याचिका दाखिल होने के बाद उस पर विचार किया जाएगा। जबकि श्रवण पांडे के अलावा दो अन्य अभ्यार्थियों की याचिका पर शुक्रवार को सुनवाई हुई। हाईकोर्ट ने इससे पूर्व सुनवाई पर आयोग द्वारा खुद ही परिणाम संशोधित कर 2 अभ्यर्थियों को चयन से बाहर करने और दो को चयन में शामिल करने की संस्तुति पर सवाल उठाए थे। कोर्ट ने जानना चाहा था कि आयोग को यह शक्ति कहां से प्राप्त है? यदि ऐसा है तो इस पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। शुक्रवार को आयोग की ओर से हाईकोर्ट में हलफनामा दाखिल किया गया। हालांकि राज्य सरकार ने और समय की मांग की। जिस पर कोर्ट ने मामले की सुनवाई 30 सितंबर को करने का निर्देश देते हुए राज्य सरकार को जवाब दाखिल करने के लिए कहा है।

सोनभद्र की सीडीओ बनीं जागृति अवस्थी, दूसरे प्रयास में बनी थीं आईएएस

सोनभद्र, 14 सितंबर (एजेंसियां)। डीएम, एसपी के बाद जिले के मुख्य विकास अधिकारी सौरभ गंगवार का भी तबादला हो गया है। उन्हें मेरठ का नगर आयुक्त बनाया गया है। उनकी जगह जागृति अवस्थी को सीडीओ की जिम्मेदारी दी गई है। वर्ष 2020 बैच की आईएएस जागृति वर्तमान में प्रयागराज में जॉइंट मजिस्ट्रेट के पद पर तैनात थीं। इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में स्नातक जागृति अपने बैच की टॉपर रही हैं। उन्हें ऑल इंडिया में दूसरी रैंक मिली थी। दूसरे प्रयास में ही उन्होंने सिविल सेवा की परीक्षा में सफलता हासिल की थी। इससे पहले वह सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम (पीएसयू) भेल में भी काम कर चुकी हैं। उन्होंने भोपाल से पढ़ाई की है। उनके पिता भी सरकारी सेवा में रहे हैं। प्रयागराज से पहले वह मेरठ में एसडीएम पद पर तैनात रहीं।

मायावती ने 29 साल पुराने मामले को फिर दी हवा, आखिर क्या है मकसद?

लखनऊ, 14 सितंबर (एजेंसियां)। बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने स्वलिखित बुकलेट में 29 साल पुराने मामले का जिक्र कर यूपी की मौजूदा सियासी स्थिति को अपनी ओर मोड़ने की कोशिश की है। साल 2019 में जब बसपा और समाजवादी पार्टी के बीच अलायंस हुआ था तब कहा गया था कि मायावती पुरानी बातों को भुलाकर सियासत की नई राह पर आगे बढ़ गईं हैं। हालांकि सपा संग अलायंस टूटने और अखिलेश यादव पर तीखे सियासी हमले करने के बीच मायावती की नई रणनीति ने सपा को हैरान कर दिया है। दरअसल, बीते दिनों उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री ने फिर से बसपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष का जिम्मा संभाला। बसपा ने इसके बाद एक बुकलेट का विमोचन भी किया जिसे खुद पार्टी चीफ ने लिखा था। इस बुकलटे में गेस्ट हाउस कांड का जिक्र किया गया है। गेस्ट हाउस कांड आज से 29 साल पुराना मामला है।

गेस्ट हाउस काण्ड की याद

बसपा चीफ ने बुकलेट में लिखा है- भाजपा व कांग्रेस के हिन्दुत्ववाद के विरुद्ध उत्तर प्रदेश में सन 1993 में सपा-बसपा की गठबंधन सरकार बनने के बावजूद दलितों व महिलाओं पर हर स्तर का शोषण, उत्पीड़न व जुल्म-ज्यादती आदि जारी रहने के परिणामस्वरूप ही बी.एस.पी. को मुलायम सिंह यादव सरकार से समर्थन वापस लेकर सरकार की कमान अपने हाथ में लेनी पड़ी थी, जिसके खिलाफ तब इन्होंने मेरी हत्या कराने तक का अति-घिनौना प्रयास किया, जो दिनांक 2 जून सन1995 के लखनऊ स्टेट गेस्ट हाउस काण्डश् से जाना जाता है और लोगों के दिल-दिमाग पर वह आज तक छाया हुआ है। जानकारों का मानना है कि बसपा चीफ ने इस मामले को एक बार फिर उठाकर छिटकते मतदाताओं को एक डोर में बांधने की कोशिश की है। दरअसल, जून 2024 में संपन्न हुए लोकसभा चुनाव के संदर्भ में यह दावा किया जा रहा है कि बसपा का वोटबैंक सपा और कांग्रेस के इंडिया अलायंस की ओर शिफ्ट हो रहा है। ऐसे में अपने वोटबैंक को फिर से सहेजने के लिए बसपा चीफ गेस्ट हाउस कांड की याद दिला रही हैं ताकि मतदाताओं में यह संदेश जा सके कि सपा और कांग्रेस के साथ उनका भविष्य सुरक्षित नहीं है।

काशी में गंगा का रौद्र रूप

लगातार चौथे दिन गंगा के जलस्तर में बढ़ाव जारी, नावों का संचालन फिर हुआ बंद

वाराणसी, 14 सितंबर (एजेंसियां)। वाराणसी में गंगा के जलस्तर में बढ़ाव लगातार चौथे दिन भी जारी है। शनिवार को 10 सेंटीमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से पानी का बढ़ाव जारी है। वहीं गंगा का जलस्तर बढ़ने के कारण एक बार फिर नावों के संचालन पर रोक लगा दी गई है। केंद्रीय जल आयोग के अनुसार शुक्रवार को भी जलस्तर में 18 सेंटीमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से बढ़ोतरी हो रही थी। गंगा का जलस्तर रात 10 बजे 67.18 मीटर रिकॉर्ड किया गया। जलस्तर में वृद्धि के साथ ही निगरानी बढ़ा दी गई है। वाराणसी में गंगा का जलस्तर पिछले सप्ताह सोमवार से गिर रहा था। बुधवार से जलस्तर में वृद्धि शुरू हो गई। वहीं, गंगा नदी के जल स्तर में हो रहे बढ़ाव को ध्यान में रखकर जिला प्रशासन ने शुक्रवार को एडवाइजरी जारी की। शाम 8 बजे गंगा नदी का जलस्तर 66.82 मीटर रहा। 20 सेमी प्रति घंटे की दर से वृद्धि जारी है। जिले में गंगा नदी का चेतावनी बिंदु 70.26 मीटर एवं खतरे का बिंदु 71.26 भीटर है। वर्तमान में गंगा नदी चेतावनी बिंदु से 03.44 मीटर नीचे है। बाढ़ की पूर्व तैयारी किया जाना अति आवश्यक है। जिला प्रशासन ने आम जनमानस से बाढ़ से पूर्व, बाढ़ के दौरान तथा बाढ़ के बाद बरते जाने वाले एहतियात के संबंध में अपील की। जिलाधिकारी एस राजलिंगम के अनुसार बाढ़ के पूर्व ऊंचे स्थानों को पहले से चिन्हित करें। जरूरी कागजात जैसे- राशन कार्ड, बैंक पासबुक, मतदाता पहचान पत्र, आधार कार्ड इत्यादि का वॉटरप्रूफ बैग में सम्भाल कर रखें।

योगी ने कहा-ज्ञानवापी ही साक्षात विश्वनाथ हैं

दुर्भाग्य से लोग उसे मस्जिद कह रहे हैं गोरखपुर में सुनाई आदिशंकर की कहानी

गोरखपुर, 14 सितंबर (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने ज्ञानवापी पर बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि ज्ञानवापी को आज लोग दूसरे शब्दों में मस्जिद कहते हैं, लेकिन ज्ञानवापी साक्षात 'विश्वनाथ' ही हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को डीडीयू गोरखपुर यूनिवर्सिटी में नाथपंथ पर आयोजित संगोष्ठी का शुभारंभ किया। इस दौरान सीएम योगी ने कहा कि ज्ञानवापी साक्षात भगवान विश्वनाथ हैं। नाथ परंपरा ने हमेशा सबको जोड़ने की कोशिश की है। गुरु गोरखनाथ ने अपने समय में राष्ट्रीय एकता की ओर ध्यान आकर्षित किया था। रामचरित मानस समाज को जोड़ता है, वह हमारे जीवन का हिस्सा है। सीएम योगी ने बताया कि शंकराचार्य ने भारत के चार कोनों में चार पीठों की स्थापना की। काशी में आए तो भगवान विश्वनाथ ने उनकी परीक्षा लेनी चाही। उन्होंने देखा कि सुबह ब्रह्ममुर्हत में आदिशंकराचार्य गंगा स्नान के लिए जा रहे होते हैं। इसी बीच अचानक एक अछूत कहे जाना वाला व्यक्ति उनके सामने आ जाता है। सामने खड़े होता देख सामान्य रूप में उनके मुंह से निकलता है कि मेरे सामने से हटो। तब वो आदिशंकराचार्य से प्रश्न पूछता है कि आप किसको हटाना चाह रहे हैं? आपका ज्ञान क्या इस भौतिक काया को देख रहा है या ब्रह्म को देख रहा। अगर ब्रह्म सत्य है तो ये ब्रह्म मेरे अंदर भी है और अगर इस ब्रह्म सत्य को जानकर ठुकरा रहे हैं तो ये सत्य नहीं है। इतना सुनते ही आदिशंकराचार्य ने उनके मुंह से ऐसी बात सुन पूछा कि आप कौन हैं? उन्होंने बताया कि जिस ज्ञापव्यापी की साधना के लिए वो काशी आए हैं, मैं वहीं साक्षात विश्वनाथ हूं। ये सुनकर आदिशंकराचार्य उनके सामने नतमस्तक हो गए। दुर्भाग्य है कि आज लोग उसे मस्जिद कहते हैं। सीएम योगी ने हिंदी दिवस की बधाई दी। साथ ही कहा कि, देश को जोड़ने की एक व्यवहारिक भाषा जिसे देश की बड़ी आबादी जानती है। हिंदी का मूल देववाणी संस्कृत से है। हर भाषा का श्रोत संस्कृत से जुड़ता है। अगर हमारी भाषा और भाव स्वयं की नहीं है तो प्रगति प्रभावित होगी। मोदी सरकार ने 10 वर्षों में हिंदी को हर स्तर पर प्रोमोट किया। आज इसका परिणाम है कि मेडिकल और इंजीनियरिंग के पाठ्यक्रम भी हिंदी में देखने को मिल रहे हैं। अब राजनयिक आते हैं तो हिंदी को माध्यम बनकर हमसे संवाद करते हैं। भारत के संतों की परंपरा सबको जोड़ने की रही है।

बिहार में फिर चली तबादला एक्सप्रेस, 9 आईपीएस अधिकारियों का ट्रांसफर

पटना, 14 सितंबर (एजेंसियां)। बिहार सरकार ने एक बार फिर से कई आईपीएस अधिकारियों का किया तबादला, 9 आईपीएस अधिकारियो का हुआ तबादला, गृह विभाग ने तबादले की अधिसूचना जारी कर दी है। लगातार दूसरे दिन बिहार में आईपीएस अधिकारियों का तबादला किया गया है। इससे पहले कल 12 सितंबर को बिहार के 29 आईपीएस अधिकारियों का तबादला कर दिया गया था। बता दें कि जिन अधिकारियों का ट्रांसफर हुआ है, उनमें एस रविंद्रन को राज्य खेलकूद प्राधिकरण राजगीर खेल अकादमी के महानिदेशक का प्रभार दिया गया है। वहीं पंकज दराद को एटीएस के नए एडीजी के साथ विशेष निगरानी विभाग का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। अमित कुमार जैन को कमजोर वर्ग, अपराध अनुसंधान विभाग का एडीजी बनाया गया है। इसके अलावा सुंधाशु कुमार को असैनिक सुरक्षा का अपर पुलिस महानिदेशक बनाया गया है। आईपीएस सुनील कुमार एडीजी विशेष शाखा बनाए गए हैं। कमल किशोर सिंह को बजट, अपील कल्याण का महानिदेशक बनाया गया है। पारस नाथ सीआईडी के एडीजी बनाए गए हैं। इनके अलावा एम आर नायक को बिहार विशेष सशस्त्र पुलिस का एडीजी बनाया गया है। वहीं आईपीएस किम को पुलिस उप महानिरीक्षक, अपराध अनुसंधान विभाग की जिम्मेदारी दी गई है। इससे पहले नए डीजीपी की तैनाती के बाद 12 सितंबर को 29 आईपीएस अधिकारियों का ट्रांसफर किया गया था।

कोडरमा में टल गया बड़ा हादसा, दो भागों में टूटकर अलग हो गई मालगाड़ी, ड्राइवर ने दिखाई समझदारी

कोडरमा, 14 सितंबर (एजेंसियां)। बिहार के कोडरमा में एक बड़ी दुर्घटना टल गई है। यहां मलगाड़ी टूटकर दो भागों में बंट गई। ड्राइवर की सूझ-बूझ के कारण कोई घायल नहीं हुआ है। बता दें कि दुर्घटनाग्रस्त ट्रेन कोडरमा से गया की ओर जा रह थी। यह हादसा सुबह के 9 बजे गया-कोडरमा रेलखंड के पहाड़पुर रेलवे स्टेशन पर सुबह 9 बजे के आसपास घटी। अप लाइन पर मालगाड़ी आ रही थी। फिलहाल इस हादसे के बाद से लाइन ठप्प पड़ा हुआ है। रेलवे द्वारा मिली जानकारी के मुताबिक मालगाड़ी की बोगी को जोड़ने वाली कपलिंग के टूटने कारण मालगाड़ दो हिस्सों में बंट गया। रेलवे के अधिकारी और रेलवेकर्मी मौके पर पहुंच चुके हैं और आवश्यक कार्रवाई की जा रही है। बता दें कि रेलवे से ही जुड़े कई मामले बीते कुछ दिनों में देखने को मिले हैं, जहां ट्रेन को डीरेल करने या घटनाग्रस्त करने नीयत से कहीं पटरी पर सीमेंट के ब्लॉक्स बिछाए गएं तो कहीं सिलेंडर गै। कालिंदी एक्सप्रेस मामले में केंद्रीय जांच एजेंसी एनआईए का एक्शन शुरू हो चुका है। एनआईए की टीम इस मामले में संदिग्ध शाहरुख नाम के संदिग्ध से पूछताछ करेगी। पुलिस ने शाहरुख को एनआईए के हवाले कर दिया है। बता दें कि बीते दिनों कानपुर के शिपराजपुर क्षेत्र के मुंडेरी गांव के पास प्रयागराज से आ रही कालिंदी एक्सप्रेस को डीरेल करने की साजिश का खुलासा हुआ था। इसमें रेलवे ट्रैक के बीच में एलपीजी सिलेंडर रखा गया था, लेकिन लोको पायलट की सूझ-बूझ के चलते बड़ा हादसा होने से टल गया। जांच के दौरान रेलवे ट्रैक के पास बोतल में पेट्रोल भी बरामद किया गया। जानकारी के मुताबिक इस केस में संदिग्ध शाहरुख को लेकर कई खुलासे हुए हैं। दरअसल शाहरुख ने फेसबुक पर राजा नाम से एक फेक आईडी बनाई थी। यहां शाहरुख ने सोशल मीडिया पर भगवा गमछे में तस्वीर शेयर की और ऐसी जानकारियां भी सामने आई है कि चुनावी रैलियों में शाहरुख जय श्रीराम के नारे भी लगाता था। संदिग्ध आरोपी शाहरुख कितना शातिर है, उसकी सोशल मीडिया प्रोफाइल से ही पता चलता है।

आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस-वे पर भीषण हादसा, टायर फटने से डिवाइडर से टकराई कार, पान मसाला कंपनी के मालिक की पत्नी की मौत

आगरा, 14 सितंबर (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के आगरा लखनऊ एक्सप्रेस वे पर कानपुर के सुप्रसिद्ध केसर पान मसाला कंपनी के मालिक हरीश मखीजा की पत्नी प्रीति मखीजा की सड़क दुर्घटना में मौत हो गई। इन्हीं के साथ शराब कारोबारी तिलक राज शर्मा की पत्नी और गाड़ी का ड्राइवर गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। केसर पान मसाला के मालिक हरीश मखीजा अपनी पत्नी और तिलक राज शर्मा और दीपक कोठरी के साथ अलग-अलग गाड़ियों से कानपुर से आगरा निजी समारोह में शामिल होने जा रहे थे। करहल के आगरा-लखनऊ -एक्सप्रेस वे किलोमीटर 79 के पास गाड़ी का टायर फटने से किया करनेवाल पलट गई और डिवाइडर से जाकर टकरा गई।

अयोध्या राम मंदिर को उड़ाने की धमकी देने वाले के तार बिहार से जुड़े, भागलपुर से गिरफ्तार हुआ मकसूद अंसारी

भागलपुर, 14 सितंबर (एजेंसियां)। अयोध्या में भगवान श्रीराम के मंदिर को बम से उड़ाने की धमकी का कनेक्शन भागलपुर से भी जुड़ गया है। इंस्पेक्टर रजनीश कुमार पांडेय के नेतृत्व में अयोध्या से पहुंची पुलिस टीम ने बरारी थानाक्षेत्र के बड़ी खंजरपुर स्थित मस्जिद गली से आमिर के सहयोगी मोहम्मद मकसूद अंसारी को गिरफ्तार कर लिया है उसके पास से पुलिस टीम चार मोबाइल भी बरामद किया है जिसमें उसकी तरफ से फेसबुक और वाट्सएप ग्रुप पर अयोध्या धाम मंदिर उड़ाने की धमकी दी गई थी। यूपी के मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी को भी मारने की धमकी दी थी। बरामद मोबाइल से आमिर से जुड़ी जानकारी और अयोध्या धाम मंदिर को उड़ाने से जुड़ी कई जानकारियां मिली हैं। वहीं, शुक्रवार की देर रात यूपी पुलिस आरोपी को उत्तर प्रदेश लेकर चली गई। स्थानीय पुलिस सूत्रों के अनुसार अयोध्या से आई पुलिस टीम तकनीकी निगरानी में मकसूद को बांका जिले के अमरपुर सुल्तानपुर के पास से गिरफ्तार किया है, लेकिन अयोध्या से पहुंची पुलिस टीम के अधिकारियों का दावा है कि मकसूद को बड़ी खंजरपुर के मस्जिद गली वाले उसके घर से गिरफ्तार किया गया है।

एसएसपी आनंद कुमार के निर्देश पर इंस्पेक्टर अभय शंकर के नेतृत्व में पुलिस टीम को सहयोग के लिए लगाया गया तब उसकी गिरफ्तारी में सफलता मिली। पुलिस टीम बरारी थाने की पुलिस के सहयोग से उसे ट्रांजिट रिमांड पर लेने का प्रयास करती रही, लेकिन फिलहाल स्वास्थ्य जांच कराते हुए उसे वहां के न्यायालय में प्रस्तुत करने को कहा गया है। अयोध्या से आई पुलिस टीम मकसूद अंसारी लेकर देर रात अयोध्या के लिए रवाना हो गई है।

पति-पत्नी में रिलेशन नहीं बने तो जूडिशियल सेपरेशन बरकरार

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने तलाक के मामले में दिया फैसला, पत्नी की अपील खारिज

प्रयागराज, 14 सितंबर (एजेंसियां)। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा है कि हिंदू विवाह अधिनियम 1955 की धारा 10 के तहत यदि वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना या न्यायिक पृथक्करण (जूडिशियल सेपरेशन) के आदेश के बाद एक साल में पति-पत्नी के बीच कोई सहवास नहीं होता है, तो सेपरेशन के आदेश को बरकरार रखा जाएगा। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने यह आदेश जालौन उरई के मामले में दिया। जालौन की रहने वाली महिला की शादी 8 दिसंबर 2001 को हुई थी। पति ने आरोप लगाया कि पत्नी ने 2002 में उसे छोड़ दिया। चूंकि पत्नी ने दोनों पक्षों के बीच वैवाहिक संबंध को कंटीन्यू नहीं किया, इसलिए उसने अपने वैवाहिक अधिकारों की बहाली की मांग करते हुए कार्यवाही शुरू की। इसके एक साल बाद पति ने दावा किया कि दोनों पक्ष एक साथ नहीं रहते थे, जबकि पत्नी ने दावा किया कि दोनों साथ रहते थे। पति की बात पर विश्वास करते हुए ट्रायल कोर्ट ने दोनों पक्षों को तलाक का आदेश दे दिया, जिसे अपीलकर्ता-पत्नी ने हाईकोर्ट में चुनौती दी। हाईकोर्ट ने पाया कि ट्रायल कोर्ट ने माना था कि पति के इस कथन पर संदेह करने का कोई कारण नहीं था कि दोनों पक्ष एक साथ नहीं रहते थे और इस प्रकार न्यायिक पृथक्करण के निर्णय से एक साल के भीतर उनका विवाह पुनर्जीवित नहीं हुआ था। यह माना गया कि यह साबित करने के लिए कोई सबूत नहीं था कि 11 मई 2006 के बाद किसी भी समय विवाह पुनर्जीवित हुआ था। इसके अलावा, अधिनियम की धारा 13 (1ए) की प्रयोज्यता के संबंध में न्यायालय ने माना कि यह पक्षकारों के सहवास पर निर्भर होगा, जो स्पष्ट रूप से नहीं हुआ है। न्यायमूर्ति सौमित्र दयाल सिंह और न्यायमूर्ति दोनादी रमेश की पीठ ने कहा, यदि निर्धारित वैधानिक अवधि के भीतर कोई सहवास नहीं होता है, तो प्रभावित पक्ष के लिए यह विकल्प खुला होता है कि वह निर्धारित वैधानिक अवधि के भीतर कोई सहवास न होने के कारण विवाह विच्छेद के लिए आवेदन कर सके।

कासगंज के बाद आगरा में महिला अधिवक्ता की हत्या पति की हालत गंभीर, जेठ के परिवार पर आरोप

आगरा, 14 सितंबर (एजेंसियां)। आगरा के अमरपुरा (जगदीशपुरा) में सबमर्सिबल पंप सही कराने के विवाद में बड़े भाई ने छोटे भाई पर हमला बोल दिया। छोटे भाई की अधिवक्ता पत्नी शालिनी राजपूत को डंडे और सरिया से पीटा। उनके सिर में गहरी चोट लगी। उन्होंने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। उनके पति भी गंभीर घायल हैं। पुलिस ने जेठ-जेठानी सहित 7 के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। आरोपी घर से फरार है। अधिवक्ता शालिनी राजपूत के पति मनोज राजपूत चांदी की पायल का काम करते हैं। उनकी शादी को 10 साल हुए थे। मनोज और उनके बड़े भाई अजय अलग-अलग घर में रहते हैं। मनोज के घर के बाहर सबमर्सिबल पंप लगा हुआ है। पंप खराब हो गया था। बुधवार दोपहर को वह पंप को सही कहा रहे थे। इसका चैंबर भी बनाया जाना था।

अखिलेश बोले-लगता है मुझ पर जल्द मानहानि का केस होगा

मंगेश यादव एनकाउंटर पर कहा- पुलिस विभाग साजिश करने में जुटा

लखनऊ, 14 सितंबर (एजेंसियां)। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने मंगेश यादव एनकाउंटर को लेकर यूपी सरकार पर हमला बोला। कहा- पूरा पुलिस विभाग साजिश करने में जुट गया है। मैं मंगेश के परिवार से मिला। उन्होंने बताया कि पुलिस ने मंगेश को रात में उठाया। 2 दिन बाद एनकाउंटर कर दिया। उन्होंने कहा- मंगेश का रात 3 बजे एनकाउंटर हुआ। 5 बजे प्रेस नोट जारी हो गया। पुलिस के डर से कोई कुछ भी कह सकता है। हमने प्रदेश में होने वाले एनकाउंटर पर समय-समय पर सवाल उठाए हैं।

लगता है कि मुझ पर जल्द मानहानि का केस होगा। अखिलेश यादव ने शनिवार को पार्टी दफ्तर में हिंदी दिवस के मौके पर साहित्यकारों को सम्मानित भी किया। इसके साथ ही महाभारत के कर्ण के जीवन पर आधारित किताब का विमोचन किया। इस दौरान उन्होंने मीडिया से बात की।

क्या गूगल के खिलाफ भी केस करेंगे

मठाधीश और माफिया कहे जाने से जुड़े सवाल पर कहा- जिन संतों को बुरा लग रहा है। उन्हें बताना चाहिए कि जब एक नारा चला था- इनको मारो जूते चार। क्या इस बात का बुरा नहीं लगा था? आज गूगल का जमाना है। आप गूगल पर चेक कर लीजिए। उसमें क्या मतलब आ रहा है। क्या गूगल के खिलाफ भी केस करेंगे।

भाजपा भारतीय जमीन पार्टी बनी गई

अयोध्या में जमीनों को लेकर करप्शन हुआ। सिर्फ जमीन नहीं, बल्कि तालाब भी खत्म कर दिए। भारतीय जनता पार्टी नहीं, बल्कि भारतीय जमीन पार्टी बन गई है। मुझे अब दिल्ली निकलना है। हम दिल्ली को और आगे बढ़ाएंगे।

पुलिस घटनाओं को छिपान रही है

एनसीआरबी के आंकड़े निकालेंगे तो अकेले वाराणसी की नहीं, पूरे प्रदेश में हो रही है। वाराणसी की घटना आप बता रहे हो। पुलिस पूरे प्रदेश में घटना को छिपाने का काम कर रही है।

कर्ण के जीवन से सीख लेने की जरूरत

अखिलेश यादव ने कहा- कर्ण के जीवन से हमें सीखने चाहिए, क्योंकि उन्हें पता था कि हम युद्ध हार जाएंगे। लेकिन उन्होंने अपने मित्र दुर्योधन का साथ नहीं छोड़ा। उनके साथ खड़े रहे।दुर्योधन को भी यह जानता था कि कर्ण अगर हमारे साथ है, तो महाभारत जीता जा सकता है। बिना कर्ण के हम दूसरे पक्ष का मुकाबला नहीं कर पाएंगे। दिनकर जी ने रश्मिरथी कर्ण पर जो भी लिखा है, उससे बेहतर नहीं लिखा जा सकता है।

THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

मेरा हैदराबाद

रविवार, 15 सितंबर, 2024 5

विचार

अगर लोगों को पता चले कि मैंने अपनी महारत हासिल करने के लिए कितनी मेहनत की है, तो यह सब इतना अद्भुत नहीं लगेगा।

डीजीपी के साथ पुलिस कमिश्नरों ने गणेश जुलूस मार्ग का किया निरीक्षण

शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न होंगे त्यौहार

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना के डीजीपी डॉ. जितेन्द्र ने हैदराबाद पुलिस आयुक्त सी.वी. आनंद, राचकोंडा पुलिस आयुक्त जी. सुधीर बाबू और अन्य अधिकारियों के साथ शनिवार को बालापुर से टैंक बंड तक गणेश जुलूस के मार्ग का निरीक्षण किया। मीडिया से बातचीत करते हुए आनंद ने कहा कि शहर में गणेश प्रतिमा विसर्जन और नबी मिलाद के सुचारू आयोजन के लिए सभी प्रबंध किए गए हैं। उन्होंने कहा कि जीएचएमसी, राजस्व, बिजली और अन्य विभागों के अधिकारियों के साथ सभी मुख्य और छोटे जुलूस मार्गों का निरीक्षण किया गया। आनंद ने कहा कि हमें पूरा भरोसा है कि कोई अप्रिय घटना नहीं होगी और त्यौहार शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न होंगे। हम लोगों से पुलिस के साथ सहयोग करने का अनुरोध करते हैं।

गणेश प्रतिमाओं की अंतिम शोभायात्रा और विसर्जन में मात्र 72 घंटे शेष हैं, इस भव्य आयोजन को निर्बाध रूप से संपन्न कराने के लिए हैदराबाद सिटी पुलिस द्वारा सावधानीपूर्वक अंतिम तैयारियां चल रही हैं। इस संबंध में 14 सितंबर को पुलिस विभाग और अन्य विभागों के साथ एक संयुक्त मार्ग निरीक्षण किया गया। इस निरीक्षण में डॉ. जितेंद्र, डीजीपी, तेलंगाना, सी.वी. आनंद, सीपी, हैदराबाद सिटी, सुश्री आम्रपाली काटा कमिश्नर, जीएचएमसी अनुदीप दुरिशेट्टी, जिला, कलेक्टर, हैदराबाद, विक्रम सिंह मान, एडिशनल सीपी, एल एंड ओ, हैदराबाद सिटी, सुधीर बाबू सीपी, राचकोंडा, पी. विश्व प्रसाद, एडिशनल सीपी, ट्रैफिक, जोनल डीसीएसपी ऑफ लॉ एंड ऑर्डर और ट्रैफिक और हैदराबाद सिटी पुलिस के अन्य विंग, एचएमडीए, आरएंडबी, ट्रांसको, एचएमडब्ल्यूएस एंड एसबी के वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए। मार्ग निरीक्षण प्रसिद्ध बालापुर गणेश मंदिर से शुरू हुआ और मुख्य जुलूस मार्ग के साथ कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों को कवर किया। बालापुर से हुसैन सागर तक 19 किमी के कुल मार्ग में चंद्रायनगुट्टा, फलकनुमा, चारमीनार, नयापूल, एमजे मार्केट और तेलुगु तल्ली फ्लाईओवर तक के प्रमुख स्थान शामिल हैं। डीजीपी ने सभी अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करें और किसी भी लंबित मुद्दे को हल करने के लिए सही समन्वय रखें। सीपी, हैदराबाद ने नोडल विभाग के रूप में सिटी पुलिस के महत्व पर जोर दिया और मार्ग पर जुलूस की सुचारू और तेज आवाजाही सुनिश्चित करने पर जोर दिया, जिसके लिए सिटी पुलिस के सभी रैंकों को अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देना होगा। अन्य विभाग के अधिकारियों ने भी की जा रही व्यवस्थाओं के बारे में जानकारी दी। सभी अधिकारियों को विभिन्न क्षेत्रों से मूर्तियों की समय पर आवाजाही के बारे में बताया गया। मार्ग में ऊंचाई प्रतिबंध और जंक्शन क्लीयरेंस पर भी जोर दिया गया। गणेश महोत्सव के लिए हैदराबाद सिटी पुलिस के साथ-साथ बाहर से भी लगभग 25,000 पुलिस बल तैनात किया जा रहा है। उनके रहने और खाने-पीने से संबंधित सभी व्यवस्थाएं की गई हैं। शहर में जुलूस में शामिल होने वाली विभिन्न सड़कें या तो नियमित यातायात के लिए बंद रहेंगी या यातायात डायवर्जन देखा जाएगा। कई त्वरित प्रतिक्रिया दल, डॉग स्क्वॉड और एंटी-चेन स्नैचिंग टीमें, शी टीमें भी तैनात की जाएंगी। जीएचएमसी, एच एमडीए, ट्रांसको, आर एंड बी, जल कार्य, आरटीए, चिकित्सा और स्वास्थ्य आदि जैसे सभी विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों वाला संयुक्त कमांड कंट्रोल सेंटर 17 सितंबर की सुबह से टीजीसी एंड सीसी में पूरी तरह से चालू हो जाएगा। शहर की पुलिस जनता से कानून प्रवर्तन अधिकारियों के साथ सहयोग करने और इस साल के गणेश प्रतिमा जुलूस और विसर्जन को यादगार और घटना-मुक्त उत्सव बनाने के लिए सुरक्षा दिशानिर्देशों का पालन करने की अपील करती है।

शी टीम ने गणेश उत्सव में भक्तों से दुर्व्यवहार करने वाले 285 लोगों को पकड़ा

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। शी टीम ने 7 दिनों में 285 लोगों को पकड़ा है जो हैदराबाद के पुराने शहर में खैरताबाद बड़ा गणेश उत्सव में भाग लेने वाले भक्तों के साथ दुर्व्यवहार कर रहे थे। इन लोगों को सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं के प्रति उनके अभद्र व्यवहार के लिए पकड़ा गया था, उन्हें आगे की कार्रवाई के लिए मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया जाएगा। इस हैदराबाद गणेश उत्सव के दौरान सभी नागरिकों, विशेष रूप से महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने की प्रतिबद्धता के साथ शी टीम्स की यह पहल सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने और समुदाय की सुरक्षा के लिए चल रहे प्रयासों को रेखांकित करती है, इस बात पर जोर देते हुए कि शी टीम के अधिकारियों ने कहा कि इस तरह के दुर्व्यवहार को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। यदि कोई अभद्र व्यवहार देखा जाता है, तो अपनी आवाज उठाएं, सार्वजनिक रूप से किसी भी तरह के अनुचित व्यवहार को बर्दाश्त न करें। पुलिस/शी टीमों के संज्ञान में तुरंत ला सकते हैं। शी टीमें क्षेत्र में घूम रही हैं जो हमेशा महिलाओं की सुरक्षा के लिए मौजूद हैं। लोगों को किसी भी तरह की छेड़छाड़ या उत्पीड़न की सूचना देने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। सहायता या घटनाओं की रिपोर्ट करने के लिए, आपको 100 डायल या 9490616555 पर व्हाट्सएप के माध्यम से शी टीम हेल्पलाइन से संपर्क करने के लिए सूचित किया जाता हैं।

खैरताबाद मेट्रो स्टेशन गणेश भक्तों से खचाखच भरा रहा

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। खैरताबाद मेट्रो स्टेशन पर आज यात्रियों की भीड़ थी। स्टेशन परिसर एलबी नगर और मियापुर से खैरताबाद में प्रसिद्ध खैरताबाद गणेश मूर्ति के दर्शन के लिए उमड़े भक्तों से गुलजार था। लगातार दो दिनों की छुट्टियों के कारण खैरताबाद में भगवान गणेश के दर्शन के लिए भक्तों की भीड़ बढ़ गई है। इसे ध्यान में रखते हुए मेट्रो रेल प्रबंधन ने यह सुनिश्चित करने के लिए व्यवस्था की है कि भक्तों को किसी भी कठिनाई का सामना न करना पड़े। टिकट काउंटर और निकास द्वार पर भीड़भाड़ से बचने के लिए पर्याप्त उपाय किए गए हैं।

वे क्यूआर कोड के जरिए टिकट बुक करने वाले यात्रियों और काउंटर से टिकट खरीदने वाले यात्रियों को अलग-अलग मेट्रो स्टेशनों के अंदर भेज रहे हैं। यात्रियों को सलाह दी जाती है कि वे स्टेशन के अंदर लगे क्यूआर कोड के जरिए टिकट पहले ही बुक कर लें और कार्ड में पर्याप्त पैसे न होने पर एंट्री स्टेशन पर रिचार्ज करा लें। शनिवार सुबह से ही भीड़ बढ़ने के कारण मेट्रो प्रबंधन ने खैरताबाद मेट्रो स्टेशन पर अतिरिक्त मैनपावर की व्यवस्था की है। श्रद्धालुओं को किसी तरह की असुविधा न हो, इसके लिए एहतियात बरती जा रही है। टिकट काउंटर, प्रवेश और निकास द्वार के साथ-साथ प्लेटफॉर्म पर सुरक्षाकर्मी यात्रियों को उचित निर्देश दे रहे हैं।

गच्चीबावली पुलिस ने अरीकापुडी गांधी के खिलाफ हत्या के प्रयास का मामला दर्ज किया

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। गच्चीबावली पुलिस ने बीआरएस पार्टी के विधायक कौशिक रेड्डी के घर पर हुए हमले के सिलसिले में पीएसी के अध्यक्ष अरीकापुडी गांधी को गिरफ्तार किया है। कौशिक रेड्डी की शिकायत पर गांधी, उनके भाई और भतीजे के खिलाफ हत्या के प्रयास का मामला दर्ज किया गया है। रेड्डी ने अपने घर पर हुए हमले के सिलसिले में गाचीबावली पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है। दो अन्य पार्षदों पर भी हत्या के प्रयास का मामला दर्ज किया गया है। पार्षद वेंकटेश गौड़ के साथ पुलिस ने मियापुर पार्षद श्रीकांत को भी मामले में आरोपी बनाया है। कौशिक के घर पर हुई घटना को लेकर एसआई महेश द्वारा दर्ज कराई गई शिकायत के आधार पर दो दिन पहले गांधी के खिलाफ मामला दर्ज किया गया था। विधायक गांधी को मामले में जमानत मिल गई है। बीआरएस नेताओं ने आरेकपुडी गांधी को पीएसी अध्यक्ष बनाए जाने पर कड़ी आपत्ति जताई है। बीआरएस नेता सवाल उठा रहे हैं कि मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी की मौजूदगी में कांग्रेस पार्टी में शामिल हुए आरेकपुडी गांधी को पीएसी अध्यक्ष का पद कैसे दे दिया गया? हालांकि गांधी ने कहा कि वह कांग्रेस पार्टी में शामिल नहीं हुए हैं, बल्कि बीआरएस पार्टी के विधायक बने हुए हैं।

हैदराबाद के बाद वारंगल को अगला औद्योगिक केंद्र बनाएं: सांसद काव्या

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। सीआईआई तेलंगाना राज्य परिषद की बैठक के साथ-साथ, वारंगल और हनमकोंडा में जीवन विज्ञान के भविष्य पर एक सत्र, सीआईआई सदस्यता रोड शो और सीओई की सेवाएं एनआईटी, वारंगल में आयोजित की गईं। डॉ. कडियम काव्या, सांसद के साथ एक विशेष इंटरैक्टिव सत्र आयोजित किया गया, जहां प्रमुख उद्योग नेताओं ने वारंगल के लिए अपना दृष्टिकोण साझा किया। सीआईआई तेलंगाना के अध्यक्ष और भारत बायोटेक इंटरनेशनल लिमिटेड के कार्यकारी निदेशक साई डी प्रसाद ने "फार्मा में एआई सत्र' में अपने स्वागत भाषण में तेलंगाना की बढ़ती अर्थव्यवस्था और 2047 तक एक ट्रिलियन अमरीकी डालर की अर्थव्यवस्था तक पहुंचने के लक्ष्य पर प्रकाश डाला, वारंगल, करीमनगर और अन्य क्षेत्रों में औद्योगिक विकास की आवश्यकता है। उन्होंने यह भी कहा कि वारंगल को तेलंगाना में एक शैक्षिक केंद्र के रूप में पुनर्जीवित करना होगा।

केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) के उप औषधि नियंत्रक डॉ ए रामकिशन ने दोहराया कि वारंगल और हनमकोंडा में फार्मा और लाइफ साइंसेज हब बनने की बहुत संभावनाएं हैं। सीआईआई सोहराबजी गोदरेज ग्रीन बिजनेस सेंटर के प्रिंसिपल काउंसलर मुरली कृष्ण कन्नन ने सदस्यता रोड शो में अपनी प्रस्तुति में पूरे भारत में विभिन्न उत्कृष्टता केंद्रों पर प्रकाश डाला। सीआईआई तेलंगाना के निदेशक और राज्य प्रमुख शेख समीउद्दीन ने वारंगल के उद्योग जगत के नेताओं को सीआईआई सेवाओं और सदस्यता विवरणों पर प्रकाश डाला।

19 चोरी की ट्रैक्टर ट्रॉलियां बरामद

4 आरोपियों को किया गिरफ्तार

सूर्यापेट, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। पुलिस ने चोरी में शामिल चार लोगों से 22.92 लाख रुपये मूल्य की 19 चोरी की ट्रैक्टर ट्रॉलियां और अन्य वाहन जब्त किए। शनिवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए पुलिस अधीक्षक सनप्रीत सिंह ने कहा कि मद्दिराला सब इंस्पेक्टर और उनकी टीम शुक्रवार को मद्दिराला चौराहे पर वाहन चेकिंग कर रही थी, जब एक बाइक पर दो व्यक्ति और एक ट्रैक्टर पर दो अन्य संदिग्ध रूप से कुंतापल्ली की ओर जाते हुए पाए गए। पुलिस टीम ने तुरंत चारों को हिरासत में लिया और उनसे पूछताछ की। उन्होंने कहा कि 4 आरोपियों संपांगी महेश, संपांगी सत्यम, ओरसु वेंकन्ना और अलकुंतला महेश ने पिछले साल अक्टूबर में पोलुमल्ला गांव से चिलपाकुंतला गांव के रास्ते में खेतों में छाया में रखे दो ट्रैक्टर ट्रॉली चोरी करने की बात स्वीकार की।

उन्होंने कहा कि ट्रैक्टर ट्रॉलियों के मालिकों ने मद्दिराला पुलिस में शिकायत दर्ज कराई थी, जिसके बाद जांच की गई। उन्होंने बताया कि पूछताछ के दौरान आरोपियों ने यह भी स्वीकार किया कि वे मुनागला, पेनपाड़, मिर्यालगुडा ग्रामीण, नगरम, मद्दिराला, गुर्रम्पोडु, नूतनकल, मोटे, गरिदेपल्ली, शालिगौरारम, सूर्यापेट ग्रामीण और केथेपल्ली पुलिस थाना क्षेत्रों में 18 ट्रैक्टर ट्रॉली चोरी में शामिल थे। उन्होंने बताया कि पकड़े गए मामलों में 19 ट्रैक्टर ट्रॉलियां, एक ट्रैक्टर और एक बाइक जब्त की गई है। नलगोंडा जिले के मारेपल्ली गांव में एक घर से 20.92 लाख रुपये की कीमत की कुल 19 ट्रॉलियां, 2 लाख रुपये का एक ट्रैक्टर और एक बाइक बरामद की गई। एसपी ने बताया कि आरोपियों ने सूर्यपेट जिले में 11 और नलगोंडा जिले में 7 चोरियां की हैं। इन 18 मामलों के अलावा महेश, सत्यम और वेंकन्ना पर पहले भी 12 मामलों में आपराधिक रिकॉर्ड दर्ज है। महेश और वेंकन्ना को आदिबतला पुलिस ने ट्रैक्टर ट्रॉली चोरी के एक मामले में भी जेल भेजा था। एसपी ने सीसीएस इंस्पेक्टर शिव कुमार, तुंगथुरथी सीआई श्रीनु, सीसीएस एसआई श्रीकांत, मद्दीराला एसआई वीरन्ना, डीएसपी रवि, सीसीएस स्टाफ वेंकन्ना और जांच में शामिल टीम के अन्य सदस्यों को बधाई दी।

प्रधानमंत्री कल वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाएंगे

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। भारतीय रेलवे का गौरव और भारत की स्वदेशी सेमी-हाई स्पीड ट्रेन - वंदे भारत एक्सप्रेस - महाराष्ट्र और तेलंगाना राज्यों को जोड़ने वाली अपनी पहली यात्रा शुरू करने के लिए तैयार है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 16 सितंबर को वीडियो रिमोट लिंक के माध्यम से नागपुर और सिकंदराबाद को जोड़ने वाली उद्घाटन वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाएंगे। स्वदेशी रूप से डिज़ाइन की गई वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन - अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ - रेल उपयोगकर्ताओं को तेज़, आरामदायक और सुविधाजनक यात्रा का अनुभव प्रदान करेगी और "आत्मनिर्भर भारत" की दिशा में भारतीय रेलवे के दृष्टिकोण का एक और महत्वपूर्ण कदम होगा। यह ट्रेन महाराष्ट्र के महत्वपूर्ण शहर नागपुर और तेलंगाना के सिकंदराबाद को जोड़ेगी और दोनों क्षेत्रों के बीच व्यापारिक संबंधों को मजबूत करेगी। यह ट्रेन महाराष्ट्र राज्य के विदर्भ क्षेत्र को औद्योगिक केंद्र रामागुंडम, काजीपेट और सिकंदराबाद से जोड़ेगी। यह ट्रेन नागपुर और सिकंदराबाद के बीच की दूरी सात घंटे 15 मिनट में तय करेगी। ट्रेन में दो एग्जीक्यूटिव क्लास कोच और 18 चेयर कार कोच हैं जो पूरी तरह से वातानुकूलित हैं और इनकी संयुक्त बैठने की क्षमता 1440 है। ट्रेन सुविधाजनक समय पर चलती है जिससे नागपुर, बल्हारशाह और अन्य शहरों से सिकंदराबाद पहुँचने के लिए दिन के समय यात्रा करना आसान हो जाता है। वंदे भारत एक्सप्रेस अत्याधुनिक यात्री सुविधाओं से सुसज्जित है जैसे ऑन-बोर्ड वाई-फाई इंफोटेनमेंट, जीपीएस आधारित यात्री सूचना प्रणाली, आलीशान इंटीरियर, टच फ्री सुविधाओं के साथ बायो वैक्यूम टॉयलेट, फैली हुई एलईडी लाइटिंग, हर सीट के नीचे चार्जिंग पॉइंट, व्यक्तिगत टच आधारित रीडिंग लाइट और छुपा हुआ रोलर ब्लाइंड, बेहतर हीट वेंटिलेशन और कीटाणु मुक्त हवा की आपूर्ति के लिए यूवी लैंप के साथ एयर कंडीशनिंग सिस्टम। हर कोच में इंफोटेनमेंट सिस्टम और कवच तकनीक सहित सुरक्षा सुविधाएँ एक अतिरिक्त विशेषता हैं।

एमबीए, एमसीए से छात्रों का हो रहा मोहभंग!

टीजी आईसीईटी 2024 में कम भागीदारी

प्रवेश से दूर रहे 50 प्रतिशत विद्यार्थी

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। कभी छात्रों के बीच बेहद लोकप्रिय रहे एमबीए और एमसीए कार्यक्रम राज्य में अपनी चमक खोते नजर आ रहे हैं। उच्च शिक्षा में छात्रों की बदलती पसंद का एक संकेत तेलंगाना इंटीग्रेटेड कॉमन एंट्रेंस टेस्ट (टीजी आईसीईटी) 2024 में उम्मीदवारों की भागीदारी में उल्लेखनीय गिरावट से उभरता है। वेब काउंसलिंग आयोजित करने वाले तकनीकी शिक्षा विभाग द्वारा जारी सूचना के अनुसार, सामान्य प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण कुल 71,647 अभ्यर्थियों में से 50 प्रतिशत से अधिक अभ्यर्थी इस शैक्षणिक वर्ष में प्रवेश से दूर रहे।

कुल अर्हता प्राप्त अभ्यर्थियों में से 35,033 अभ्यर्थियों ने अपने प्रमाण-पत्रों का सत्यापन कराया तथा 34,069 ने सीटों के आवंटन के लिए वेब विकल्प का प्रयोग किया। प्रथम चरण के आवंटन के बाद एमबीए और एमसीए दोनों कार्यक्रमों में बड़ी संख्या में सीटें रिक्त रह गयी हैं। राज्य के 266 कॉलेजों में 27,951 एमबीए सीटों में से 24,457 सीटें आवंटित की गईं, जबकि 3,494 सीटें खाली रह गईं। प्रबंधन के लिहाज से 21 विश्वविद्यालय कॉलेजों में 1,615 सीटों में से 95 प्रतिशत सीटें आवंटित की गईं। इसी प्रकार, 243 निजी एमबीए कॉलेजों की 26,154 सीटों में से 87 प्रतिशत सीटें आवंटित की गईं। एमसीए प्रवेश के मामले में, 89 कॉलेजों में 6,797 सीटों में से 5,843 सीटें आवंटित की गईं, जबकि 954 सीटें खाली रह गईं। आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग कोटे के तहत केवल 1,130 उम्मीदवारों को ही सीटें आवंटित की गईं। जिन अभ्यर्थियों को अनंतिम सीट आवंटन प्राप्त हुआ है, उन्हें वेबसाइट https://tsicet.nic.in/ पर स्वयं ऑनलाइन रिपोर्ट करना होगा तथा 17 सितंबर तक भुगतान करना होगा, अन्यथा उनकी सीटें रद्द कर दी जाएंगी। 25 से 28 सितंबर के बीच अभ्यर्थियों को प्रमाण पत्रों की फोटोकॉपी और मूल प्रमाण पत्र का एक सेट कॉलेज को सौंपना होगा, अन्यथा उनकी सीटें स्वतः रद्द हो जाने का खतरा रहेगा।

मृत खाड़ी श्रमिकों के परिवार को 5 लाख की अनुग्रह राशि : पोन्नम प्रभाकर

प्रजा भवन में प्रजा वाणी में खाड़ी पीड़ितों के लिए अलग काउंटर स्थापित

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। खाड़ी श्रमिकों के कल्याण के लिए कदम उठाने के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी के आदेश पर, परिवहन और बीसी कल्याण मंत्री पोन्नम प्रभाकर की अध्यक्षता में निर्वाचन क्षेत्र के विधायकों ने जहां कई खाड़ी श्रमिक हैं, एक बैठक आयोजित की। इस बैठक में सरकारी सचेतक वेमुलावाड़ा विधायक आदि श्रीनिवास और टीपीसीसी एनआरआई सेल विनोद ने खाड़ी पीड़ितों से जुड़े 5 मुद्दों पर चर्चा की। यह सुझाव दिया गया है कि सरकार को खाड़ी श्रमिकों के कल्याण का अध्ययन करने के लिए एक सलाहकार समिति का गठन करना चाहिए, जिसमें खाड़ी प्रभावित क्षेत्रों के विधायकों, एमएलसी और नेताओं को इस समिति के सदस्य के रूप में नियुक्त किया जाना चाहिए और इस उद्देश्य के लिए जेवी जारी करना चाहिए। यह सुझाव दिया गया है कि हैदराबाद प्रजा भवन में प्रत्येक मंगलवार और शुक्रवार को खाड़ी श्रमिकों के लिए प्रवासी प्रजावाणी का आयोजन किया जाना चाहिए। मंत्री पोन्नम प्रभाकर ने कहा कि वर्तमान में आयोजित प्रजावाणी में इस महीने की 20 तारीख से खाड़ी के लिए एक विशेष काउंटर खोला जाएगा।

उन्होंने आश्वासन दिया कि गुरुकुल स्कूलों और कॉलेजों में खाड़ी श्रमिकों के 100 प्रतिशत बच्चों को प्रवेश देने के लिए कदम उठाए जाएंगे जो गुरुकुल में पढ़ना चाहते हैं। कांग्रेस की सरकार बनने पर 7 दिसंबर 2023 से खाड़ी देशों में मरने वाले श्रमिकों के परिवारों को 5 लाख रुपये की अनुग्रह राशि देने का सरकार का ध्यान दिलाने का वादा किया।

एनआरआई सेल ने पिछले दिनों जिन लोगों की मौत हुई है उनके परिजनों को मानवीय आधार पर एक लाख रुपये की अनुग्रह राशि देने का सुझाव दिया है। कई समितियों ने सुझाव दिया है कि इसे 2 जून 2014, जिस दिन तेलंगाना का गठन हुआ था, या किसी अन्य दिन लिया जाना चाहिए। अन्य प्रमुख नेताओं ने कई सुझाव दिये। सरकारी सचेतक आदि श्रीनिवास ने कहा कि सीएमआरएफ पहले ही मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी के सहयोग से उनके वेमुलावाड़ा निर्वाचन क्षेत्र की खाड़ी में मारे गए दो परिवारों को अनुग्रह राशि दे चुका है। यह सुझाव दिया गया है कि रैतु बीमा की तरह गल्फ बीमा भी होना चाहिए। कई विधायकों ने कहा कि हाल के दिनों में सिंगापुर और मलेशिया के मजदूरों को दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

टीपीसीसी एनआरआई संयोजक ने कहा कि 1982 के आव्रजन अधिनियम में खाड़ी देशों में 18 देश होंगे, जिसमें सिंगापुर जैसे देश भी खाड़ी के अंतर्गत आएंगे। उन्होंने सुझाव दिया कि तेलंगाना में सेटवीन, टैंटम, न्याक जैसी 150 ट्रेड लाइसेंस मैन पावर एक्सपोर्ट कंपनियां हैं और लोगों को इनके बारे में जागरूक किया जाना चाहिए। सुझाव दिया गया है कि एजेंसियों के नाम पर धोखाधड़ी रोकने के लिए सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए।

भाजपा को भारत की भाषाई विविधता का सम्मान करना चाहिए : केटीआर

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। भारत की समृद्ध भाषाई विविधता को कमजोर करने वाले देश में हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देने के भाजपा के कदमों पर सवाल उठाते हुए बीआरएस के कार्यकारी अध्यक्ष और विधायक के टी रामाराव ने शनिवार को केंद्र की भाजपा सरकार की आलोचना की और कहा कि वह सौहार्दपूर्ण प्रचार की आड़ में हिंदी को थोपने की कोशिश कर रही है। रामा राव ने कहा कि भाजपा की हरकतें भारत के सांस्कृतिक और भाषाई ताने-बाने को कमजोर करने की उसकी असली मंशा को उजागर करती हैं। उन्होंने आधिकारिक भाषाओं पर संसदीय समिति के गठन में देरी पर सवाल उठाते हुए पूछा कि हमारी भाषाओं का सम्मान और विविधता के लिए उनका सम्मान क्यों नहीं किया जा सकता? भाजपा एक बार भी भारत के सांस्कृतिक और भाषाई ताने-बाने का सम्मान क्यों नहीं कर सकती? एक्स से बातचीत में उन्होंने हिंदी को एक एकीकृत भाषा के रूप में बढ़ावा देने के बारे में चल रही बहस की पृष्ठभूमि में भाषाई विविधता को खतरे में डाले जाने पर अपनी चिंता व्यक्त की।

दक्षिण मध्य रेलवे
हमें @SCRailwayindia पर फॉलो करें
द.म. रेलवे की निविदा सूचनाओं के विवरणों को हमारी वेबसाइट www.scr.indianrailways.gov.in पर देखा जा सकता है

PUB/0911
सं.-बी-एसजी-जीएस-कवच-02-24-25, दि.12-09-2024

भारत के राष्ट्रपति की ओर से व के लिए, अधोहस्ताक्षरी द्वारा निम्न कार्यों हेतु ई-निविदाएं आमंत्रित हैं।

क्रम सं.-1. कार्य विवरण: /बी-एसजी-जीएस-कवच-02-24-25, दि.12-09-2024, दक्षिण मध्य रेलवे के गुडूर जंक्शन(सेंटर लाइन से बीजेडए की ओर)- विजयवाडा-(विजयवाडा को छोडकर) सेक्शन(एचडीएन5रूट) के स्टेशन/एलसी/आयबी/एबीएस हट लोकेशन्स पर सर्वेक्षण, डिजाइन, आपूर्ति, इंस्टाल्रेशन, टेस्टिन्ग तथा ट्रैक साइड कवच एकीपमेन्ट या उपस्कर की कमीशनींग एवं तत्संबंधित कार्य, निविदा मूल्यः रु. 59,77,59,631.56, पूर्व धरोहर राशिःरु. 31,38,800.00, सीटीबीः रु. शून्य, पूरा करने की अवधिः 540 दिन

क्रम सं.-कार्य विवरणः बंद करने की तिथि व समयः दि.28-10-2024 के 15.00 बजे

1.भावी निविदाकर्ताओं को सलाह दी जाती है कि, तत्संबंधित किसी भी निविदा के परिवर्तनों/शुध्दिपत्रों को नोट करने के लिए, निविदा बंद करने की तिथि से पहले वेबसाइटःwww.ireps.gov.in देखें।

उप मुख्य सिग्नल व दूरसंचार अभियंता/जीएस/विजयवाडा

PUB/0912
निविदा सं. -22-पीए-24-25-सीनि. डीईई-एम-एचवायबी

भारत के राष्ट्रपति की ओर से, व के लिए, निर्वहणकर्ता वरिष्ठ विभागीय बिजली अभियंता/ख़रखाव/हैदराबाद द्वारा तत्संबंधित निम्न निविदाओं की बंद तिथि 09/10/2024 के 15.00 बजे तक ई-निविदाएं आमंत्रित हैं। बोलीदाताओं द्वारा अपने मूल/संशोधित बोलियों को तत्संबंधित बंद तिथि एवं समय तक ही प्रस्तुत कर सकते हैं। इस निविदा के प्रति मैन्युएल आफर्स अमान्य हैं तथा इस मामले में मैन्युएल आफर्स की प्रस्तुती पर उसे नजरअंदाज किया जायेगा।

क्रम सं.1. कार्य विवरणः निविदा सं. 22-पीए-24-25-सीनि. डीईई-एम-एचवायबीः हैदराबाद डिवीजनः हैदराबाद डिवीजनः 1)मसाईपेट(एमइ) पर नये गूड्स शेड्स का विकास कार्य-बिजली व्यवस्था 2) दुपाडू(डीयुयु) पर नये गूड्स शेड्स का विकास कार्य-बिजली व्यवस्था 3)जीओसी पर वैकल्पिक कंट्रोल आफिस को बसाने या एकामडेट करने के लिए, रिकार्ड रूम (3 री मंजिल) का विस्तार करना-बिजली व्यवस्था। अनुमानित मूल्य(रु.) 1,42,41,286/-, पूर्व धरोहर राशिः रू. 2,21,200/-, पूरा करने की अवधिः 12 महिने, बंद करने की तिथिः 09-10-2024

वेबसाइट विवरण::www.ireps.gov.in

निविदा के विस्तृत विवरण को देखने से संबंधित नोटिस बोर्ड स्थानः वरिष्ठ विभागीय बिजली अभियंता का कार्यालय/रखरखाव/हैदराबाद, हैदराबाद भवन, सिकंदराबाद-500071

वरिष्ठ विभागीय बिजली अभियंता, हैदराबाद

PUB/0913
ई-निविदा सं. -इएलएस-बीजेडए-इटीएन-12-2024-25, दि.04-10-2024

भारत के राष्ट्रपति की ओर से व के लिए, अधोहस्ताक्षरी द्वारा निम्न कार्यों हेतु दि. 04-10-2024 के 15.00 बजे तक ई-निविदा आमंत्रित है।

क्रम सं.1. निविदा सं.-बी/इ.221/टीआरएस/आरसी/513 ई-निविदा सं.इएलएस-बीजेडए-इटीएन-12-2024-25 दि.12-09-2024 कार्य विवरण- कार्य का नामः इएलएस/बीजेडए पर तत्संबंधित सभी सेक्शन्स तथा परिसरों के सीसीटीवी केमेरास की आपूर्ति, इंस्टाल्रेशन, टेस्टिन्ग व कमीशनींग कार्य। पूरा करने की अवधिः 09 महिने, निविदा मूल्य रु.16,13,591/-. पूर्व धरोहर राशिः रु.32,300/-, /निविदा दस्तावेज का मूल्य रु. शून्य, निविदा बंद करने की तिथि व समयः 04-10-2024 के 15.00 बजे

1.भावी निविदाकर्ताओं को सलाह दी जाती है कि, तत्संबंधित किसी भी निविदा के परिवर्तनों/शुध्दिपत्रों को नोट करने के लिए, निविदा बंद करने की तिथि से पहले वेबसाइटःwww.ireps.gov.in देखें।

वरिष्ठ विभागीय बिजली अभियंता/टीआरएस/इएलएस/विजयवाडा

PUB/0914
निविदा सूचना सं.- 12-एमइसीएच-इपीपीएफएस-टीपीटीवाय-24-25, दि.12-09-2024

भारत के राष्ट्रपति की ओर से व के लिए, चीफ वर्कशाप मैनेजर, कैरेज रिपेअर शाप, तिरुपति, दक्षिण मध्य रेलवे द्वारा आईआरइपीएस के माध्यम से, निम्न कार्यों हेतु प्रतिष्ठित ठेकेदारों से खुली निविदा आमंत्रित हैं।

क्रम सं.1. निविदा सं. 12-एमइसीएच-इपीपीएफएस-टीपीटीवाय-24-25, दि.12-09-2024, कार्य विवरणः गुंटकल, विजयवाडा व गुंटूर डिवीजन कोचिंग डिपों के एलएचबी कोचेस में खराब या डिफेक्टिव इपीपीएफएस/पीएफएस सिस्टम की मरम्मत करना। अनुमानित मूल्य रु. 23,95,120.00(रु.तेईस लाख, पिचानवे हजार, एकसौ बीस मात्र) बोली सुरक्षा राशिः रु. 47,900.00, निविदा प्रपत्र मूल्य रु. शून्य(कृपया निम्न नोट 1 को रिफर करें), पूरा करने की अवधिः कार्य के प्रारंभ की तिथि से लेकर 02 महिने

नोटः जीसीसी -2022 के पैरा नं.3(पार्ट-I) नुसार, सभी निविदादाताओं को ई-निविदा प्रपत्र निःशुल्क दिये जायेंगे। अतः निविदा दस्तावेज में निविदा दस्तावेज मूल्य का उल्लेख नही किया गया है।

क्रम सं. 1, कार्य विवरणः निविदा पेटी को बंद करने की तिथिः व समयः 04-10-2024 के 11.00 बजे

A1171
चीफ वर्कशाप मैनेजर, सीआरएस, तिरुपति

निविदा शर्तों/अधिक जानकारी तथा निविदा दस्तावेजों की डाउनलोडिंग के लिए कृपया हमारे वेबसाइटःhttps://www.ireps.gov.in अथवा www.scr.indianrailways.gov.in देखें।

जन कल्याणकारी : भगवान गणेश

गणेश चतुर्थी का पर्व पूरे उल्लास , उमंग और उत्साह से मनाया जाता है . यह प्रमुख त्योहारों में से एक है . भगवान श्री गणेश के आगमन से 10 दिनों तक आनंद छाया रहता है . बडी श्रद्धा ,खुशी और हर्षोल्लास के साथ इसे मनाया जाता है . सिद्धी और बुद्धी के देवता हैं . किसी भी शुभ कार्य के पहले उनकी आराधना की जाती है . सभी देवी देवताओं में उनका रूप स्वरूप मोहक और विलक्षण है . उनकी शारीरिक संरचना सब से भिन्न है जिसका हर भाग मानव जीवन के लिये संदेश प्रद है . वह ज्ञान ,प्रगति और बुद्धी के देवता हैं . यह ज्ञान का युग है जिसमें तकनालाजी , तर्क ज्ञान और तथ्यों को वरीयता दी जाती है . ऐसे देवता हैं जिनके नाम के साथ ही "गण " जुडा है अर्थात गणपति जन मानस के देवता हैं बुद्धिजीवियों , कारोबारियों और लेखकों आदि के प्रमुख देवता माने गये . उनको मंगल मूर्ती कहा गया क्योंकि वह विघ्न हर्ता , समृद्धिदाता और वैभवदाता हैं .

शास्त्रों के अनुसार जहां भी अमंगल होता है उसको दूर करने में अग्रणी रहते हैं .अतः किसी भी प्रकार के अमंगल से बचने के लिये प्रवेश द्वार पर उनकी मूर्ति को लगाया जाता है . सभी दिशाओं के स्वामी होने के कारण इनका हर दिशा में नियंत्रण होता है .अध्यात्म में ऊं, स्वस्तिक , और गणेश जी को शुभंकर माना गया . किसी भी कार्य को करने के लिये सूझ बूझ ,योजना , दूर दृष्टि और कुशल लीडरशिप की ज़रूरत होती है जिसके लिये बुद्धि और चिंतन पहले होता है अतः गणेश बुद्धि के देवता हैं .आज बुराइयां ,मनो विकार , और निगेटिविटी तेज़ी से फैल रही है . इससे शारीरिक ,मानसिक तथा चिंतन का स्वास्थ्य गडबडा गया है डिप्रेशन जिसे कोई पहले जानता तक नहीं था तेज़ी से बड रहा है तब उनके हाथ में लिया अंकुश बताता है कि मानसिक बीमारियों का संहार करो मन में पनप रही बुराइयों , चुगलियों , निंदाओं और विश्वासघाती सोच का नाश करो इन पर अंकुश लगाओ अन्यथा रोगी बन जाओगे .गणेश जी की स्तुति मनुष्य के मन , चिंतन और मनन को मज़बूत बनाती है . इसलिये उन्हें विघ्नेश कहा गया .

गणेश जी एक दंत है जिसका अर्थ है एकाग्रता या कौंसंट्रेशन . रोचक प्रसंग है महाभारत को भगवान गणेश ने स्वयं लिखा वेद व्यास ने गणेश से संपर्क किया ताकि वे महाकाव्य की कहानी को उसी तरह लिख सकें जैसा वे उन्हें सुनाते हैं .शर्त यह थी कि व्यास को इसे बिना रुके सुनाना होगा और गणेश जी इसे एक बार में लिखेंगे .वह कहानी लिखते गये इस दौरान एक समय ऐसा आया कि लिखते लिखते कलम टूट गयी और उस समय उनके पास कोई और कलम नहीं थी वेद व्यास कहानी सुनाना बंद नहीं कर सकते थे क्यों कि उनके लिये शर्त पहले से ही तय थी और गणेश जी अपनी एकाग्रता को भंग नहीं करना चाहते थे बिना समय बर्बाद किये उन्होंने अपना एक दांत तोड कर उसे कलम बना लिया और बिना किसी रुकावट के महाकाव्य को लिखना जारी रखा . गणेश और व्यास ने मिल इसे पूरा किया . इसकी सीख बताती है कि किसी भी काम को पूरा करने के लिये एकाग्रचित्त ,अनुशासित ,और दृढ संकल्प का होना ज़रूरी है तभी सफलता मिलेगी .इसलिये उनकी पूजा में कागज़ ,कलम और दवात को रखा जाता है .

उनका उपर उठा हुआ हाथ रक्षा का प्रतीक है अर्थात घबराओ मत मैं तुम्हारे साथ हूं और उनका झुका हुआ हाथ जिसमें हथेली बाहर की ओर है उसका मतलब है अनंत दान और साथ ही आगे झुकने का निमंत्रण देना इसका अर्थ है कि सभी को मिट्टी में मिल जाना है ज्ञानवान इतने हैं कि अपनी परम दिव्यता को शब्दों के बजाए प्रतीकों के रूप में प्रदर्शित किया . जीवन के गूढ रहस्यों को उनके माध्यम से प्रस्तुत किया .क्या यह अजीब नहीं है कि हाथी के शीष वाले भगवान छोटे से मूषक वाहन पर चलते हैं ! इसका गहरा रहस्य है कि एक चूहा उन रस्सियों को कुतर काट कर फेंक देता है जो अज्ञानतावश बुराइयों के जाल में

फंसे हुए हैं सोचिये ! कितनी दिव्य और महान सोच है .जीवन एक यात्रा है और इसमें हर उन कांटों , बाधाओं , और दुष्टों से बच कर चलना है जो सफर में बाधक बन सकते हो बढाओं रोड्ब्लाक्स बनते हैं . इस पर सुंदर दोहा है " जय गणेश मति दायका ,मंगल कीजै काज \ सब विघ्नों को दूर कर , कृपा करें महाराज\\ गणपति गजेंद्र वदन हैं .भगवान शंकर ने कुपित हो उनका मस्तक काट दिया और प्रसन्न होने पर हाथी का मस्तक जोड दिया ऐसा ऐतिहासिक वर्णन है हाथी का मस्तक लगाने का तात्पर्य यही है कि अपने ज्ञान को जितना बडा बुद्धि (विचार शक्ति) का प्रधान केंद्र है जो आपके विकास में साधक हो सकती है . इस सृष्टि की रचना कर गणेश जी अनेक रूपों में व्यक्त हुए आदिपुरुष , अक्षर , अनंत और असीम आदि शास्त्रों के अनुसार यह जगत भगवान गणेश का ही विराट स्वरूप है .इसलिये उनको गणाध्यक्ष कहा गया .मूल रूप से उनको जल का देवता माना गया जो जल से प्रकट हो उसी में विसर्जित होते हैं . मनुष्य के शरीर में 65% जल ही तो है .जल जीवन है कि परिकल्पना को सार्थक करते हैं .

शास्त्रानुसार उनकी पूजा 64 देवताओं की पूजा के समान है क्यों कि वह सर्वसिद्धियों के दाता हैं . कहा भी गया " ऊं नमो सिद्धि विनायकाय सर्व कार्य कर्त्रे सर्व विघ्न प्रशमनाय सर्व राज्य वश्यकरणाय सर्वजन सर्व स्त्री पुरुष आकर्षणाय श्री ऊं स्वाहा " अर्थात सिद्धि विनायक का अर्थ है उपलब्धि ,ज्ञान ,प्रगति . हे सद्बुद्धि और खुशी को प्रदान करने वाले भगवान आप सभी बाधाओं को दूर कर संभव बनाते हैं आपने ब्रह्मांड में सभी को मंत्र मुग्ध किया आप सभी महिलाओं और पुरुषों के भगवान हैं"

उनका एक नाम " गज कर्ण" है उनके कान सूप की तरह हैं और सूप का स्वभाव है कि वह सार सार को ग्रहण कर लेता है और कूडे करकट को उडा देता है . बडे कानों से यह संदेश मिलता है कि सब की सुनो लेकिन अपनी बुद्धि से उनको कार्यांवित करो .

यह पर्सनालिटी डेवलेपमेंट का दौर है इसका सबसे अच्छा उदाहरण ग़णेश हैं जिन्होंने अपने रूप स्वरूप से लोक हित , लोक व्यवहार ,और लोक कल्याण की सीख दी . उनको हमेशा खुश रहने वाले देवता के रूप में माना गया .परिस्थिति कैसी भी हो खुद को खुश रखें इससे मुश्किल वक्त भी आसानी से कट जाएगा . व्यक्ति की इससे प्रोडक्टिविटी बड्ती है और मन शांत रहता है . आज जब लोग हंसना ,मुस्कुराना और प्रसन्न रहना भूल रहे हैं तब ग़णेश जी की सीख बहुत मायने रखती है . मन शांत रहेगा तभी आप बडे डिसीशन ले सकते हैं . जितना प्यार नंदी बैल से करते उतना मूषक से अर्थात कभी छोटे बडे का भेद मत करो . सभी को बराबर का सम्मान दो . उनसे धैर्य (पेशेंस) को सीखना चाहिये . प्रोफेशनल और पर्सनल लाइफ़ में धैर्य न हो तो जीवन में कई नुकसान उठाने पडते हैं .

ज़रा सी बात पर परेशान और बौरान होने व आपा खोने की प्रवृत्ति बड रही है तब धैर्य का होना ज़रूरी है . धैर्य क्रोध को नियंत्रित करने की कुंजी है .धैर्य मनुष्य को बेहतर बनाने में मदद करता है . गणेश जी को सभी देवताओं की शक्तियां प्राप्त है . इसके बावजूद उनके पास अपनी खुद की शक्तियां भी हैं . इसलिये वह जहां हैं वहां शक्ति और समृद्धि का वास माना गया . उनके 12 प्रमुख नाम हैं सुमुख , एकदंत , कपिल ,गजकर्ण ,लंबोदर , विकट ,विघ्न विनाशक , विनायक ,धूम्रकेतु , गणाध्यक्ष , भाल चंद्र , और गजानन . धरती ,आकाश और पाताल तीनों पर उनका राज है .

ऐसे दुर्दांत राक्षस हुए जिन्होंने ईश्वर से वरदान ले उनका दुरुपयोग किया तब उनका नाश कर उनको पाताल भेज दिया . माता पिता को परमात्मा तुल्य माना . एक बार देवी पार्वती ने अपने दोनों पुत्रों से कहा जो भी इस सृष्टि की पहले यात्रा कर पूरी करेगा उसे फल मिलेगा .इसे सुन कार्तिकेय अपने वाहन मोर पर यात्रा पर चले गये .वहीं गणेश ने अपने माता पिता शिव पार्वती की परिक्रमा कर उनको ही अपनी दुनिया माना इससे प्रसन्न हो उनको कर्म फल मिला और वह विद्या के देवता कहे गये .सोचियें ! माता पिता से कितना अटूट लगाव और आदर है . और आज ?वास्तव मे संस्कार और संस्कृति को भुलाने की भारी भूल हो रही है जिसे सुधारने और रिवाइव करने की ज़रूरत है .

गणेश जी की विवेकशीलता , विनयशीलता और विहंगमदृष्टि को देख माता सरस्वती और लक्ष्मी जी ने उनको अपने समीप स्थान दिया . सन 1863 में लोकमान्य तिलक ने गणेश पूजन को सार्वजनिक रूप में शुरु किया ताकि अंग्रेज़ी शासन के विरुद्ध जनता एक हो और उनको उखाड फेंके. वही हुआ . किसी शायर ने खूब कहा " गणेश की ज्योति से नूर मिलता है \ सबके दिलों को सुरूर मिलता है / जो भी जाता गणेश के द्वार / कुछ न कुछ उन्हें ज़रूर मिलता है // इसलिये वह जन कल्याणकारी भगवान हैं .

काव्य कुंज

हम सब की एक हो भाषा

हरि प्रकाश मारू

हम सब की एक हो
भाषा सारे हिंदुस्तान में ।
पढे हिन्दी, कहें हिन्दी ,
हिन्दी में सब काम हो ।
कार्यालयों के बाहर भीतर
हिन्दी में ही नाम हो ।
हम सब की एक हो
भाषा सारे हिंदुस्तान में ।
बैंकों और बाजारों में हिन्दी मे ही बात हो ।
जज साहब और बाबू लोग का हिन्दी में ही काम हो।
पाठशाला में अध्यापक भी हिन्दी में व्याख्यान करें ।
विद्यार्थी भी पठन-पाठन में हिन्दी का ही ज्ञान करें ।
सरल सुंदर सीधी भाषा जन-जन को स्वीकार हो ।
हिन्दी को बढ़ावा देने पर सम्मान और पुरस्कार हो ।
दुखः है कि लोग इसपर राजनीति भी करते हैं ।
खुशी है कि सोशल मीडिया पर इसका उपयोग करते हैं ।
बलिहारी है टीवी चैनल जिनसे हिन्दी का विस्तार हुआ ।
टीवी डिबेट और समाचारों से हिन्दी का प्रचार हुआ ।
चौदह सितम्बर एक दिन सारे जहाँ की रानी हैं ।
बाकी पूरे साल भर ठंडे बस्ते की सुहानी हैं ।
मीठास भरी वैज्ञानिक भाषा मेरे हिंदुस्तान की ।
फूले-फले विकसित हो यह, कोशिश रहे जी-जान की ।
प्रांतीय भाषा से बैर नहीं, उनका भी विकास हो ।
राज-काज की एक हो भाषा हम सब का प्रयास हो ।
विश्व पटल पर चमकेगी यह विश्वास हमारा है ।
जन–जन बोले, हर-जन बोले, यह प्रयास हमारा है ।
हम सब की एक हो भाषा सारे हिंदुस्तान में ।

हिंदी को बनाएं राष्ट्रभाषा

संजीव ठाकुर, रायपुर

हिंदी को बनाएं राष्ट्रभाषा।
जीवन हमारी हिंदी भाषा,
हिंदी है एक विविध
विशाल ज्ञान की भाषा,
आओ बनाएं इसे राष्ट्रभाषा।
हिंदी भाषा स्वाभिमान और अभिमान है,
हिंदी राष्ट्र का वैभवशाली गौरव गान है।
हिंदी देश की गंगा -जमुनाई स्वाभिमान है,
हिंदी पर न्योछावर हर दिल और जान है।
हिंदी भारत के माथे की चमकती बिंदिया है।
हिंद देश में बहती पवित्र गंगा नदिया है।
हिंदी पर आओ शीश झुकाए,करें नमन,
हिंदी ही है लताएं, फूल, बगिया और चमन।
हिंदी से ही पाया स्वतंत्र भारत हमारा,
हिंदी ने ही किया शीश ऊंचा हमारा।
हिंदी भाषा भोली इतनी विशाल है,
हिंदी भाषा अर्वाचीन बेमिसाल है।
हिंदी असंख्य हृदयों पर करती राज,
हिंदी से सफल है देश का काम-काज।
हिंदी के पूर्ण प्रयोग की ले शपथ।
हिंदी हो सर्व विश्वव्यापी
जैसी हो मां भारती की आज्ञा।
आओ मिलकर बनाएं इसे
विश्व ज्ञान की विशाल भाषा,
बनाए इसे देश की राष्ट्रभाषा।
जय हिंदी, जय भारत।
हिंदी भाषा अमर रहे।

जय गणनाथाय

कुमुद बाला, हैदराबाद

जय गणेशाय ,
जय गणाध्यक्षाय , जय धीमहि
जय विघ्नहराय ,
जय शुभाध्यक्षाय , जय धीमहि
एकदंत , लम्बोदराय ,
कृपानिधान सुख दीजिए
कठिन जीवनाय हेतु , सौम्य रूप पथ दीजिए
विपदा हरो हे हेरंबाय , ज्ञान तत्व दीजिए
धर्म मित्र बन नित्य चलूँ , वो मार्ग रम्य दीजिए
जय विश्वरूपाय , जय वक्रतुंडाय , जय धीमहि
जय सूमुखाय , जय विघ्नहर्ताय , जय धीमहि
शुभ और लाभ संग रिद्धि तथा सिद्धि का साथ है
मनोगणपति का , ज्ञानरीढ़ पर धरा हाथ है
चक्षु की विराट ज्योति के , वे त्रैलोक्य नाथ हैं
विस्तृत मन में रही विनम्रता , सदा अपने माथ है
जय प्रसहनाय , जय महोदराय , जय धीमहि
जय दुर्मुखाय , जय सुरानंदाय , जय धीमहि
अपूर्णता को पूर्णता का , लक्ष्य दीजिए
हृदय की पंच विकृतियाँ , शीघ्र दूर कीजिए
हो मन मस्तिष्क निर्मल , वर दीजिए शम्बराय
निकष पर खरी हो बुद्धि , नंदन उपाय कीजिए
जय सुरूपाय , जय भालचन्द्राय , जय धीमहि
जय अलंपटाय , जय धृतोत्पलाय ,जय धीमहि
जय गणनाथाय !!

जय गणपति

जे गंगाधर 'गंध' जियागुडा,हैदराबाद

जय गणपति हे गणराज,
सुधारो हमारे बिगड़े काज।
एकदन्त हे लंबोदर महाराज,
विघन हारी विनायक देवराज।
पधारो हमारे अंगना में देवाधिदेव,
रक्षा करो हमारी संकटों से सदैव।
विधर्मियों का उत्ताप मचा है चारों ओर,
अबलाओं पर हमले होने लगे है घनघोर।
हे गणनायक गणाधिपति देवों के देव,
ये नराधमों अमानवीय दैत्य बन बैठे मानव।
ना मंदिर सुरक्षित है ना गौ और हमारी भगनि,
ध्वंस-विध्वंस हो रहा है भीषण कांड अग्नि।
हे बुद्धि के दाता, हमें सद्बुद्धि करो प्रदान,
हे विश्व विधाता, हो विश्व में शांति दो वरदान।

दहेज़

डॉ डी डी देसाई

हाँ...मुझे भी दहेज़ लेना हैं।
माँ बाप ने खून पसीना सींचा हैं..मुझ में
हाथों के झूले में माँ ने
केशों की डोर बाँधी थी।
खेतों में बैलों संग जोते गए थे
बापू...कभी,
कभी पानी तो कभी पेट पर अंबिल बाँधी थी।
हट्टाकाट्टा नौजवान बना हूँ....
सरकारी नौकरी में स्थायी बना हूँ।
हाँ...दहेज़ लेना तो बनता हैं...।
मेरी बहनों की शादी में.....
सोने के जेवरात.. चाँदी का कलश दिया था.
हजारों तस्तारियों में भोज परोसा था...।
मेहमान नवाजी में कोई कमी न थी,
घर से चौराहे तक शामियाना लगा था..।
आज भी बापू की पगडी...
साहूकार के यहाँ गिरवी पड़ी हैं।
हाँ...मुझे भी दहेज़ लेना हैं।
चेहरे की सुंदरता.. मेरे किस काम की..?
तुम मन की सुंदरता...दहेज़ में लाना।
चमचमाती कार...मेरे किस काम की..?
घर परिवार से तुम संस्कार लाना।
प्रेम और सहनशिलता माँ से उधार लाना,
हौसला और इज्जत पिता से आशीर्वाद में लाना।
भाई बहनों से तुम बचपन के खिलौने लाना।
तुम्हारे अश्कों को चौखट में ही रहने दो..
तुम्हारे अधूरे सपने पलकों में सजाये लाना।
सिक्कों से भरी हतेली...मेरे किस काम की...?
मेरे महल को घर बनाने का हुनर लेती आना।
हाँ.. मुझे भी दहेज़ लेना हैं...
पिता को कर्जे में डुबा कर..
उनके आंसूओं का कारण बन कर
ये शानो शौकत मेरे किस काम की..?
उनकी आँखों में सुकून छोड़ आना।
माथे पर चमकता सिंदूर...दहेज़ में लाना।

जिन पर लुटा चुका..

दर्शन सिंह हैदराबाद

दिन हो या रात, चौबीसों घंटे दौड़ते चला गया
चाहिए हीरे,मोतियों की थैलियां,
छींके से लटकता चला गया
आओ बंधु!
बैठो कभी, बहुत थक गए होगे
कुछ हमारी सुनो,कुछ तुम्हारी सुनाओ
गड्ढों में धस गए होगे
संध्या हुई,आंगन में खाट बिछा दिया
जिन पर लूटा चुका था मैं दुनिया की दौलते
उन वारिसों ने मुझे कफ़न नाप कर दिया
कंधे पर भारी भरकम बोझ, सफ़र तय करना है
आंधी तूफानों का बवंडर, आग से खेलना है
कोई क्या कहता है,मुझे नहीं सुननी है
उदेश्य स्पष्ट, कंकरीली राहें चुननी है
निगी छांव पालदा रिहा,जीवित चुनवा दिया
जिन पर लूटा चुका...
चाहे साम दाम दण्ड भेद, संग्रहित तो करनी है
अंतिम प्रहर सुख चैन,बाधाएं कटिली चुननी है
ठीक है क्लिष्ट चुनौतियां,स्वीकार तो करनी होगी
कदम कदम पर वज्रपात, झेलनी तो पड़ेगी
आंखें खोली, स्तब्ध, मझधार में ढकेल दिया
जिन पर लूटा चुका...

हिन्दी है मंजिल

गीता अग्रवाल हैदराबाद

दिलवाले हिन्दुस्तानियों का हिन्दी है दिल।
हिन्दुस्तान मिट्टी में हिंदी , हिन्दी है मंजिल।।
करने जतन, जो विश्व में हिंदी प्रचलित हो,
अंग्रेजी के साथ विश्व में हिंदी सुसज्जित हो,
हर जगह अंग्रेजी की ही हो रही वाह वाही,
अपने देश में अपनी भाषा हो गयी परायी,
हिन्दी को दबाकर न बनना बुझ दिल ।
दिलवाले हिन्दुस्तानियों का हिन्दी है दिल।
हर प्रदेश की अपनी भाषा हिन्दी से टकराई,
अपनों बीच सिमटी हिन्दी, मन ही मन घबराई,
प्रांतीय भाषा संग हिन्दी को अपनाना
मना हिंदी दिवस , न होगी हिन्दी की अगुवाई ,
हिंदी की शहनाई, बजानी सबको संग मिल।
दिलवाले हिन्दुस्तानियों का हिन्दी है दिल।
हिंदी वैज्ञानिक भाषा हिंदी का ऊंचा स्थान,
हिंदी है सुसभ्य भाषा, करे सबका सम्मान,
सोए को जगाना है, हिंदी को अपनाना है
हिंदी उच्चतम साहित्य,देता जग को ज्ञान,
हिंदी की बगिया में हर भारतीय रहे खिल-खिल।
दिलवाले हिन्दुस्तानियों का हिन्दी है दिल।
हिन्दुस्तान मिट्टी में हिंदी , हिन्दी है मंजिल।।

सुधार की शुरुआत खुद से

रेणुका अग्रवाल हैदराबाद

सुधार की शुरुआत कीजिए।
पर खुद से शुरू कीजिए।
भाषण देना अच्छा लगता है।
कर्तव्य निभाना सीखिए।
झूठ न बोलो सच बोलो।
झूठ पे यकीन न कीजिए।
सच बोलना कठिन होगा,
पर सच से कभी न डरिए।
कपट अधर्म छोड़ दो। धर्म से जीवन जीते है।
पापियों को मात देकर के, धर्म की सच सांस लेते है।
बहनों की रक्षा कीजिए। धर्म ध्वजा फहराइए।
सब कन्या को बहना मानो, दृष्टि साफ कीजिए।
शिक्षक की मानो तुम। मां को भी जानो तुम।
समाज मे इज्जत बनी रहे, वही काम पहचानो तुम।
झूठी इज्जत खत्म होगी। फरेबी की जमानत जब्त होगी।
गर वकील काम सही करे, बेगुनाह को न जिल्लत होगी।
मांगने से ख़ुशी नहीं मिलेगी। मेहनत तो करनी पड़ेगी।
यही पसीना पैसा बनेगा। तब सफल ज़िन्दगी होगी।

श्री गणेश महोत्सव

प्रतिमा सिंह हैदराबाद

गौरी का प्यारा सबसे न्यारा,
आज हमारे घर आएंगे।
चौथ चतुर्थी शुभ दिन मंगल,
श्री गणेश जी पधारेंगे ।
चौक पुराओ, आंगन बुहारो,
देहरी पर बंदनवार सजाओ ।
चांदी की थाल, कलश सोने का,
गजमुक्ता का हार ले आओ
आज विघ्नहर्ता घर आएंगे।
ढोल नगाड़े मंगलाचार से,
स्वागत कर ,उनको द्वार पर लायेंगे।
दुग्ध दही चंदन हल्दी से,
उनको स्नान करायेंगे ।
पीत वस्त्र, जनेऊ पीला,
आभूषण से सजाएंगे।
धूप दीप की आरती लेकर उनकी पूजा कर आयेंगे।
विघ्नहर्ता सुखकर्ता इस जग को विघ्नों से मुक्त कराएंगे।

खुशियाँ

टी तारासिंह हैदराबाद

किसी ने क्या खूब कहा है !
खुशियाँ भरपूर मिलती जब
सब अपने अपने सब करीब होते
दिल के सब शिकवे दूर होते
अपना अपना प्यार बाँटते
जब दुःख दर्द होते अपनो के
तो सब मिलझूल कर सहते
इसी का नाम है मोहब्बत
इसी का नाम है अपनापन
दूर रहे पास रहे सब अपनो के करीब रहे
फिर भी हर रोज बातचीत कर लेते जी भरके
यही तो है प्यार का, जिंदगी का फलसफा ।।

दे दिया जीवनदान

रूनू झा, हैदराबाद

मेरे अनुभव का आकाश हो,
मेरी सोच, मेरे विचार हो ।
तुम्हारी देन है प्रेम, करुणा, संवेदना,
एक वरदान है संघर्ष और प्रेरणा ।
तुमने जीवन पथ पर बढ़ना सिखाया,
तुमने ही जीवन में मुसीबतों से लड़ना सिखाया ।
धर्म, दर्शन, शास्त्र, साहित्य का कराया ज्ञान,
तुमने ही कला और संगीत से बनाया जीवन महान ।
जब जिंदगी में कभी भी रही दुविधा और न ले पाती हूँ निर्णय
तब याद आती है तुम्हारी कही बात, "लिखो,सोचो और करो निर्णय ।
तुम न मिलते गुरुवर तो मिलता कोई और
तब भी होते नीले आकाश और पक्षी ।
लोगों के शोरगुल में होती शांति,
लेकिन मुस्कान में ना होती ये कांति ।
लेकिन सच्चाई और ज्ञान से ना होता ऐसा प्रेम,
हर जीव और कमज़ोर से ना कर पाती स्नेह ।
सोच-समझ और विचार का दायरा ,होता संकीर्ण शायद ।
शायद किसी की मदद के लिए ना उठते हाथ,
और शायद ना उठा पाती किसी के लिए आवाज़ ।
स्वार्थ और संकीर्णता में बीत जाता जीवन,
बस ऐसे ही बीत जाता जीवन ।
ये जन्म हुआ सार्थक जो मिला तुम्हारा सानिध्य ,
गुरुवर तुम्हारे जैसा ही मार्गदर्शक मिले हर मनुष्य को

हिसाब

हेमंत सुराना, उदयपुर

खूबसूरत से लम्हों का हिसाब क्या दे,
जो लाजवाब है उसका जवाब क्या दे
बादल समुद्र को पानी का हिसाब क्या दे,
जीने में रह गए लम्हों का हिसाब क्या दे
अच्छे कर्मों का हिसाब कैसे हो,
जख्मो के लेनदेन का हिसाब कैसे हो
तमाम उम्र का हिसाब कैसे हो,
उधर की सांसों का हिसाब कैसे हो
तकलीफो का हिसाब किताब क्या दे,
रिश्तों का हिसाब किताब क्या दे,
मुझ पर उठे सवालों का जवाब क्या दे
हिसाब तो लिया है तूने जिंदगी,
कई सवालों के जवाब अभी भी है बाकी
अब मेरा हिसाब भी कर दे
कर्ज जो चुकाना है उनका,
जिनसे खुशियाँ उधार ली थी,
जिनसे खुशियाँ उधार ली थी ।

एक सवाल?

निकेता पाहुजा

सवाल हो जो चीरहरण का,
जाने सब इतने खामोश क्यों है।
खड़ा किया इक सवाल मैंने
उस पर बवाल क्यों न है।
मर गया ज़मीर या सो गया तुम्हारा अंतर्मन...
क्या मर चुकी है रूह तुम्हारी...
दम तोड़ रही मानवता नीचता पाँव पसार रही,
क्या सोचा है तुमने ए बशर
क्या लेकर जी रहे हो.....
यूँ सवाल क़र लो खुद से..
कहीं तुम ज़िंदा लाश तो नहीं हो.....?
सच में तुम ज़िंदा लाश ही तो हो.....

अनमोल रिश्ते

संजय एम. तराणेकर

आपस में रिश्ते एक स्नेह की जंजीर है।
यह मानो एक डोर है यह एक अंजीर है।
ना तुम साथ रहकर निभा पाए।
ना तुम अलग रहकर जोड़ पाए।
गुजर रही है जिंदगी कब करोगे कोशिश?
क्या? कभी नहीं नमाओगे अपना शीश?
संभलने को तो अभी-भी शेष है।
जान लो तुम अभी-भी विशेष है।
सर झुका कर हाथ ही तो आगे बढ़ाना है।
बस सामने रिश्तों का अनमोल खज़ाना है।

है हिंदी यूं हीन

सत्यवान सौरभ

बोल-तोल बदले सभी,
बदली सबकी चाल ।
परभाषा से देश का,
हाल हुआ बेहाल ।।
जल में रहकर ज्यों सदा,
प्यासी रहती मीन ।
होकर भाषा राज की, है हिंदी यूं हीन ।।
अपनी भाषा साधना, गूढ़ ज्ञान का सार ।
खुद की भाषा से बने, निराकार, साकार ।।
हो जाते हैं हल सभी, यक्ष प्रश्न तब नीत ।
निज भाषा से जब जुड़े, जागे अन्तस प्रीत ।।
अपनी भाषा से करें, अपने यूं आघात ।
हिंदी के उत्थान की, इंग्लिश में हो बात ।।
हिंदी माँ का रूप है, ममता की पहचान ।
हिंदी ने पैदा किये, तुलसी ओ रसखान ।।
मन से चाहे हम अगर, भारत का उत्थान ।
परभाषा को त्यागकर, बांटे हिंदी ज्ञान ।।
भाषा के बिन देश का, होता कब उत्थान ।
बात पते की जो कही, समझे वही सुजान ।।
जिनकी भाषा है नहीं, उनका रुके विकास ।
परभाषा से होत है, हाथों-हाथ विनाश ।।

कर्मो से दूषित हुए लोग

लवली आनंद, बिहार

इस परिवर्तन शील दुनिया
मे रंग बदलते लोग भी है,
देखो तो जरा इन मदहोशो
को इनकी तो कोई भी ओर नही,
क्या करे भरोसा इन मतवालों
का जहाँ हैवानियत में चूर लोग भी है,
सुनी सुनाई जो बात थी पहले
अब वो अखवारों की
सुर्खियों में होर सी है,
ये कैसी बिपदा आन पड़ी
जहाँ अपनो से रूठे लोग भी है,
इन सोशल मीडिया की
हरि बत्तियाँ हर जन के
दुख को छीन गई
होते होंगे हृदय दुख से भरें
पर तस्वीरों में मुस्कुराते लोग भी है,
ये क्यों है मुख पे
छल का मुखौटा क्यों
हर जन ने आत्मा में बिष और
हाथों में खंजर उठा लिया
जहां बहती है पावक नदियाँ
वहां कर्मो से दूषित हुए लोग भी है।।

स्वतंत्र वार्ता
काव्य कुंज ब्लॉग
AGA, Publications, Ltd,
396, Lower Tankbund,
Hyderabad-500080

स्वतंत्र वार्ता साप्ताहिकी
हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टणम

शेख अब्दुल्ला के पूर्वज ब्राह्मण थे!

नवंबर 2008, एक तरफ मुंबई में हुए आतंकी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के संबंधों में तनाव था। वहीं, दूसरी तरफ जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव हो रहे थे। फारूक अब्दुल्ला की नेशनल कॉन्फ्रेंस और कांग्रेस साथ मिलकर चुनाव लड़ रहे थे। 29 दिसंबर को चुनाव परिणामों में 87 सीटों वाली जम्मू-कश्मीर विधानसभा में नेशनल कॉन्फ्रेंस को 28 और कांग्रेस को 17 सीटें मिलीं। फारूक अब्दुल्ला का चौथी बार सीएम बनना तय माना जा रहा था। पार्टी के ज्यादातर सीनियर नेता चाहते थे कि फारूक ही सीएम बनें। फारूक ने दो मौकों पर खुलकर मुख्यमंत्री बनने की महत्वाकांक्षा भी जाहिर की थी। इसी बीच पार्टी में दबी जुबान उमर अब्दुल्ला को सीएम बनाने की मांग उठने लगी। फारूक की बेटी सफिया अपने पिता के मुख्यमंत्री बनने का समर्थन कर रही थीं, जबकि पत्नी मौली अब्दुल्ला बेटे उमर को सीएम बनाने के पक्ष में थीं।

5 जनवरी 2009 को नेशनल कांफ्रेंस पार्टी के नेता सीएम की शपथ लेंगे, लेकिन नाम तय नहीं हो पा रहा था। 4 जनवरी की देर रात तक फारूक विधायकों से मिलते रहे। वह तय नहीं कर पा रहे थे कि खुद मुख्यमंत्री बनें या बेटे को बनाएं। आखिर में उमर को सीएम बनाने के लिए लंदन में रह रही उनकी मां मौली ने मोर्चा संभाला। मौली ने पति से बात करके अगली पीढ़ी के हाथ में सत्ता देने की बात कही, जिसे फारूक ने मान लिया। उमर के नाम पर कांग्रेस प्रमुख सोनिया गांधी भी राजी हो गईं। 5 अगस्त को उमर अब्दुल्ला सीएम पद की शपथ लेने पहुंचे तो वहां पूरा अब्दुल्ला परिवार नजर आया। उनकी मां मौली अब्दुल्ला के साथ उमर की बहनें सफिया और सारा भी वहां मौजूद थीं।

शेख अब्दुल्ला के पूर्वज हिंदू ब्राह्मण थे

शेख अब्दुल्ला परिवार की कहानी की शुरुआत झेलम नदी के किनारे बसे श्रीनगर के सौरा इलाके से होती है। शेख अब्दुल्ला अपनी आत्मकथा 'आतिश-ए-चिनार' में लिखते हैं कि उनके पूर्वज सप्रू गोत्र के कश्मीरी पंडित थे। उनके दादा का नाम बालमुकुंद कौल था। सूफी मीर अब्दुल रशीद बैहाकी से प्रभावित होकर उनके दादा ने इस्लाम अपना लिया। 1905 में शेख अब्दुल्ला के जन्म से 2 हफ्ते पहले ही उनके पिता शेख मोहम्मद इब्राहिम का इंतकाल हो चुका था। शेख 9 भाई-बहनों में सबसे छोटे थे। बचपन में वे पढ़ाई के साथ-साथ अपनी पुश्तैनी शॉल की दुकान पर भी काम करते थे। हायर स्टडीज के लिए शेख अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी गए और 25 साल की उम्र में मास्टर्स करके वापस घाटी लौट आए। कश्मीर में डोगरा शासन के समय कश्मीरी मुस्लिमों के हक लिए वे सक्रिय हो गए। इसी दौरान 1932 में चौधरी गुलाम अब्बास के नेतृत्व में एक नई पार्टी बनी, जिसका नाम 'मुस्लिम कॉन्फ्रेंस' रखा गया। शेख इस पार्टी से जुड़े और अपनी लीडरशिप स्किल से फेमस हो गए।

नेहरू को बना लिया अपना राजनीतिक गुरु!

1937 में खान अब्दुल गफ्फार खान ने शेख को उस वक्त के कांग्रेस अध्यक्ष जवाहरलाल नेहरू से मिलवाया। शेख ने बताया कि धर्म को लेकर उनके विचार नेहरू से मिलने के बाद ही बदले। 24 जून 1938 को शेख ने मुस्लिम कॉन्फ्रेंस का नाम बदलकर 'नेशनल कॉन्फ्रेंस' कर दिया। नाम बदलने पर पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर के प्रमुख रहे चौधरी गुलाम अब्बास ने कहा था कि शेख अब्दुल्ला अब हमारे हाथ से निकल चुके हैं और उन्होंने नेहरू को अपना राजनीतिक गुरु मान लिया है। इसके साथ ही चौधरी गुलाम अब्बास और मीरवाइज यूसुफ शाह जैसे मुस्लिम नेताओं ने नेशनल कॉन्फ्रेंस से बगावत कर दी। नेशनल कॉन्फ्रेंस में मुस्लिमों के अलावा अन्य धर्म के लोग भी जुड़ने लगे। 1947 में जब देश बंटवारे के दौर से गुजर रहा था, तब कश्मीर के सामने ये सवाल था कि किस ओर रुख किया जाए। विलय पर आधिकारिक फैसला लेने के लिए जम्मू-कश्मीर के महाराजा हरि सिंह और शेख अब्दुल्ला ने दिल्ली से कुछ समय मांगा था। हालांकि, शेख अब्दुल्ला दो-राष्ट्र सिद्धांत के जरिए पाकिस्तान बनने का विरोध कर रहे थे। इसकी वजह से वे कट्टर मुस्लिम नेताओं के निशाने पर आ गए। शेख ने धर्मनिरपेक्ष भारत के भीतर जम्मू-कश्मीर के लिए एक विशेष दर्जे का समर्थन किया था। ऐसा कहा जाता है कि शेख अब्दुल्ला जम्मू-कश्मीर के पाकिस्तान में विलय का दो वजहों से विरोध कर रहे थे। पहली- नेहरू के साथ उनकी दोस्ती थी और उन्हें जिन्ना की राजनीति पसंद नहीं थी। दूसरी- उन्हें कश्मीर पर पंजाबी मुस्लिमों के प्रभुत्व का डर था।

नेहरू ने जेल भेज दिया

अक्टूबर 1947 की बात है। भारत या पाकिस्तान में मिलने पर कश्मीर कोई आधिकारिक फैसला करता, इससे पहले ही पाकिस्तानी सेना के समर्थन से कबाइलियों ने कश्मीर पर हमला कर दिया। इसके बाद महाराजा हरि सिंह ने रियासत का विलय भारत में करने का फैसला लिया और अब तक नेहरू के दोस्त बन चुके शेख अब्दुल्ला ने भी इसका समर्थन किया। अब्दुल्ला को प्रधानमंत्री नेहरू दिल्ली और कश्मीर के बीच पुल की तरह मानते थे, इसलिए 1947 में हरि सिंह पर दबाव बनाकर उन्होंने शेख को जम्मू-कश्मीर का प्रधानमंत्री नियुक्त करवा दिया। आजादी के बाद भी राज्य से जुड़ा कोई फैसला लेना होता तो नेहरू, शेख अब्दुल्ला से बात जरूर करते, लेकिन जल्द ही ये सब बदल गया। 31 जुलाई 1953 को नेहरू ने एक नोट शेयर

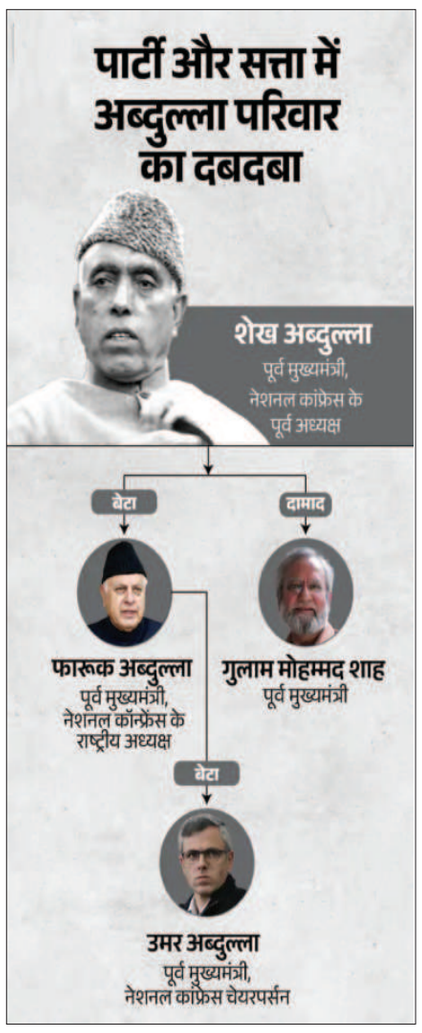

किया, जिसे उनके प्राइवेट सेक्रेटरी एमओ मथाई ने रिकॉर्ड किया था। इस नोट में नेहरू कश्मीर की सदर-ए-रियासत को राज्य में चल रही अनियमितताओं के चलते कुछ लोगों को पद से हटाने के लिए कहते हैं। करीब एक सप्ताह बाद 8 अगस्त 1953 को नेहरू एक पत्र लिखकर कश्मीर के तत्कालीन प्रधानमंत्री शेख अब्दुल्ला को पद से हटाकर बख्शी गुलाम मोहम्मद को उनकी जगह प्रधानमंत्री बनाने की बात कहते हैं।

'द ट्रिब्यून' के एक आर्टिकल में कैबिनेट सचिवालय में पूर्व विशेष सचिव रहे वप्पला बालचंद्रन लिखते हैं कि शेख अब्दुल्ला को प्रधानमंत्री पद से हटाए जाने के पीछे उनकी भारत सरकार विरोधी नीतियां मानी जाती हैं। वे 1947 से 1953 के बीच कई मौकों पर कश्मीर को आजाद देश बनाने की बात भी कह चुके थे। जम्मू-कश्मीर के प्रधानमंत्री पद से हटाए जाने के कुछ देर बाद ही शेख को गुलमर्ग में गिरफ्तार कर लिया गया था।

बहन-बहनोई ने मिलकर गिराई फारूक की सरकार; सीएम की कुर्सी के लिए बाप से भिड़ा बेटा

महाराजा हरि सिंह के बेटे कर्ण सिंह अपनी किताब 'आत्मकथा' में लिखते हैं- जैसे ही शेख को उनकी गिरफ्तारी की सूचना दी गई, तो उन्होंने नमाज पढ़ने और सामान पैक करने के लिए कुछ समय मांगा। उन्हें इसके लिए समय दिया गया तो उन्होंने अपने कमरे में बहुत से दस्तावेज जला दिए। 11 साल जेल में रहने के बाद अप्रैल, 1964 में शेख अब्दुल्ला को रिहा कर दिया गया। तब तक वे कश्मीर की आजादी की मांग एक तरफ रख चुके थे।

नेहरू के निधन पर फूट-फूटकर रोए शेख अब्दुल्ला

27 मई 1964 को जवाहरलाल नेहरू के आदेश पर कश्मीर मसले पर जनरल अयूब खान से बात करने के लिए शेख अब्दुल्ला पाक अधिकृत कश्मीर यानी पीओके पहुंचे। नेहरू की तबीयत उन दिनों ठीक नहीं चल रही थी। इस बातचीत में पाकिस्तान की तरफ से उर्दू के मशहूर शायर हफीज जालंधरी भी शिरकत कर रहे थे। भारतीय प्रेस से बात करते हुए हफीज ने कहा- 'आजादी के बाद भारत को नेहरू जैसे नेता मिले ये सौभाग्य की बात है। हमारा दुर्भाग्य था कि हमने जिन्ना और लियाकत को जल्दी खो दिया। अब नेहरू जाने वाले हैं तो आप भी हमारे ही स्तर पर आने वाले हैं।' इसी दिन दोपहर करीब 2 बजे भारत में केंद्रीय मंत्री सी सुब्रमण्यम ने संसद में आकर नेहरू के निधन की खबर दी। इसकी खबर जब पाकिस्तान पहुंची तो हफीज जालंधरी अपने बयान को लेकर खुद को कोसते नजर आए। जालंधरी को समझाते वक्त शेख अब्दुल्ला उनके गले लगकर खूब रोए। नेहरू के लिए पाकिस्तान असेंबली में शोक व्यक्त किया गया और पाकिस्तान का झंडा शोक में आधा झुकाया गया।

शेख ने बेटे फारूक की ताजपोशी

शेख अब्दुल्ला की बेटी खालिदा उनके काफी करीब थीं, लेकिन जब राजनीतिक विरासत सौंपने की बात आई तो शेख ने बड़े बेटे फारूक को चुना। एसएमएस मेडिकल कॉलेज, जयपुर से एमबीबीएस की पढ़ाई करने के बाद 1965 में फारूक डॉक्टरी की प्रैक्टिस के लिए लंदन चले गए। उन्होंने एक ब्रिटिश महिला से शादी कर वहां की नागरिकता भी ले ली। 1975 में पारिवारिक वजहों से फारूक को कश्मीर लौटना पड़ा। करीब 6 साल बाद शेख अब्दुल्ला ने फारूक को समझाया कि वह पार्टी की जिम्मेदारी एक नौजवान के हाथ में सौंपना चाहते हैं। उन्होंने फारूक से कहा कि राजनीति के जरिए तुम एक डॉक्टर से कहीं ज्यादा देश और लोगों की सेवा कर सकते हो। 1980 में शेख ने श्रीनगर सीट से चुनाव लड़ने के लिए फारूक को टिकट दिया। फारूक श्रीनगर से चुनाव जीत गए। एक साल बाद ही शेख ने पार्टी की जिम्मेदारी फारूक को सौंपने का मन बना लिया। फारूक की ताजपोशी को यादगार बनाने के लिए शेख अब्दुल्ला ने पार्टी के नेताओं की मीटिंग बुलाई।

इस मीटिंग में तय हुआ कि 21 अगस्त 1981 को पार्टी की कमान संभालने से पहले फारूक श्रीनगर में एक रैली निकालेंगे। कार्यकर्ताओं को जिम्मेदारी दी गई कि फारूक के समर्थन में श्रीनगर के हर घर से लोग रैली में शामिल हों। इस दिन लाखों लोग फारूक की रैली में शामिल हुए। शेख अब्दुल्ला ने एक होटल की बालकनी से फूल बरसाकर जुलूस का स्वागत किया। आखिर में शेख अब्दुल्ला ने अध्यक्षीय भाषण देकर अपने बेटे फारूक को पार्टी अध्यक्ष की कमान दी। उन्होंने फारूक की शर्ट पर नेशनल कॉन्फ्रेंस का बैज लगाकर उन्हें पार्टी की विरासत सौंपी।

बेटे-दामाद में हुई सत्ता की खींचतान

सितंबर 1982 में शेख अब्दुल्ला का निधन हो गया। इसके बाद पार्टी और राज्य की सत्ता पर काबिज होने के लिए फारूक अब्दुल्ला और उनकी बहन खालिदा और बहनोई के बीच सियासी जंग छिड़ गई। उस वक्त के राज्यपाल जगमोहन मल्होत्रा लिखते हैं, '1 जुलाई की देर शाम फारूक के बहनोई गुलाम मोहम्मद शाह ने जानकारी भेजी कि 12 विधायकों के एक समूह का उनको समर्थन है। वह फारूक की सरकार से समर्थन वापस लेकर कांग्रेस (आई) के साथ मिलकर सरकार बनाना चाहते हैं। इस वक्त राज्य के कद्दावर नेता देवी दास ठाकुर भी शाह को मुख्यमंत्री बनाना चाह रहे थे।' अगली सुबह जगमोहन ने जब सरकार बर्खास्त करने का पत्र फारूक को दिया तो फारूक ने उनसे विधानमंडल बुलाकर सदन के पटल पर बहुमत का परीक्षण कराने की मांग की। लेकिन उन्होंने सुबह 11 बजे के करीब इंदिरा गांधी से इस मामले पर बात की और हरी झंडी मिलते ही फारूक की सरकार बर्खास्त कर दी। 2 जुलाई की शाम ही कांग्रेस और अन्य के समर्थन से गुलाम मोहम्मद शाह ने जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली।

1996 में नेशनल कॉन्फ्रेंस के प्रचंड बहुमत के साथ सत्ता में लौटने के तुरंत बाद उमर अब्दुल्ला राजनीति में शामिल हो गए। उन्होंने बाद में कहा था, 'मैं अपनी स्कूली शिक्षा के लिए लंबे समय तक बाहर था। 1996 में पार्टी को मिली जीत के बाद ही मैंने राजनीति के बारे में गंभीरता से सोचना शुरू किया। मैं अपने दादा के साथ ईदगाह जरूर गया था, लेकिन कभी किसी राजनीतिक रैली में शामिल नहीं हुआ था। जब मैं छोटा था तो शेख ने कभी राजनीति के बारे में मुझसे बात नहीं की।'

1998 में फारूक ने बेटे उमर को नेशनल कॉन्फ्रेंस से टिकट देकर लोकसभा चुनाव लड़वाया। चुनाव में जीतकर उमर केंद्र में मंत्री बन गए। 2001 में केंद्र की एनडीए सरकार में वे देश के सबसे कम उम्र के विदेश मंत्री बने। हालांकि, 17 महीने बाद ही दिसंबर 2002 में उन्होंने पद से इस्तीफा दे दिया।

2002 में फारूक ने उमर को नेशनल कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंप दी। इसी साल हुए विधानसभा चुनाव में उमर ने गांदरबल विधानसभा सीट से चुनाव लड़ा। परिणाम जारी हुआ तो उमर करीब दो हजार वोट से चुनाव हार गए थे। अपने बेटे और राजनीतिक उत्तराधिकारी उमर की हार के बाद फारूक ने नैतिक हार स्वीकार कर ली। सबसे ज्यादा 28 सीटें जीतने के बावजूद सरकार न बनाने की घोषणा कर दी।

फारूक ने एक इंटरव्यू में बताया कि वह कभी उमर को राजनीति में लाने के पक्ष में नहीं थे। फारूक ने आगे कहा, 'जब मैंने राजनीति में शामिल होने की योजना बनाई तो मेरे पिता (शेख अब्दुल्ला) ने मुझे इससे दूर रहने की सलाह दी थी। उन्होंने मुझसे कहा था कि एक बार जब तुम इस नदी में कूदोगे, तो तुम या तो इस नदी की धार के साथ बहोगे या धारा से लड़ोगे। तुम कभी इससे बाहर नहीं निकल पाओगे।' बकौल फारूक, उन्होंने भी उमर को राजनीति में शामिल न होने की सलाह दी, लेकिन उमर ने भी अपने पिता की बात नहीं मानी और राजनीति में आ गए।

फारूक अब्दुल्ला ने कहा था कि शुरुआत में उनकी पत्नी भी उमर के राजनीति में आने का विरोध करती थीं। जब उन्होंने अपनी पत्नी से कहा कि उनकी तरह एक रोज उमर भी राजनीति में शामिल होना चाह सकते हैं, तो इस पर उनकी पत्नी मौली ने गुस्से में कहा कि यह मेरी मौत के बाद ही संभव होगा। उमर से जब इस बारे में पूछा गया तो उन्होंने हंसते हुए कहा, 'मैंने अपनी मां से इस बारे में पूछा था, लेकिन उनको इस बातचीत के बारे में याद नहीं है।' हालांकि, जब फारूक ने राजनीति में एंट्री की तो पिता शेख ने फूल बरसाकर उनका स्वागत किया। उसी तरह जब बात उमर को मुख्यमंत्री बनाने की आई तो उनकी मां मौली ने ही पति फारूक से बेटे को सीएम बनाने के लिए पैरवी की थी।

ऐसी घटिया करतूत करने वाले कौन हैं?

जूस में पेशाब, थूक, स्पर्म.. आखिर लोगों को हुआ क्या है? ऐसे लोग ही कम्युनिटी को बदनाम करते हैं

गाजियाबाद के लोनी इलाके का इंद्रापुरी कॉलोनी। पुलिस को सूचना मिली कि कुछ लोग एक जूस के दुकानदार की पिटाई कर रहे हैं। सूचना के बाद मौके पर पुलिस पहुंची और दुकानदार को लोगों के गुस्से से बचाया। पता चला कि लोग दुकानदार की बेहद गिरी हुई और घिनौनी हरकत से गुस्से में थे। उस पर आरोप है कि वह जूस में पेशाब मिलाकर बेचता था। पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। दुकान से एक लीटर मानव मूत्र भी बरामद हुआ।

इस तरह की घिनौनी और गिरी हरकतों का ये कोई पहला मामला नहीं है। मोबाइल फोन का जमाना है तो आज लगभग हर हाथ में कैमरा है। इसलिए ऐसी हरकतें सामने आ जाती हैं। इसके अलावा कुछ जगहों पर सीसीटीवी कैमरे की 'तीसरी आंख' में भी कुछ जाहिलों की ऐसी नीच हरकतें कैद हो जाती हैं। पिछले एक हफ्ते में ही ऐसे कई वीडियो सामने आए हैं जिसमें खाने-पीने के सामानों में कोई जाहिल थूक रहा है तो कोई पेशाब कर रहा है। 10 सितंबर को बागपत में ढाबे में थूक लगाकर रोटी बनाने का वीडियो वायरल हुआ। 12 सितंबर में सहारनपुर के छुटमलपुर में भी एक लोकप्रिय ढाबे में थूक बनाकर रोटी बनाने का वीडियो वायरल हुआ।

सोशल मीडिया के दौर में ऐसी घिनौनी हरकतों के वीडियो जबतक सामने आते रहते हैं। कभी पीने के पानी में थूककर बोतल भरने का वीडियो तो कभी थूक-थूककर पिज्जा बनाने का। कभी शेविंग और ब्लीचिंग कराने वाले शख्स के चेहरे पर थूकने का वीडियो तो कभी गोलगप्पे के पानी में पेशाब का वीडियो। ऐसी नीच हरकतें करने वाले किसमें क्या मिला रहे हैं, हम सोच भी नहीं सकते। अभी इसी साल तो हस्तमैथुन कर फालूदा में स्पर्म मिलाकर बेचने का वीडियो सामने आया था। कुछ साल पहले घरेलू नौकरानी का खाना बनाते वक्त उसमें अपना पेशाब मिलाने का वीडियो वायरल हुआ था। ऐसी हरकतें करने वालों को आखिर क्या कहा जाए? ये क्यों ऐसा कर रहे हैं? इस तरह की नीच हरकतों से आखिर उन्हें किसी तरह की खुशी या संतुष्टि मिलती होगी? ऐसी हरकतों की वजह क्या है? ये कौन से लोग हैं? ये तमाम सवाल परेशान करते हैं। घटिया करतूत करने वाले किसी अन्य ग्रह से नहीं आए हैं बल्कि हमारे-आपके ही बीच हैं। इस तरह की गिरी हुई हरकतों की प्रेरणा उन्हें चाहे जहां से मिल रही हो, जिससे भी मिल रही हो सच सिर्फ यही है कि वे मानसिक रूप से बीमार हैं। वे मनोविकृति के शिकार हैं। ऐसे जाहिल अपनी नीच हरकतों से एक पूरी कम्यूनिटी को बदनाम कर रहे हैं।

संयोग से ऐसी हरकतें करने वालों में ज्यादातर एक खास वर्ग से आते हैं। इसी वजह से कुछ लोग इन हरकतों को 'थूक जिहाद' जैसे शब्द दे रहे। लेकिन मनोविकृति वाले ऐसे कुछ लोगों की शर्मनाक हरकतों का सामान्यीकरण करके पूरे के पूरे समुदाय पर सवाल उठाना गलत होगा। ऐसी हरकत करने वालों की न तो जाति देखी जानी चाहिए, न धर्म, न भाषा...ऐसी हरकतें करके खुशी पाना मनोविकृति है। कुछ लोगों की हरकतों का सरलीकरण कर किसी समुदाय को ही निशाने पर लेने की मानसिकता ठीक नहीं है। साथ में, इस तरह की हरकतों के बचाव में 'वो ये नहीं कर रहा था, वो तो वो कर रहा था, वो दुआ कर रहा था, तो वो फलां रस्म का पालन कर रहा था...' जैसी दलीलें भी उतनी ही गलत है। इन नीच हरकतों का कोई बचाव नहीं हो सकता, इन्हें किसी भी तरह से ठीक नहीं ठहराया जा सकता फिर भी कभी कोई सिलेब्रिटी तो कभी कोई सच का स्वयंभू उद्घोषक इन हरकतों के बचाव का भी कुतर्क गढ़ने की हिमाकत कर ही देते हैं। मनोविकृति का बचाव करना अपने आप में एक मनोविकार है।

हरियाणा में रिजनल पार्टियां खतरे में

'चौटाला को वोट दिया। दुष्यंत को भी वोट दिया, लेकिन देवी लाल जैसा इंसान नहीं मिलेगा। ये सब आज भी देवी लाल के नाम पर वोट मांगते हैं। इन्होंने झूठे वादे करके सरकार तो बनाई, लेकिन एक भी पूरा नहीं किया। दुष्यंत चौटाला ने कोई काम नहीं किया है। इस बार वो उचाना से 2 हजार वोट भी नहीं पाएंगे।' हरियाणा के जींद जिले के उचाना खुर्द गांव के रहने वाले कुलदीप पूनिया जननायक जनता पार्टी से नाखुश हैं। वे कहते हैं, 'इस बार तो यहां कांग्रेस की ही सरकार बनेगी।' डिप्टी सीएम रहे दुष्यंत चौटाला के विधानसभा क्षेत्र उचाना में दुकान चलाने वाले सुनील कुमार भी जेजेपी की वादाखिलाफी से नाराज हैं।

हरियाणा में विधानसभा की 90 सीटों पर एक फेज में 5 अक्टूबर को वोट डाले जाएंगे। इस चुनाव में पहली बार रीजनल पार्टियां अपना वजूद की लड़ाई लड़ रही हैं। 2018 में इंडियन नेशनल लोकदल से निकली जेजेपी 2019 के विधानसभा चुनाव में किंगमेकर बनी थी। दुष्यंत चौटाला उपमुख्यमंत्री बने, लेकिन लोकसभा चुनाव तक हालात बदल गए। 2024 के लोकसभा चुनाव में जेजेपी को 1% से भी कम वोट मिले। विधानसभा चुनाव आते-आते पार्टी के 10 में से 7 विधायक पार्टी छोड़कर जा चुके हैं। वहीं, इनेलो को महज 1.74% वोट मिले। साल 2000 में इनेलो ने 47 सीटें जीत कर सरकार बनाई थी। कांग्रेस 21 और बीजेपी 6 सीट पर ही सिमट गई थी। हरियाणा विधानसभा चुनाव को लेकर रीजनल पार्टियों की क्या तैयारी है। आखिर क्यों इन पार्टियों का अस्तित्व खतरे में दिख रहा है। उन्हें लेकर जनता क्या सोचती है? इन सवालों के जवाब तलाशने के लिए दैनिक भास्कर ने इन पार्टियों के समर्थकों, लीडर्स, पॉलिटिकल एक्सपर्ट्स, सीनियर जर्नलिस्ट और आम लोगों से बात की। जींद जिले के उचाना कलां विधानसभा क्षेत्र में दुकान के बाहर बैठे कुलदीप पूनिया दुष्यंत चौटाला और जेजेपी से नाराज हैं। यहीं दुकान चलाने वाले सुनील कुमार कहते हैं, 'रीजनल पार्टियों की स्थिति ठीक नहीं है। दुष्यंत बीजेपी के खिलाफ चुनाव लड़कर आए और फिर उसी के साथ गठबंधन कर लिया। किसान आंदोलन में भी वो बीजेपी के साथ खड़े थे, इसलिए उनका विरोध ज्यादा है।'

सुनील बताते हैं कि इस इलाके में इनेलो का भी माहौल

साथ खड़े होते तो उनकी सरकार बनती। अभय सिंह उनके सामने फेल थे।' मंडी में ही चाय की दुकान लगाने वाले मणिराम कहते हैं, 'एकतरफा मुकाबला नहीं है। हो सकता है कि इस बार कांग्रेस या बीजेपी जीत जाए। पारिवारिक फूट के कारण इनेलो-जेजेपी हाशिए पर चली गईं । जींद जिले के उचाना खुर्द गांव में ज्यादातर लोगों ने जेजेपी और इनेलो के खत्म होने की बात कही, लेकिन यहां मिले बोबली हलवाई का दावा है कि मिठाई तो दुष्यंत चौटाला ही खाएंगे। वहीं, चौधरी देवीलाल के परिवार से 80 के दशक से जुड़े रामफल कहते हैं कि मेरा परिवार देवीलाल को वोट देता रहा है। पहले इनेलो को देते थे, अब जेजेपी को। वे कहते हैं, 'लोकसभा से विधानसभा में जेजेपी की स्थिति सुधरेगी। धीरे-धीरे लोगों की नाराजगी भी खत्म होगी।' हालांकि वे ये भी मानते हैं कि अगर इन्हें खुद को बचाना है तो दोनों पार्टियों को साथ आना पड़ेगा। सिरसा के ऐलनाबाद में मिले बुजुर्ग भरत लाल हाथ जोड़कर मोदी को वोट देने की बात करते हैं। देवीलाल से लेकर ओम प्रकाश चौटाला को वोट दे चुके भरत लाल कहते हैं कि अभय सिंह चौटाला को वोट नहीं देंगे, क्योंकि मोदी सरकार बढ़िया है। घर बैठे ही पेंशन मिल रही है।' जेजेपी के मौजूदा हालत पर पार्टी के चीफ मीडिया कोऑर्डिनेटर और प्रवक्ता दीपकमल सहारण से बात की। वे इनेलो और जेजेपी के इस हाल के लिए बीजेपी-कांग्रेस को जिम्मेदार बताते हैं। उन्होंने देश को एनडीए और इंडिया ब्लॉक में बांटने का आरोप लगाया। दीपकमल कहते हैं, 'दोनों ही पार्टियां किसी गठबंधन का हिस्सा नहीं थीं, इसलिए वोटों का नुकसान हुआ। हरियाणा के इतिहास में रीजनल पार्टियों का इतना कम वोट शेयर कभी नहीं रहा। इस बार हम 20-25 सीटें जीतकर दूसरे या तीसरे नंबर की पार्टी बनकर सरकार में पहुंचने की उम्मीद कर रहे हैं।'

इनेलो के मीडिया कोऑर्डिनेटर राकेश सिहाग पार्टी की कमजोर हालत की वजह बताते हुए कहते हैं, 'कुछ गद्दारों के कारण पार्टी टूट गई। एक बार डेंट पड़ने पर पार्टी को नुकसान होता ही है। हालांकि, अब वो स्थिति नहीं रही। हमारा वोटर जेजेपी या दूसरी तरफ चला गया था, वो लौट आया है। इस बार हम 25 से ज्यादा सीटें जीतेंगे और सत्ता में वापसी करेंगे।' 2019 के विधानसभा चुनाव में जेजेपी का वोट शेयर 14.80% था। वो 10 सीटें जीतकर किंगमेकर की भूमिका में थी। वहीं, इनेलो सिर्फ एक ऐलनाबाद सीट ही जीत सकी थी। यहां से पार्टी के इकलौते विधायक अभय सिंह चौटाला हैं।

नहीं बचा है। वे कहते हैं, 'चौधरी देवीलाल बढ़िया इंसान थे। उन्होंने जो काम किए, उसके लिए लोग उन्हें हमेशा याद रखेंगे। उनकी अगली पीढ़ी ने बंगले बनाने के सिवाय कुछ नहीं किया, इसलिए आज वो पतन की ओर हैं। दोनों साथ मिलकर चलेंगे, तभी उनकी वापसी की उम्मीद है।' इसी गांव में मिले बुजुर्ग रामचंद्र कहते हैं, 'इनेलो-जेजेपी तो खत्म हो गए। हरियाणा में इनके पास टिकट देने के लिए लोग नहीं बचे। अगले 10-20 साल में कुछ बदल जाए तो अलग बात है। अब दुष्यंत चौटाला के पास तो आपको एक आदमी खड़ा नहीं मिलेगा।' वहीं, रामदिया कहते हैं, 'दुष्यंत ने तो बस पैसा कमाया है। सारे विभाग उसके हाथ में थे।' सिरसा के ऐलनाबाद विधानसभा में अनाज मंडी के बाहर फलों का ठेला लगाने वाले सुरेंद्र कुमार कहते हैं, 'जब चौटाला साहब की सरकार थी, तब सरकारी अस्पताल, जनता कॉलेज, मणिराम कॉलेज बनवाया। चौटाला साहब जेल चले गए तो परिवार अलग हो गया, इसलिए सीटें कम हो गईं।' 'अबकी बार आधा परिवार उनके साथ है, 30 से ज्यादा सीटें जीतेंगे और सरकार बनाएंगे। जेजेपी एक सीट नहीं पाएगी, क्योंकि उसने काम ही ऐसा किया है। अगर दुष्यंत जमींदारों के

भगवान विश्वकर्मा पूजा

ब्रह्मांड के पहले इंजीनियर कहे जाने वाले भगवान विश्वकर्मा की जयंती हर साल 17 सितंबर को मनाई जाती है। इस दिन हर कारखाने, फैक्ट्री और दुकानों में उनकी धूमधाम से पूजा की जाती है। इस दिन औजार से जुड़ा काम करने वाले कुशल मजदूर और कामगार औजार का प्रयोग नहीं करते बल्कि उनकी पूजा करके उन्हें एक दिन के आराम देते हैं। इस दिन फैक्ट्रियों में सभी मशीनों और कलपुर्जों की पूजा की जाती है। तकनीकी क्षेत्र से जुड़े लोग विश्वकर्माजी को अपना भगवान मानते हैं और उनकी पूजा करते हैं। आइए आपको बताते हैं कि इस साल विश्वकर्मा पूजा 16 को या फिर 17 सितंबर को है।

विश्वकर्मा पूजा 2024 तिथि

विश्वकर्मा पूजा को लेकर लोगों के बीच में इस बार कन्फ्यूजन की स्थिति बनी हुई है। हर साल भाद्रपद मास में सूर्य जब सिंह राशि से निकलकर कन्या राशि में प्रवेश करते हैं तो विश्वकर्मा पूजा मनाई जाती है। हर साल 17 सितंबर को यह पूजा की जाती है। लेकिन इस बार लोगों के मन में 16 सितंबर को लेकर कन्फ्यूजन बना हुआ है। इस बार सूर्य 16 सितंबर की शाम को 7 बजकर 29 मिनट पर कन्या राशि में प्रवेश कर रहे हैं। इसलिए विश्वकर्मा जयंती अगले दिन यानी कि 17 सितंबर को मनाई जाएगी। बिहार, बंगाल और झारखंड के साथ ही उत्तर प्रदेश में विश्वकर्मा पूजा विधिविधान से की जाती है। इस दिन कुशल कामगार जैसे कारपेंटर, बिजली के उपकरणों को सही करने वाले या फिर अन्य तकनीकी क्षेत्र से जुड़े लोग भी भगवान विश्वकर्मा को भोग प्रसाद चढ़ाते हैं और उनकी पूजा करते हैं।

विश्वकर्मा पूजा का महत्व

विश्वकर्मा पूजा न सिर्फ मजदूरों और कामगारों बल्कि हम सभी के लिए भी जरूरी मानी जाती है। आज के युग में हर व्यक्ति मोबाइल और लैपटॉप के बिना अपना काम नहीं कर पाता है। इसलिए ये भी एक प्रकार की मशीन हैं और इनका प्रयोग करने वाले सभी लोगों के लिए भी विश्वकर्मा पूजा का महत्व बहुत खास माना गया है। इसलिए विश्वकर्मा पूजा के दिन हम सभी को पूजा करनी चाहिए और साथ ही यह भी प्रार्थना करनी चाहिए कि हम जिस भी मशीन से जुड़ा काम करते हैं साल भर वह मशीन ठीक से सुचारू रूप से कार्य करे, ताकि हमारे रोजाना के काम में बाधा न आएं।

विश्वकर्मा पूजाविधि विश्वकर्मा पूजा के दिन सुबह सबसे पहले मशीनों की खूब अच्छे से साफ-सफाई करें और उसके बाद इन मशीनों को ऑफ करके इनकी पूजा करें। भगवान विश्वकर्मा की तस्वीर या मूर्ति को मशीनों के पास में रखकर साथ में दोनों की पूजा करनी चाहिए। इस दिन मशीनों के साथ-साथ आपको अपने वाहनों की पूजा करनी चाहिए। इस दिन घर की सभी छोटी-बड़ी मशीनों की पूजा करनी चाहिए और साथ ही आपको भोग व प्रसाद भी इस दिन चढ़ाना चाहिए। विश्वकर्मा पूजा के दिन आपको घर की बनी शुद्ध चीजों का ही भोग लगाना चाहिए। इनमें मोतीचूर के लड्डू, मीठी बूंदी, चावल की खीर या हलवे का भोग आप लगा सकते हैं। इस दिन कुछ स्थानों पर भंडारे का भी आयोजन किया जाता है। विश्वकर्मा पूजा के दिन गरीब और जरूरतमंद लोगों को रोजाना में प्रयोग आने वाली वस्तुओं का दान भी करना चाहिए।

जलते दीपक में डाल दें काला तिल

साढ़ेसाती और ढैय्या से मिलेगी राहत!

हिन्दू धर्म में हर दिन किसी ना किसी देवी या देवता को समर्पित है और उस विशेष दिन ही उसकी पूजा की जाती है। बात करें शनिवार की तो यह दिन शनि देव की पूजा के लिए सर्वश्रेष्ठ माना गया है। हिन्दू धर्म में शनि देव को न्याय का देवता माना जाता है और इसलिए शनिवार के दिन उनकी आराधना से जीवन में सुख-समृद्धि आती है और किसी तरह की परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता।

लेकिन, ज्योतिषियों की मानें तो जब किसी व्यक्ति की कुंडली में शनि दोष होता है तो वह व्यक्ति कभी सफल नहीं होता और हमेशा ही परेशानियों से घिरा रहता है। हालांकि, एक छोटे से उपाय से आप इस दोषे से छुटकारा पा सकते हैं। यह कि आपको दीपक जलाते समय इसमें एक खास चीज डाल दें।

दीपक में डालें काला तिल

यदि आप शनि की साढ़ेसाती या शनि दोष से घिरे हुए हैं और इसे दूर करना चाहते हैं तो आप शनिवार के दिन शाम को दीपक जलाते समय उसमें काला तिल डालें। ऐसा करने से शनि देव प्रसन्न होते हैं। साथ ही इससे शनि देव की कुदृष्टि, दोष या अशुभ प्रभाव को कम किया जा सकता है। साथ ही इससे आपके परिवार में व्याप्त किसी भी प्रकार की नकारात्मकता से भी मुक्ति मिल सकती है।

दीपक जलाते समय इन बातों का ध्यान रखें

– सूर्यास्त के बाद स्नान कर साफ वस्त्र पहन कर दीपक जलाएं।

– दीपक में सिर्फ तिल का तेल ही उपयोग करें।

– दीपक में 7, 14, 21 या 28 काले तिल डालें।

– दीपक को घर के पूजा स्थान पर रखें।

– आप चाहें शनि मंदिर में भी दीप प्रतिमा के सामने रख सकते हैं।

– दीपक जलाकर शनि देव का मंत्र जाप करें या शनि चालीसा का पाठ करें।

आचार्य भिक्षु श्रमण परंपरा के महान संवाहक थे

निर्मला बैद

आचार्य भिक्षु को मेरा शत-शत अभिनंदन और धन्य पुण्य उस मर-भूमि का भी अभिनन्दन है ।सत्य क्रांतिका पुर-जोर जोश था जिनकी चेतना में स्वा ऐसे महा-मानव की पदार्पण भी चन्दन है। तेरापंथ के प्रवर्तक आचार्य भिक्षु श्रमण परंपरा के महान संवाहक थे। उनका जन्म वि.स. 1783 आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी को कंटालिया में हुआ। प्रारम्भ से ही वे असाधारण प्रतिभा के धनी थे। जे युग संस्थापक क्रांतदृष्टा आत्म संगीत के उद्गाता एवं सत्य के महान अनुसंधाता थे। उनके जीवन का सर्वस्व ही सत्य था। जहां भी जब भी उन्हें सत्य की जिस रूप में अनुभूति हुई, दुनिया के सामने उन्होंने ममता पूर्वक उस सत्य की अभिव्यक्ति है। उनके सार्वभौमिक अहिंसात्मक घोष से धार्मिक जगत में एक नई क्रांति का जन्म हुआ। हम सचमुच सौभाग्यशाली हैं, जिसको महामना आचार्य भिक्षु जैसे अध्यान बेला, नीति निपुण अनुशास्ता मिले और सत्य के बंद दरवाजों को खोलने वाला जैन तेरापंथ धर्म संघ मिला। आचार्य भिक्षु एक विलक्षण नक्षत्रशाली पुरुष के अखण्ड अनन्त पुण्यों के पुर्वज़ थे। कुशल संगठक और मर्यादा पुरुषी पर उन्होंने अपनी पैनी दूर दृष्टि से जिन ठोस, मर्यादाओं की नींव पर तेरापंथ धर्म प्रासाद की आधार शिला रखी। उसी का, पुण्य प्रसाद आज लाखों लोगो को मिल रहा है उन्हीं के प्रताप से तेरापंथ धर्म संघ शब्द आचार विचार की साधना में अग्रसर होता हुआ सम्पूर्ण देश में आध्यात्मिक साधना और नैतिक मूल्यों की पुनर्जागरण की अलख जगा रहा है।

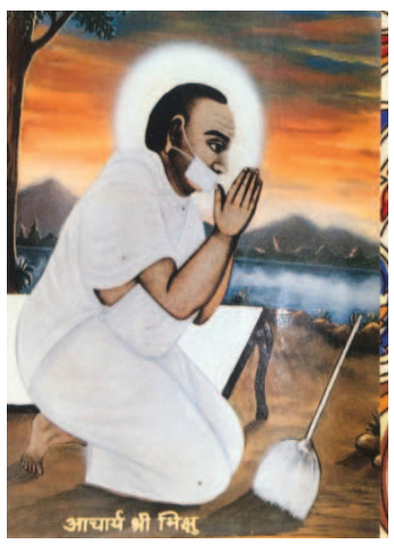

आचार्य श्री एक महान कवि और महान साहित्यकार थे उन्होंने राजस्थानी भाषा मै बगमग मस्तीस हजार पयों की रचना कर जैन साहित्यकों समृद्ध किया आचार्य भिक्षु के साहित्य को पढ़कर आधुनिक विद्वान रहे हंगल और काष्ट की तुला से तोलते हैं। आचार्य भिक्षु जब तक जिये ज्योति बनकर जिये उनके जीवन का हर पृष्ठ पुरुषार्थ की गौरवमयी गाथाओं से भरा पड़ा है। सिरियारी में तेरस को समाधि मरण को प्राप्त किया उस समय उनकी उल 77 वर्ष की थी।

कर लें मात्र यह एक उपाय तो ग्रह चलेंगे शुभ चाल

इस संसार में किसी ने भी जन्म लिया है, खुशियां और दुख उसके हिस्से में आता ही हैं। हर समस्या के पीछे कोई न कोई ग्रह नक्षत्र ही जिम्मेदार होते हैं। वैदिक ज्योतिष में अनेकों उपाय हर ग्रह और समस्या के लिए बताये गये हैं। आजकल की भागदौड़ भरी जिंदगी में लोगों के पास समय की बहुत कमी है। कुछ उपाय ऐसे हैं, जो काफी खर्चीले हैं, जिस वजह से लोग उन्हें नहीं कर पाते हैं। हमारे जीवन में कुछ भी अच्छा या बुरा सबकुछ किसी ना किसी ग्रह नक्षत्र के संयोग से ही होता है। अगर आप सही समय पर सक्रिय ग्रह का उपाय कर लेते हैं तो आपको उसकी दशा में कष्ट नहीं होते बल्कि लाभ हो जाता है।

सूर्य : दैनिक रूप से गुड़ खाकर पानी पीकर कोई भी कार्य आरंभ करें एवं बहते जल में रविवार के दिन 250 ग्राम गुड़ प्रवाहित करें।

चंद्रमा: सोमवार को सफेद कपड़े में मिश्री बांधकर जल में प्रवाहित करें। कांच के गिलास में दूध, पानी पीने से परेहज करें। 28 वर्ष के बाद विवाह का निर्णय लें। लाल रंग की रूमाल हमेशा जेब में रखें।

मंगल : हनुमान चालीसा या बजरंगबाण का रोज पाठ करें, 400 ग्राम चावल दूध से धोकर 14 दिन तक बहते जल में प्रवाहित करें।

बुध: घर की पूर्व दिशा में लाल झंडा लगायें, 100 साबुत मूंग बहते जल में प्रवाहित करें।

गुरु: बहते चने की दाल, 7 हल्दी गांठ एवं केसर प्रवाहित करें। माथे पर केसर का तिलक लगायें।

शुक्र: बहते हुए जल में शुद्ध घी बहाएं, लाल रंग के गाय की सेवा करें, 800 ग्राम जिमीकंद मंदिर में दान करें।

शनि : भगवान भैरव की आराधना करें, शनिदेव का 1 किलो सरसों के तेल से अभिषेक करें, 43 दिन तक लगातार शनि मंदिर में जाकर नीले पुष्प चढ़ायें। शनिवार को 800 ग्राम दूध, उड़द जल में प्रवाहित करें।

राहु: तांबे के बर्तन में गुड़, गेहूं भरकर बहते जल में प्रवाहित करें। 400 ग्राम धनिया, नारियल जल में प्रवाहित करें।

केतु : काले व सफेद तिल बहते हुए जल में प्रवाहित करें। 43 दिन तक मंदिर अथवा धर्म स्थान में केला दान करें।

रविवार के दिन भगवान सूर्यदेव की कृपा पाने के लिए करें ये आसान उपाय

सप्ताह का रविवार का दिन भगवान सूर्य देव को समर्पित है। आज के दिन प्रातःकाल सूर्य देव को जल अर्पित करने से निरोगी काया और सौभाग्य का आशीर्वाद मिलता है। जो भी व्यक्ति रोजाना भगवान भास्कर को जल अर्पित नहीं कर पा रहा है वो रविवार को अर्घ्य दे सकते हैं। इसके अलावा सूर्य देव की कृपा पाने के लिए रविवार के दिन इन उपायों को जरूर करें। इन उपाय को करने से सभी समस्याओं का समाधान मिल जाता है।

1. अगर आपके दाम्पत्य जीवन से खुशियाँ कहीं गुम हो गई हैं तो उन खुशियों को जीवन में फिर से वापस लाने के लिये आज के दिन रात को सोते समय दो कपूर की टिकिया और थोड़ी-सी रोली लेकर अपने सिरहाने के पास रख लें। अगले दिन सुबह उठकर कपूर की टिकिया को घर के बाहर जला दें और रोली को एक पानी भरे गिलास या लोटे में डालकर सूर्य भगवान को अर्पित कर दें।

2. अगर आप समाज में अपना मान-सम्मान बढ़ाना चाहते हैं तो आज के दिन शिलाजीत सामने रखकर चौबीस बार गायत्री मंत्र का जप करें। मंत्र इस प्रकार है ॐ भूर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात॥ इस प्रकार गायत्री मंत्र का जप करने के बाद शिलाजीत को लेकर 42 दिनों में थोड़ा-थोड़ा करके उसका सेवन करें।

3. जो लोग अपने पिता से आर्थिक सहयोग पाना चाहते हैं, उन्हें आज के दिन सूर्यदेव के इस तंत्रोक्त मंत्र का 11 बार जप करें। मंत्र इस प्रकार है-'ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।' मंत्र जप के बाद अपने पिता के पैर छूकर आशीर्वाद लेना चाहिए।

4. जो लोग नौकरी में हैं और अपना मनपसन्द जगह पर ट्रांसफर करवाना चाहते हैं, वो आज के दिन सूर्यदेव को बाजरे के दाने मिला हुआ जल अर्पित करने के साथ ही उनके इस मंत्र का 11 बार जप भी करें। मंत्र इस प्रकार है-'ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः'।

5. अगर आप करियर में अच्छी पॉजिशन पाना चाहते हैं तो आज के दिन अपने पिता को एक मुट्ठी चावल भेंट करने के साथ ही सूर्यदेव के इस मंत्र का 21 बार जप करें। मंत्र इस प्रकार है- 'ऊँ घृणिः सूर्याय नमः।'

6. अगर आप बेहतर स्वास्थ्य के साथ ही लंबी आयु भी पाना चाहते हैं तो आज आपको सूर्यदेव के इस मंत्र का 108 बार जप करना चाहिए। सूर्यदेव का मंत्र इस प्रकार है- ऊँ घृणिः सूर्याय नमः।

7. अगर कुछ दिनों से पिता के साथ आपके रिश्ते में कड़वाहट बनी हुई है तो आज आपको सूर्यदेव के इस मंत्र का 51 बार जप करना चाहिए। मंत्र इस प्रकार है-ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।

8. अगर आप अपने आस-पास पॉजिटिव ऊर्जा में बढ़ोतरी करना चाहते हैं तो आज आपको सूर्यदेव को जल अर्पित करना चाहिए और जल अर्पित करते समय सूर्यदेव के इस मंत्र का जप करना चाहिए। मंत्र इस प्रकार है-ऊँ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्याय श्रीं।

9. अगर आपको लगता है कि किसी तीसरे व्यक्ति की वजह से आपकी तरक्की में रुकावटें आ रही है तो आज आपको एक लोटा जल में एक लाल फूल डालकर सूर्यदेव को अर्पित करना चाहिए।

10. अगर आप अपने वैवाहिक जीवन में विश्वास कायम करना चाहते हैं तो आज आपको मंदिर में गुड़ से बनी कोई चीज़ दान करनी चाहिए। अगर आप गुड़ से बनी किसी चीज़ का दान न कर पायें, तो केवल गुड़ का दान करें।

11. अगर आप किसी भी तरह की आंख संबंधी परेशानी से बचे रहना चाहते हैं, तो आज आप स्नान आदि के बाद आपको सूर्यदेव को प्रणाम करके आदित्य हृदय स्रोत का पाठ करना चाहिए।

चंद्र देव बदलेंगे अपना स्थान

इस राशि के जातकों के बनेंगे बिगड़े कार्य

चंद्र देव बदल रहे हैं स्थान

ज्योतिष गणना के अनुसार आगामी 14 सितंबर को चंद्र देव अपना राशि परिवर्तन करने जा रहे हैं। 14 सितंबर को चंद्र देव धनु राशि से निकलकर मकर राशि में गोचर करेंगे। जिसका प्रभाव दो राशि के जातक पर सकारात्मक तौर पर रहेगा।

मकर राशि में करेंगे गोचर

ज्योतिष गणना के अनुसार 14 सितंबर को रात्रि 3:23 पर चंद्र देव धनु राशि से निकलकर मकर राशि में गोचर करेंगे इस राशि में चंद्रदेव दो दिनों तक रहेंगे। इसके बाद 16 सितंबर को सुबह 5:44 पर मकर से निकलकर कुंभ राशि में गोचर करेंगे चंद्र देव के राशि परिवर्तन से धनु राशि और मीन राशि के जातक को सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे।

मीन राशि के बनेंगे बिगड़े कार्य

मीन राशि के जातक के लिए यह गोचर बहुत महत्वपूर्ण सभी प्रकार की बिगड़ी कार्य बन सकते हैं। वहां घर अथवा भूमि की खरीदारी कर सकते हैं। विदेश यात्रा की योग बन रहे हैं। व्यापार में वृद्धि होगी और रुका हुआ धन वापस मिलेगा।

धनु राशि के परिवार में रहेगा खुशियों का माहौल

धनु राशि के जातक के लिए यह समय सर्वाधिक लाभ देने वाला होगा धन का लाभ होगा परिवार में खुशियों का माहौल रहेगा। आमदनी में बढ़ोतरी होगी शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े लोगों को सफलता प्राप्त हो सकती है। धार्मिक यात्रा की योग बन रहे हैं।

साल 2026 की ईद पर शाहरुख का कब्जा

बेटी सुहाना के साथ बड़े परदे पर नजर आएंगे किंग खान

फिल्मों की रिलीज के लिए निर्माताओं की नजरें त्योहारों की छुट्टियों पर होती हैं। ईद पर अक्सर सलमान खान की फिल्मों की कब्जा होता रहा है। अगले साल की ईद पर भी सलमान ने अपनी फिल्म सिकंदर के रिलीज की घोषणा कर दी है। लेकिन साल 2026 की ईद पर उनका नहीं, बल्कि शाह रुख खान का कब्जा होगा।

बेटी सुहाना के साथ दिखेंगे शाहरुख खान

शाहरुख और उनकी बेटी सुहाना खान अभिनीत फिल्म किंग साल 2026 की ईद पर रिलीज होगी। फिल्म से जुड़े सूत्रों के अनुसार निर्माता सिद्धार्थ आनंद और शाह रुख दोनों ही चाहते हैं कि फिल्म ईद पर आए। चेन्नई एक्सप्रेस फिल्म के बाद से ईद शाह रुख की कोई फिल्म रिलीज नहीं हुई है। ऐसे में फिल्म को सही समय पर खत्म करने के लिए इसकी शूटिंग अगले साल जनवरी से शुरू हो जाएगी।

भंसाली की 'लव एंड वॉर'

नई रिलीज डेट हुई अनाउंस

2024 की शुरुआत में अपनी ऑफिशियल अनाउंसमेंट के बाद से 'लव एंड वॉर' मच अवेटेड अपकमिंग फिल्मों में से एक बन गई है। संजय लीला भंसाली की इस बड़ी फिल्म में रणबीर कपूर, आलिया भट्ट और विक्की कौशल जैसे शानदार कलाकार अपनी दमदार एक्टिंग से दर्शको का दिल जीतते नजर आएंगे। पहले ये फिल्म क्रिसमस 2025 पर रिलीज़ होने वाली थी हालांकि इसे पोस्टपोन्ड कर दिया गया था। वहीं अब मेकर्स ने फिल्म की नई रिलीज डेट अनाउंस कर दी गई है।

कब रिलीज होगी 'लव एंड वॉर'

संजय लीला भंसाली की अगली बड़ी फिल्म' लव एंड वॉर' को लेकर फैंस काफी एक्साइटेड हैं और इसके सिनेमाघरों में रिलीज होने का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। वहीं अब मेकर्स ने इस फिल्म की रिलीज डेट अनाउंस कर दी है। जिसके मुताबिक इस फिल्म की रिलीज के लिए अभी और इंतजार करना पड़ेगा। नई रिलीज डेट के मुताबिक रणबीर कपूर, आलिया भट्ट और विक्की कौशल स्टारर ये मच अवेटेड फिल्म 20 मार्च 2026 को सिनेमाघरों में दस्तक देगी। खास बात ये है कि 'लव एंड वॉर' की रिलीज के समय कई बड़े त्योहार जैसे रामनवमी, रमजान और गुड़ी पड़वा पड़ रहे हैं जिससे छुट्टियों का पूरा फायदा इस फिल्म को मिल सकेगा।

जनवरी 2024 में की गई थी 'लव एंड वॉर' की अनाउंसमेंट

इस फिल्म की ऑफिशियल अनाउंसमेंट जनवरी 2024 में की गई थी। इंस्टाग्राम पर ओरिजनल मैसेज में लिखा गया था, हम आपके लिए लाए हैं संजय लीला भंसाली की एपिक सागा 'लव एंड वॉर।' मूवीज क्रिसमस 2025 में मिलते हैं। इस पर रणबीर कपूर, आलिया भट्ट और विक्की कौशल के हस्ताक्षर भी शामिल थे।

ट्विंकल ने दूसरा बच्चा करने से पहले

अक्षय के सामने रखी थी ये शर्त

अक्षय कुमार और ट्विंकल खन्ना ने 2001 में शादी की थी। दोनों दो बच्चों के माता-पिता हैं। बेटे का नाम आरव और बेटी का नाम नितारा है। आरव उनका पहला बच्चा है। ट्विंकल खन्ना को उनके बेबाक अंदाज के लिए जाना जाता हैं। एक बार उन्होंने अपने निजी जीवन से जुड़ा एक दिलचस्प किस्सा सुनाते हुए कहा था कि उन्होंन दूसरा बच्चा करने से पहले अक्षय कुमार के सामने एक शर्त रखी थी।

फिल्म निर्माता और निर्देशक करण जौहर के चैट शो कॉफी विद करण में आने वाले कलाकार अपने जीवन से जुड़े मजेदार खुलासे करते हैं। इस शो के पांचवे सीजन के एक एपिसोड में अक्षय कुमार और ट्विंकल खन्ना नजर आए थे। इस दौरान ट्विंकल ने बताया था कि उन्होंने अपने पति अक्षय कुमार से कह रखा था कि अगर वो समझदारी वाली फिल्मों में काम नहीं करेंगे तो वो दूसरा बच्चा नहीं करेंगी।

ट्विंकल खन्ना के इस खुलासे के बाद करण जौहर ने कहा था कि वाकई में जब अक्षय कुमार को दूसरा बच्चा चाहिए था तो उन्होंने अपनी फिल्मों का चयन बदल दिया था। वहीं, अक्षय कुमार ने मजाकिया अंदाज में करण से कहा था कि आप ट्विंकल को बढ़िया ढंग से जानते हो। मैं बता नहीं सकता कि मुझे रोजाना किन-किन चीजों से गुजरना

पड़ता है। ट्विंकल खन्ना ने अपने दूसरे बच्चे के रूप में साल 2012 में नितारा को जन्म दिया था। अगर उस समय के आस-पास की अक्षय की फिल्मों पर नजर डालें तो हम पाते हैं कि उन्होंने एयरलिफ्ट, टॉयलेट: एक प्रेम कथा, ओह माय गॉड और पैडमैन समेत कई अच्छे विषयों वाली फिल्मों में काम किया था।

सलमान ने इंजरी के चलते एक्शन सींस से लिया ब्रेक

रश्मिका मंदाना के साथ 'सिकंदर' के गाने की शूटिंग की

सलमान खान और रश्मिका मंदाना इन दिनों अपनी अपकमिंग फिल्म 'सिकंदर' की शूटिंग में बिजी हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक हाल ही में दोनों ने एक फेस्टिव सॉन्ग शूट किया है। इस गाने को प्रीतम ने कंपोज किया है। मिडडे की रिपोर्ट के मुताबिक, रिब इंजरी की वजह से सलमान ने इन दिनों इंटेंस एक्शन सीक्वेंस से ब्रेक लिया हुआ है। इसी बीच उन्होंने रश्मिका के साथ डांस नंबर की शूटिंग की है। इसे मुंबई के स्लम एरिया धारावी के बैकड्रॉप पर फिल्माया गया है। गाने में 200 बैकग्राउंड डांसर्स ने हिस्सा लिया है। इसकी शूटिंग गोरेगांव के एसआरपीएफ ग्राउंड पर बनाए गए सेट पर की गई है।

यूरोप में शूट होंगे रोमांटिक गाने

फिल्म डायरेक्टर एआर मुर्गदोस ने इस गाने की शूटिंग लगभग निपटा ली है और अब वो अगले हफ्ते से एक्शन सीक्वेंस की शूटिंग पर फोकस करेंगे। फिल्म की शूटिंग अक्टूबर तक मुंबई में होगी। इसके बाद दो रोमांटिक गानों की शूटिंग के लिए क्रू यूरोप जाएगा। फिल्म में सलमान और रश्मिका मंदाना के अलावा प्रतीक बब्बर और सत्यराज भी नजर आएंगे। यह अगले साल ईद पर रिलीज होगी। रिपोर्ट्स की मानें तो सिकंदर के बाद सलमान जल्द ही कमल हासन के साथ भी एक फिल्म पर काम शुरू करेंगे। सलमान की आखिरी रिलीज 'टाइगर 3' थी।

एसएलबी की नई फिल्म का श्रद्धा कपूर की इस हिट फिल्म से है खास कनेक्शन!

ला रहे हैं रोमांटिक फिल्म

फिल्मेमकर संजय लीला भंसाली जब कोई फिल्म बनाते हैं, तो उसके चर्चे बनने से पहले ही शुरू हो जाते हैं। भंसाली की अगली फिल्म में इस बार सिद्धांत चतुर्वेदी नजर आने वाले हैं। उनके साथ डायरेक्टर ने अपनी फिल्म के लिए हीरोइन के तौर पर मृणाल ठाकुर को चुना है। देवदास, पद्मावत, राम-लीला, गंगूबाई काठियावाड़ी जैसी शानदार फिल्में बनाने वाले डायरेक्टर भंसाली अब इन स्टार्स के साथ एक रोमांटिक फिल्म बनाने जा रहे हैं। इसी बीच भंसाली की इस फिल्म का श्रद्धा कपूर की फिल्म से खास कनेक्शन भी बताया जा रहा है।

रिपोर्ट के मुताबिक, सिद्धांत चतुर्वेदी और मृणाल ठाकुर की आने वाली फिल्म 'तुम ही हो' है। उनकी फिल्म का टाइटल सुनते ही लोगों के दिमाग में श्रद्धा कपूर और आदित्य रॉय कपूर की 2013 की फिल्म 'आशिकी 2' का गाना ट्रैक, 'तुम ही हो' घूमने लगा है। इस गाने को सिंगर अरिजीत सिंह ने गाया था। रिपोर्ट की मानें को मेकर्स ने सिद्धांत और मृणाल स्टारर फिल्म का टाइटल 'तुम ही हो' तय कर लिया है।

'तुम ही हो' का शूटिंग शेड्यूल

रिपोर्ट की मानें तो सिद्धांत और मृणाल की 'तुम ही हो' की शूटिंग इस साल मई में शुरू हुई थी और फिल्म का अगला शूटिंग शेड्यूल उत्तराखंड में होगा। फिल्ममेकर्स सितंबर के अंत तक राज्य की ट्रवल करेंगे और अक्टूबर तक शूटिंग करेंगे।

सिद्धांत और मृणाल शूटिंग के लिए टीम के बाकी सदस्यों के साथ उत्तराखंड में सेट पर पहुंचेंगे। पिछले साल पिंकविला की रिपोर्ट में ये पता चला था कि संजय लीला भंसाली अपने अगले प्रोडक्शन वेंचर के लिए सिद्धांत चतुर्वेदी और मृणाल ठाकुर के साथ हाथ मिलाने वाले हैं।

ईशा देओल संग भरी महफिल में शख्स ने की थी गंदी हरकत

गुस्साई एक्ट्रेस ने घुमाकर जड़ा था तमाचा

बॉलीवुड एक्ट्रेस ईशा देओल इन दिनों अपनी पर्सनल लाइफ की वजह से सुर्खियों में बनी हुई हैं। एक्ट्रेस ईशा देओल ने कुछ समय पहले ही अपने पति भरत तख्तानी संग तलाक लिया है। बता दें कि भरत और ईशा ने साल 2012 में सात फेरे लिए थे। हालांकि ये रिश्ता ज्यादा दिनों तक चल नहीं पाया है। इस बीच ईशा देओल ने अपनी जिंदगी के बारे में कई खुलासे किए हैं। इस दौरान ईशा देओल ने एक किस्सा भी सुनाया है, जिससे जानने के बाद आ भी दंग रह जाएंगे।

ईशा देओल के साथ एक शख्स ने किया था ऐसा काम

मेल फेमिनिस्ट के एक एपिसोड में ईशा देओल ने बताया है कि कैसे उन्होंने एक शख्स को थप्पड़ मार दिया था। दरअसल, पुणे में फिल्म दस के एक इवेंट में उनके साथ छेड़छाड़ की घटना हो गई थी। इस समारोह में संजय संजय दत्त, सुनील शेट्टी, जायद खान और अभिषेक बच्चन मौजूद थे। जब ईशा ने इवेंट में एंट्री की तो किसी शख्स ने उन्हें गलत तरीक से टच कर दिया। इस चीज से ईशा देओल का पारा हाई हो गया है और उन्होंने भरी महफिल में उस आदमी को थप्पड़ मार दिया है। ईशा देओल का ये अंदाज देख वहां मौजूद सभी लोग दंग रह गए थे।

कई फिल्मों में धमाल मचा चुकी हैं ईशा

बताते चलें कि बॉलीवुड एक्ट्रेस ईशा देओल ने कई फिल्मों में काम किया है। इस लिस्ट में धूम से लेकर नो एंट्री तक के नाम शामिल है। ईशा की एक्टिंग को लोग काफी पसंद करते थे। हालांकि बाद में उन्होंने इंडस्ट्री से दूरी बना ली। ईशा सोशल मीडिया पर काफी ज्यादा एक्टिव रहती हैं और अक्सर अपने फैंस के साथ तस्वीरें शेयर करती रहती हैं। ईशा के हर एक पोस्ट पर लोग रिएक्ट करते हैं। बता दें कि ईशा की हर अदा पर लोग फिदा हैं।

रणदीप हुड्डा की सादगी पर आया फैन्स का दिल

पत्नी के साथ आम लाइन में लगकर किए दर्शन, जमकर हुई तारीफ

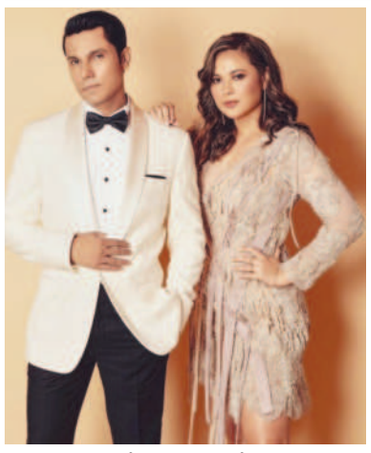

रणदीप हुड्डा ने बॉलीवुड में कई शानदार किरदारों में अपनी एक्टिंग से जान फूंकी है। अब तक 48 से ज्यादा फिल्मों में अपनी एक्टिंग का जलवा दिखाने वाले रणदीप हुड्डा इन दिनों अपनी पत्नी लिन लैशराम के साथ नजर आते रहते हैं। हाल ही में रणदीप की सादगी फैन्स को काफी पसंद आई है। रणदीप अपनी पत्नी लिन के साथ लालबागचा राजा के पांडाल में पहुंचे थे। यहां अपनी पत्नी के साथ रणदीप हुड्डा ने किसी स्पेशल नहीं बल्कि आम लाइन से एंट्री ली और गणपति बप्पा के दर्शन कर आर्शीवाद लिया।अब बॉलीवुड स्टार की इस सादगी पर फैन्स काफी फिदा हैं। रणदीप हुड्डा ने यहां अपनी पत्नी लिन लैशराम के साथ भगवान के दर्शन किए हैं। रणदीप का ये वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल है। इस वायरल वीडियो में लोगों ने रणदीप की सादगी की तारीफ की है।

बॉलीवुड के कहे जाते हैं देसी बॉय

रणदीप हुड्डा ने अपने करियर में अब तक 46 से ज्यादा फिल्मों में काम किया है। इनमें से कई सुपरहिट फिल्मों के बेहतरीन किरदार शामिल हैं। साल 2001 में फिल्म मॉनसून वेडिंग के जरिए बॉलीवुड में कदम रखने वाले रणदीप हुड्डा पहले टीवी में काम करते रहे। इशके बाद फिल्मों में एंट्री ली और छा गए। हाईवे, किक, मॉनसून वेडिंग और सुल्तान जैसी फिल्मों में काम कर रणदीप हुड्डा ने अपनी एक अलग पहचान बनाई। लंबा कद, फिट बॉडी और देसी अंदाज उन्हें बॉलीवुड का देसी बॉय बनाता है।

बीते साल की थी शादी की घोषणा

रणदीप हुड्डा ने इसी साल अपनी पत्नी लिन लैशराम से शादी की थी। बीते साल नवंबर में रणदीप ने अपने सोशल मीडिया के जरिए इसकी जानकारी दी थी। इसके बाद नवंबर में रणदीप हुड्डा ने इम्फाल में शादी रचाई थी। शादी के बाद मुंबई में रिसेप्शन भी दिया था। रणदीप हुड्डा अपनी पत्नी के साथ अक्सर ही सोशल मीडिया पर तस्वीरें शेयर करते रहते हैं। दोनों के बीच अच्छी कैमिस्ट्री नजर आती है। हाल ही में गणपति बप्पा के पांडाल में रणदीप हुड्डा अपनी पत्नी के साथ पहुंचे थे। यहां फैन्स ने भी उन्हें ग्रीट किया।

पति निक जोनस संग रोमांटिक हुईं प्रियंका चोपड़ा, तस्वीरों ने इंटरनेट पर लगाई आग

मनोरंजन जगत की जानी मानी मशहूर अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा ने बॉलीवुड से लेकर हॉलीवुड तक अपने अभिनय का लोहा मनवाया है। प्रियंका ने अपने करियर में कई सुपरहिट फिल्में दी हैं तथा प्रोफेशनल लाइफ के साथ-साथ अपनी निजी जिंदगी को लेकर भी ख़बरों में रहती हैं। जब भी उन्हें अपने व्यस्त शेड्यूल से समय मिलता है, वह अपने पति निक और बेटी मालती के साथ समय बिताने का मौका नहीं छोड़तीं। हाल ही में प्रियंका और निक के वेकेशन की फोटोज इंटरनेट पर चर्चा का विषय बनी हुई हैं, जिन्होंने इंटरनेट का तापमान बढ़ा दिया है। प्रियंका चोपड़ा अपने पति निक जोनस और बेटी मालती के साथ फ्रांस में वेकेशन का आनंद ले रही हैं। प्रियंका ने इस वेकेशन की फोटोज अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर साझा की हैं, जिन्होंने उनके प्रशंसकों का दिल चुरा लिया है। इन तस्वीरों में निक और बेटी मालती की मस्ती भरी गतिविधियाँ स्पष्ट देखी जा सकती हैं। प्रियंका चोपड़ा की इन फोटोज में देखा जा सकता है कि उन्होंने बिकिनी पहनकर अपने कर्वी फिगर को फ्लॉन्ट किया है। एक तस्वीर में वह क्रूज पर बिकिनी पहनकर पति के साथ कातिलाना अंदाज में पोज देती नजर आ रही हैं।

एक अन्य तस्वीर में प्रियंका व्हाइट ऑउटफिट में बेहद खूबसूरत दिखाई दे रही हैं। वहीं, एक फोटो में वह बिकिनी और चश्मा लगाए समुद्र के बीच बोट पर लेटी नजर आ रही हैं। हर फोटो में प्रियंका का एक खास अंदाज देखने को मिल रहा है, जबकि बेटी मालती संग उनकी मस्ती भी प्रशंसकों का दिल जीत रही है। प्रियंका चोपड़ा ने खुद से 10 वर्ष छोटे अमेरिकन सिंगर निक जोनस से शादी की है। दोनों ने 2018 में शादी की थी, जो काफी चर्चा में रही थी। शादी के बाद, प्रियंका और निक ने 2022 में सरोगेसी के माध्यम से बेटी मालती मैरी चोपड़ा जोनस का स्वागत किया।

रोहित शेट्टी और वाईआरएफ ने क्यों लगाया दीपिका-कटरीना पर ही दांव? क्या है इतने भरोसे की वजह

हिंदी सिनेमा में इस वक्त दो बड़े यूनिवर्स की काफी चर्चा हो रही है। पहला है वाईआरएफ का स्पाई यूनिवर्स और दूसरा है रोहित शेट्टी का कॉप यूनिवर्स। इन दोनों ही यूनिवर्स की फिल्में छप्परफाड़ कमाई करती हैं। इंडस्ट्री का हर एक्टर इस वक्त इन यूनिवर्स का हिस्सा बनने का सपना देख रहा है। हालांकि ये मौका अभी तक कम ही एक्टर को मिल पाया है। वहीं वाईआरएफ स्पाई यूनिवर्स और कॉप यूनिवर्स के बीच तगड़ा मुकाबला भी देखने को मिल रहा है। लेकिन इन दोनों में जो एक बात बिल्कुल सेम है, वो है रोहित शेट्टी और वाईआरएफ की हीरोइन्स। सही सुना आपने इन दोनों ही यूनिवर्स का दीपिका पादुकोण और कटरीना कैफ हिस्सा हैं। लेकिन मेकर्स इन दोनों एक्ट्रेसेस पर ही इतना बड़ा दांव क्यों खेल रहे हैं? आखिर उनके इतने भरोसे के पीछे की वजह क्या है, चलिए जानते हैं।

वाईआरएफ स्पाई यूनिवर्स

साल 2023 में वाईआरएफ ने जब शाहरुख खान के कमबैक के लिए 'पठान' बनाई, तो इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर ताबड़तोड़ कमाई करते हुए 1000 करोड़ का बिजनेस कर डाला। इस फिल्म के ब्लॉकबस्टर होते ही मेकर्स ने प्लान बनाया कि 'टाइगर' फ्रेंचाइजी जो वाईआरएफ की है, उसे और 'पठान' को मिलाकर एक स्पाई यूनिवर्स तैयार किया जाए। 'टाइगर' फ्रेंचाइजी के तीनों पार्ट भी बॉक्स ऑफिस पर हिट साबित हुए हैं। जहां 'पठान' में वाईआरएफ ने शाहरुख खान और दीपिका पादुकोण की जोड़ी बनाई है। वहीं 'टाइगर' के तीनों पार्ट में सलमान खान के साथ कटरीना कैफ लीड रोल में नजर आई हैं। यानी वाईआरएफ स्पाई यूनिवर्स में दीपिका और कटरीना दोनों का नाम शामिल है।

मोदी सरकार का तीसरा कार्यकाल

पहले 100 दिन में मंजूर हुए 3 लाख करोड़ के इंफ्रा प्रोजेक्ट

नई दिल्ली, 14 सितंबर (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई वाली केंद्र सरकार ने अपने तीसरे कार्यकाल के पहले 100 दिन पूरे कर लिए हैं. इन 100 दिनों में मोदी सरकार ने बुनियादी संरचना पर अपने फोकस को बरकरार रखा है. इस दौरान मोदी सरकार ने इंफ्रास्ट्रक्चर से जुड़ी 3 लाख करोड़ रुपये की परियोजनाओं को मंजूरी दी है.

सबसे बड़ा है यह बंदरगाह वाला प्रोजेक्ट

ईटी की एक रिपोर्ट के अनुसार, मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल के पहले 100 दिनों में 3 लाख करोड़ रुपये की इंफ्रास्ट्रक्चर से जुड़ी परियोजनाएं मंजूर की गई हैं. उनमें सबसे बड़ा प्रोजेक्ट महाराष्ट्र के वधावन में बंदरगाह का है. उस बंदरगाह के लिए 76,200 करोड़ रुपये का प्रोजेक्ट मंजूर किया गया है. उसके अलावा प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के चौथे चरण के लिए 49 हजार करोड़ रुपये मंजूर किए गए हैं, जिसके तहत ग्रामीण भारत में 62,500 किलोमीटर लंबी सड़क का निर्माण होने वाला है.

रोड से लेकर रेल और एयरपोर्ट तक ध्यान

सरकार ने आठ नेशनल हाई-स्पीड रोड कॉरिडोर की परियोजनाओं को भी मंजूर किया है. उनकी लंबाई 936 किलोमीटर होगी और 50,600 करोड़ रुपये की लागत आने का अनुमान है. मोदी 3.0 के पहले 100 दिनों में बुनियादी संरचना से जुड़ी जिन परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है, उनमें वाराणसी में लाल बहादुर शास्त्री अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का विकास, पश्चिम बंगाल के बागडोगर और बिहार के बिहटा में हवाई अड्डों पर नए सिविल एन्क्लेव का विकास, 8 नई रेल लाइन परियोजनाएं, हिमाचल प्रदेश और लद्दाख को जोड़ने वाली शिनखुन ला सुरंग आदि शामिल हैं.

तीसरे कार्यकाल में इंफ्रा पर फोकस बरकरार

मोदी सरकार के द्वारा पहले के दो कार्यकाल के दौरान देश में बुनियादी संरचना के विकास पर फोकस दिया गया है. तीसरे कार्यकाल के पहले 100 दिनों में मंजूर की गई परियोजनाओं से लग रहा है कि इस कार्यकाल में भी मोदी सरकार बुनियादी संरचना के विकास पर फोकस बनाए रखने वाली है. अभी जिन परियोजनाओं को मंजूर किया गया है, उनक उद्देश्य देश में कनेक्टिविटी को बेहतर बनाना, आर्थिक तरक्की को तेज करना, रोजगार के नए अवसर पैदा करना और लोगों के जीवन को आसान बनाना है.

इस तरह फायदेमंद होंगे इंफ्रा प्रोजेक्ट

उदाहरण के लिए महाराष्ट्र में बन रहे बंदरगाह से आयात-निर्यात की सुविधा का विस्तार होगा. पूरी तरह तैयार होने के बाद उसे दुनिया के टॉप-10 बंदरगाहों में गिना जाएगा. ग्रामीण सड़क परियोजनाओं से 25 हजार गांवों को फायदा होगा. हाई-स्पीड रोड कॉरिडोर से दो शहरों के बीच की दूरी कम होगी. प्रधानमंत्री मोदी ने हाल ही में जिस सुरंग का शिलान्यास किया था, उसके तैयार होने से लद्दाख को बारहों महीने कनेक्टिविटी का फायदा मिलेगा.

सोने-चांदी में रही तेजी:सोना 1,113 रुपए बढ़कर 73,044 रुपए पर पहुंचा, चांदी 86,100 रुपए प्रति किलो बिक रही

नई दिल्ली, 14 सितंबर (एजेंसियां)। इस हफ्ते सोने-चांदी के दामों में तेजी देखने को मिली है। इंडिया बुलियन एंड ज्वैलर्स एसोसिएशन की वेबसाइट के अनुसार पिछले शनिवार यानी 7 सितंबर को सोना 71,931 रुपए पर था, जो अब (14 सितंबर) को 73,044 रुपए प्रति 10 ग्राम पर पहुंच गया है। यानी इस हफ्ते इसकी कीमत में 1,113 रुपए की बढ़ी है। वहीं चांदी की बात करें तो ये पिछले शनिवार को ये 83,338 रुपए पर थी, जो अब 86,100 रुपए प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई है। इस हफ्ते इसकी कीमत 2,762 रुपए बढ़ी है। इस साल चांदी 29 मई को अपने ऑल टाइम हाई 94,280 रुपए प्रति पर पहुंच गई थी। वहीं सोने ने 21 मई को 74,222 रुपए का ऑल टाइम हाई बनाया था।

4 महानगरों और भोपाल में सोने की कीमत

दिल्ली : 10 ग्राम 22 कैरेट सोने की कीमत 68,410 रुपए और 10 ग्राम 24 कैरेट सोने की कीमत 74,610 रुपए है।

मुंबई : 10 ग्राम 22 कैरेट सोने की कीमत 68,260 रुपए और 10 ग्राम 24 कैरेट सोने की कीमत 74,460 रुपए है।

कोलकाता : 10 ग्राम 22 कैरेट गोल्ड की कीमत 68,260 रुपए और 24 कैरेट 10 ग्राम सोने की कीमत 74,460 रुपए है।

चेन्नई : 10 ग्राम 22 कैरेट सोने की कीमत 68,260 रुपए और 10 ग्राम 24 कैरेट सोने की कीमत 74,460 रुपए है।

भोपाल : 10 ग्राम 22 कैरेट सोने की कीमत 68,310 रुपए और 10 ग्राम 24 कैरेट सोने की कीमत 74,510 रुपए है।

हैदराबाद : सोने(गोल्ड) का रेट 24 कैरेट के लिए 74,450 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट के लिए 68,250 रुपये है।

पश्चिम बंगाल में है तमिलनाडु से ज्यादा महंगाई!

चाय के बहाने पूर्व वित्त मंत्री चिदंबरम ने कसा ऐसा तंज

नई दिल्ली, 14 सितंबर (एजेंसियां)। एयरपोर्ट पर चाय और पानी जैसी जरूरी चीजों की आसमानी कीमतें अक्सर चर्चा बटोरती हैं। कई बार ऐसे मामले सामने आते रहते हैं, जिनमें लोग हवाई अड्डों पर असामान्य कीमतों को लेकर सवाल उठाते हैं। पूर्व वित्त मंत्री पी चिदंबरम ने भी हाल ही में इस तरह का एक मुद्दा उठाया है।मुख्य विपक्षी पार्टी कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व वित्त मंत्री पी चिदंबरम ने कोलकाता के अपने हालिया अनुभव को शेयर किया है, जिसमें उन्हें चाय के लिए 340 रुपये का भुगतान करना पड़ गया। उन्होंने पूरे वाकये को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा और चाय की कीमत के बहाने महंगाई पर तंज किया।

पूर्व वित्त मंत्री ने शेयर किया ये अपडेट

पूर्व वित्त मंत्री एक्स पर लिखते हैं- मुझे अभी पता चला है कि गर्म पानी और टी बैग से बनने वाली चाय की कीमत कोलकाता एयरपोर्ट पर 340 रुपये है। रेस्टोरेंट का नाम 'कॉफी बीन और चाय पत्ती' है। कुछ सालों पहले मुझे पता चला था कि गर्म पानी और टी बैग से बनने वाली चाय की कीमत चेन्नई एयरपोर्ट पर 80 रुपये है। मैंने उस सयम भी इस बारे में ट्वीट किया था। एएआई ने उसका संज्ञान लिया था और जरूरी कदम उठाया था। वह आगे तंज करते हैं- ऐसा लगता है जैसे पश्चिम बंगाल में तमिलनाडु से ज्यादा महंगाई

चिदंबरम के इस अपडेट पर सोशल मीडिया तरह-तरह के कमेंट कर रहे हैं। एक यूजर ने बिल का ब्रेकअप समझाते हुए लिखा- गर्म पानी और टी बैग की कीमत 10 रुपये, एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया का प्रॉफिट 10 रुपये और बाकी 320 रुपये विभिन्न अथॉरिटीज के पास जा रहे हैं। वहीं एक अन्य यूजर ने लिखा कि एयरपोर्ट पर सारी चीजें बहुत महंगी होती हैं। एयरपोर्ट पर बेची जाने वाली हर चीज की कीमत एक नॉर्मल रेस्टोरेंट की तुलना में 10 गुनी ज्यादा रहती है।

महंगाई के आंकड़े पर उठा चुके हैं सवाल

पूर्व वित्त मंत्री इससे पहले भी महंगाई के मुद्दे पर अपनी बात रखते आए हैं। करीब डेढ़ महीने पहले उन्होंने महंगाई के आंकड़े पर सवालिया निशान लगाया था। उन्होंने कहा था कि सरकार महंगाई को हल्के में ले रही है। महंगाई का जो आंकड़ा बताया जा रहा है, वह वास्तव में है नहीं। अगर महंगाई में कम हुई है, जैसा दावा किया जा रहा है, तो उसके बाद भी रिजर्व बैंक ने 13 महीने से ब्याज दर में कटौती क्यों नहीं की है।

अभी खत्म नहीं हुई है आरबीआई की परेशानी

गवर्नर शक्तिकांत दास ने कहा- महंगाई है दुश्मन नंबर वन

नई दिल्ली, 14 सितंबर (एजेंसियां)। रिजर्व बैंक लंबे वक्त से देश में महंगाई को कम करने का प्रयास कर रहा है। इसके लिए पिछले साल से ही ब्याज दरों को लगातार ज्यादा रखा गया है। अब देश में महंगाई को लेकर आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास ने एक बेहद अहम बयान दिया है। उन्होंने कहा कि भारत में पिछले कुछ वक्त में महंगाई कम हुई है, लेकिन अभी भी यह सफर पूरा नहीं हुआ है। उपभोक्ता मूल्य सूचकांक पर आधारित खुदरा महंगाई दर अगस्त में कम होकर 3.65 फीसदी रही। लेकिन उसके बाद आरबीआई गवर्नर महंगाई को परेशानी मान रहे हैं।

4 फीसदी पर आई महंगाई

सिंगापुर में आयोजित ब्रेटन वुड्स कमेटी के प्रोग्राम 'फ्यूचर ऑफ फाइनेंस फोरम 2024' में महंगाई के बारे में बात करते हुए गवर्नर शक्तिकांत दास ने कहा कि अप्रैल 2022 में देश की महंगाई अपने सबसे उच्चतम स्तर यानी 7।8 फीसदी तक पहुंच गई थी, मगर अब इसमें जबरदस्त गिरावट देखने को मिली है और यह पिछले कुछ वक्त में 4 फीसदी के संतोषजनक स्तर से नीचे रही है। महंगाई कम होना एक अच्छी बात है, लेकिन इसके साथ ही उन्होंने कहा कि अभी भी सफर पूरा नहीं हुआ है। हमें अभी भी इस पर लगातार प्रयास करते रहने की जरूरत है। हम अभी दूसरी तरफ देखने का जोखिम नहीं उठा सकते हैं।

वित्त वर्ष 2025 में इतनी रहेगी महंगाई

भारतीय रिजर्व बैंक ने यह अनुमान जताया है कि वित्त वर्ष 2023-24 में 5.4 फीसदी रही। महंगाई कम होकर वित्त वर्ष 2024-25 में 4.5 फीसदी रहने का अनुमान है। वहीं वित्त वर्ष 2025-26 में महंगाई कम होकर 4.1 फीसदी रहने का अनुमान है।

बैंकों के लिए बढ़ा है जोखिम

आरबीआई गवर्नर ने कहा है कि पिछले कुछ वक्त में महंगाई और डॉलर की बढ़ती कीमतों के कारण बैंकों की मौद्रिक नीति और प्रबंधन पर दबाव बढ़ा है। बैंक पिछले वक्त से रियल सेक्टर के लिए बैंकों ने कर्ज देने में कुछ सावधानियां बरतनी शुरू की है। उन्होंने कहा कि आरबीआई भी मौद्रिक नीति के प्रबंधन पर सोच-विचार करके ही निर्णय लेगा।बाजार लंबे वक्त से दरों में कटौती की उम्मीद लगाए बैठा है। यह उम्मीद अमेरिका फेड रिजर्व की ब्याज दरों में बदलाव के संकेतों के बाद और बढ़ गई है।

दिल्ली, मुंबई, चेन्नई जैसे प्रमुख शहरों में प्याज 5 रुपए सस्ती हुई

नई दिल्ली, 14 सितंबर (एजेंसियां)। बीते कुछ महीनों में आसमान छूते प्याज दाम धीरे-धीरे ही सही जमीन पर आने शुरू हो गए हैं। इस बात की जानकारी खुद सरकार की ओर से दी गई है। कंज्यूमर मामलों के मंत्रालय का मानना है कि सरकार की सब्सिडी वाले प्याज की बिक्री की पहल से कुछ ही दिनों में देश के प्रमुख शहरों में कीमतों में 5 रुपए की गिरावट देखने को मिली है। इस लिस्ट में दिल्ली, मुंबई के अलावा चेन्नई और देश के दूसरे शहरों का नाम भी शामिल है। सरकार दिल्ली में 35 रुपए प्रति किलोग्राम प्याज बेच रही है। जबकि रिटेल में प्याज कीमतें अब भी 50 रुपए प्रति किलोग्राम से ज्यादा बिक रही हैं। आइए आपको बताते हैं कि आखिर सरकार की ओर से प्याज की कीमतों को लेकर क्या कहना है?

सरकार की पहल से सस्ता हुआ प्याज

कंज्यूमर मामलों के मंत्रालय ने शनिवार को कहा कि पांच सितंबर को शुरू की

गई सरकार की सब्सिडी वाले प्याज की बिक्री की पहल से कुछ ही दिनों में प्रमुख शहरों में कीमतों में गिरावट आई है। मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि दिल्ली में प्याज की खुदरा कीमत 60 रुपए से घटकर 55 रुपए प्रति किलोग्राम हो गई, जबकि मुंबई में 61 रुपए से घटकर 56 रुपए प्रति किलोग्राम हो गई। चेन्नई में खुदरा कीमत 65 रुपए से घटकर 58 रुपए प्रति किलोग्राम हो गई। सरकार ने मोबाइल वैन और एनसीसीएफ और नैफेड के आउटलेट के जरिए 35 रुपए प्रति किलोग्राम की सब्सिडी दर पर प्याज की बिक्री शुरू की है। दिल्ली और मुंबई में शुरू हुआ यह कार्यक्रम अब चेन्नई, कोलकाता, पटना, रांची, भुवनेश्वर और गुवाहाटी सहित अन्य प्रमुख शहरों में भी फैल चुका है।

इन शहरों में सरकार की पहल

बढ़ती मांग को देखते हुए सरकार ने सब्सिडी वाले प्याज की मात्रा बढ़ाने और वितरण चैनलों का विस्तार करके ई-कॉमर्स मंच, केंद्रीय भंडार आउटलेट और मदर डेयरी के सफल स्टोर को शामिल करने का फैसला किया है। सरकार ने प्रमुख शहरों में प्याज का थोक निपटान भी शुरू कर दिया है। यह दिल्ली, मुंबई और चेन्नई में पहले ही शुरू हो चुका है, और हैदराबाद, बेंगलुरु और कोलकाता और अंततः सभी राज्यों की राजधानियों तक इसे विस्तारित करने की योजना है।

रसद आपूर्ति में सुधार और कटाई के बाद होने वाले नुकसान को कम करने के लिए सड़क और रेल नेटवर्क दोनों को शामिल करते हुए एक दोहरी परिवहन रणनीति लागू की जा रही है।

अमेजन-फ्लिपकार्ट से सैमसंग और शाओमी की मिलीभगत, कस्टमर्स को लग रहा चूना

नई दिल्ली, 14 सितंबर (एजेंसियां)। भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग ने अपनी रिपोर्ट में सैमसंग , शाओमी , अमेजन और फ्लिपकार्ट के बीच मिलीभगत के गंभीर आरोप लगाए हैं. सीसीआई ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि इन कंपनियों के गुपचुप समझौते से कस्टमर्स को परेशानी हो रही है. ऑनलाइन रिटेल प्लेटफॉर्म अमेजन और फ्लिपकार्ट सीसीआई के प्रतिस्पर्धा कानूनों को खिलाफ काम कर रहे हैं. ये ईकॉमर्स प्लेटफॉर्म कुछ खास कंपनियों को ही बढ़ावा देते हैं.

अमेजन और फ्लिपकार्ट के साथ किए हुए हैं गुप्त समझौते

रायटर्स कली रिपोर्ट के अनुसार, कम्पटीशन कमीशन ऑफ इंडिया ने कहा है कि हमारी जांच में पता चला कि सैमसंग और शाओमी जैसी कई कंपनियों ने अमेजन और वालमार्ट के स्वामित्व वाली फ्लिपकार्ट के साथ गुप्त समझौते किए हुए हैं. अमेजन और फ्लिपकार्ट इन कंपनियों के प्रोडक्ट एक्सक्लूसिव लॉन्च करते हैं. ये ऐसी कंपनियों को ही प्राथमिकता देते हैं. उनकी लिस्टिंग और डिस्काउंट के जरिए अन्य कंपनियों को नुकसान पहुंचाया जा रहा है.

इन सभी कंपनियों पर प्रतिस्पर्धा कानून के उल्लंघन का आरोप

सीसीआई ने अपनी 1,027 पेज की रिपोर्ट में कहा है कि अमेजन ने सैमसंग, शाओमी, रियलमी , मोटोरोला और वनप्लस के फोन एक्सक्लूसिव लॉन्च किए हैं. इन्होंने प्रतिस्पर्धा कानूनों का उल्लंघन किया है. उधर, फ्लिपकार्ट के बारे में 1,696 पन्नों की रिपोर्ट में कहा गया है कि उसने सैमसंग, शाओमी, मोटोरोला, वीवो , लेनेवो और रियलमी के साथ ऐसे ही समझौते कर कानून के खिलाफ काम किया है. सैमसंग और शाओमी पर लगे यह आरोप गंभीर हैं और उनकी मुसीबतें बढ़ा सकते हैं.

एक्सक्लूसिव कॉन्ट्रैक्ट फ्री एंड फेयर कम्पटीशन के खिलाफ

अमेजन और फ्लिपकार्ट की रिपोर्ट में सीसीआई के एडीशनल डायरेक्टर जनरल जीवी शिवा प्रसाद ने लिखा है कि एक्सक्लूसिव कॉन्ट्रैक्ट बिजनेस में अभिशाप की तरह हैं. यह पूरी तरह से कंज्यूमर के हितों के खिलाफ हैं. इससे न सिर्फ कंज्यूमर को नुकसान पहुंचता है बल्कि फ्री एंड फेयर कम्पटीशन भी मार्केट में नहीं रहा जाता है.

एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स के विशाल आईपीओ की तैयारियां शुरू

इन बैंकों को मिली जिम्मेदारी

नई दिल्ली, 14 सितंबर (एजेंसियां)। दक्षिण कोरिया की एमएनसी एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स के प्रोडक्ट भारत में बहुत पसंद किए जाते हैं। अब कंपनी भारत में अपने विस्तार के लिए आईपीओ लाने की तैयारियों में जुटी हुई है। कंपनी लगभग 1.5 अरब डॉलर का विशाल आईपीओ लेकर आने वाली है। इसके लिए एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स ने कई बैंकों का चुनाव कर लिया है। ऐसा दावा किया जा रहा है कि एलजी ने अपने आईपीओ की जिम्मेदारी बैंक ऑफ अमेरिका , सिटीग्रुप इंक , जेपी मॉर्गन चेस और मॉर्गन स्टेनली को सौंप दी है। एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स इंडिया के लिए भारत एक बड़ा बाजार है। वह यहां अपनी स्थिति और मजबूत करना चाहती है। कंपनी का आईपीओ अगले साल की शुरुआत में आ सकता है। इस आईपीओ के दौरान 1 से 1.5 अरब डॉलर के शेयर मार्केट में उतारे जा सकते हैं। आईपीओ की सफलता के बाद एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स की वैल्यूएशन भारत में लगभग 13 अरब डॉलर की हो जाएगी। इकोनॉमिक टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार, फिलहाल इस बारे में कंपनी ने कोई पुष्टि नहीं की है। इस आईपीओ का साइज और तारीख बदल सकते हैं। मगर, आईपीओ को लेकर कंपनी निश्चित रूप से अपनी तैयारियों में जुटी हुई है। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स स्टॉक मार्केट रेगुलेटर सेबी के पास आईपीओ के दस्तावेज अगले महीने सौंप सकता है। इसके अलावा आईपीओ के लिए अन्य बैंकों को भी साथ लाया जा सकता है। इनमें कुछ भारतीय बैंक भी हो सकते हैं। ब्लूमबर्ग न्यूज की एक रिपोर्ट के अनुसार, विदेशी निवेशकों के लिए भारत का मार्केट एक अहम स्थान बन गया है।

हिंडनबर्ग से नहीं बल्कि यहां हैं गौतम अडानी को बड़ा खतरा

नई दिल्ली, 14 सितंबर (एजेंसियां)। हाल ही में हिंडनबर्ग ने एक रिपोर्ट को अपने सोशल मीडिया अकाउंट एक्स पर पोस्ट किया है. इस रिपोर्ट में दावा किया गया था कि स्विस अधिकारियों ने अडानी से संबंधित धनशोधन और प्रतिभूतियों में जालसाजी की जांच के तहत स्विस बैंक अकाउंट्स में 31 करोड़ डॉलर से अधिक की राशि जब्त की है. जिसके बाद अडानी ग्रुप के 7 शेयरों में गिरावट देखी गई. जिसका असर अडानी की दौलत में देखने को मिला. ये पहली बार नहीं है कि हिंडनबर्ग ने अडानी को लेकर कोई नया दावा किया हो और अडानी के शेयरों में असर ना देखा गया. कभी ज्यादा देखा गया तो कभी कम. लेकिन अमीरों की लिस्ट में अडानी को ज्यादा फर्क एक साल में कभी नहीं पड़ा. बीते काफी समय से वो दुनिया के टॉप 15 अरबपतियों में शामिल थे. कुछ समय से तो उनकी दौलत 100 अरब डॉलर के पार भी थी. इस बार उन्हें दोहरी मार पड़ी है. एक तो ये है कि गौतम अडानी

उस एलीट ग्रुप से बाहर हो गए हैं, जिनकी नेटवर्थ 100 अरब डॉलर और उससे ज्यादा है. साथ ही दुनिया के टॉप 15 अरबपतियों की लिस्ट से भी बाहर हो चुके हैं. जिसकी शुरुआत गुरुवार को ही हो गई थी. जब उनकी दौलत में इजाफा देखने को मिला, लेकिन एक पायदान नीचे खिसकर 16वें पायदान पर आ गए थे. लेकिन देश के लोगों को उम्मीद थी, कि रैंकिंग में सुधार होगा, लेकिन अब वह दो और पायदान नीचे खिसक गए हैं. और दुनिया के 18वें सबसे अमीर आदमी बन गए हैं. अब सबसे बड़ा खतरा ये बन गया है कि कहीं अडानी टॉप 20 की लिस्ट से बाहर ना हों जाएं. वास्तव में अडानी की दौलत और रैंकिंग दोनों के नीचे गिरने का सिलसिला खासकर सितंबर से देखने को मिला है. खास बात तो ये है कि बीते 45 दिनों में अडानी की दौलत से 12 अरब डॉलर यानी एक लाख करोड़ रुपए से ज्यादा डूब गए हैं. इसका मतलब ये हुआ कि गौतम अडानी की नेटवर्थ से 1 अगस्त के बाद से हर सेकंड 2.63 लाख करोड़ रुपए कम हुए हैं. आइए आपको भी बताते हैं कि आखिर शुक्रवार को अडानी की दौलत कितनी कम हुई और मौजूदा समय में कुल नेटवर्थ कितनी रह गई है.शुक्रवार को अडानी ग्रुप के 7 शेयरों में गिरावट आने की वजह से दौलत में भी गिरावट देखने को मिली. ब्लूमबर्ग बिलेनियर्स इंडेक्स के आंकड़ों के अनुसार गौतम अडानी की कुल नेटवर्थ से 1.47 अरब डॉलर यानी 12 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा की गिरावट देखने को मिली. जिसके बाद उनकी कुल नेटवर्थ 98.8 अरब डॉलर आ गई है. वैसे मौजूदा साल में अडानी की कुल नेटवर्थ में 17.2 फीसदी यानी 14.5 अरब डॉलर का इजाफा देखने को मिल चुका है.

दैनिक पंचांग

ग्रह गोचर

ग्रह स्थिति		लग्नारंभ समय	
सूर्य-	सिंह मे	सिंह-	04-10 बजे
चंद्र-	मकर मे	कन्या-	06-17 बजे
मंगल	मिथुन मे	तुला-	08-23 बजे
बुध-	सिंह मे	वृश्चिक-	10-33 बजे
गुरु-	वृष मे	धनु-	12-46 बजे
शुक्र-	कन्या मे	मकर...	14-53 बजे
शनि-	कुंभ मे	कुंभ-	16-44 बजे
राहु-	मीन मे	मीन-	18-21 बजे
केतु-	कन्या मे	मेष--	18-57 बजे
		वृष..	21-42 बजे
		मिथुन..	23-42 बजे
		कर्क..	01-56 बजे

श्री कालयुक्त संवत्सर-विक्रम संवत-2081
शक संवत- 1946 सूर्य -दक्षिणायन- ऋतु -शरद
महावीर निर्वाण संवत -2550,हिजरी सन् -1444
कलियुग अवधि-432000 सूर्योदय - 06-07 सूर्यास्त. -18-16
भोग्य कलि वर्ष-426875
कलियुग संवत -5125 वर्ष,
कल्पारंभ संवत् -1972949125
सृष्टि ग्रहारंभ संवत्-1955885125
दिशाशूल -- पश्चिम - पान खाकर घर से निकले
तिथि- द्वादशी 18-12 तक उपरान्त त्रयोदशी
मास - भाद्रपद शुक्ल , रविवार 15 September
नक्षत्र - श्रवण 18-49 तक उपरान्त धनिष्ठा
योग - अतिगण्ड 15-13 तक उप सुकर्मा
करण- बव 07-31 तक उप बालव
विशेष:- प्रदोष व्रत
व्रत -त्योहार - श्री वामन जयंती

विशेष:- राशिफल ग्रहों के गोचर के आधार पर लिखा गया है।सूक्ष्म फलादेश क लिए जन्म पत्रिका की सूक्ष्म स्थिति जानने के लिए जन्म कुण्डली दिखाना चाहिए।

राहुकाल 16:45 से 18:17 तक

पं महेशचन्द्र शर्मा मो.9247132654,8309517693

दिन का चौघड़िया		रात का चौघड़िया	
उत्पात	06:07 - 07:37 अशुभ	शुभ	18:16 - 19:45 शुभ
चंचल.	07:37 - 09:08 शुभ	अमृत.	19:45 - 21:14 शुभ
लाभ	09:08 - 10:40 शुभ	चंचल	21:14 - 22:43 शुभ
अमृत	10:40 - 12:11 शुभ	रोग	22:43 - 00:11 अशुभ
काल	12:11 - 13:42 अशुभ	काल	00:11 - 01:40 अशुभ
शुभ.	13:42 - 15:14 शुभ	लाभ.	01:40 - 03:08 शुभ
रोग.	15:14 - 16:45 अशुभ	उत्पात	03:08 - 04:37 अशुभ
उत्पात	16:45 - 18:16 अशुभ	शुभ	04:37 - 06:07 शुभ

आपका राशिफल

मेष (चू,चे, चो, ला, ली, लू , ले, लो, अ,)

उद्यम पूंजीपतियों के लिए आज का दिन शुभ हो सकता हैं ! लोग आपकी विचारधारा से प्रभावित होंगे लेकिन अपनी बातो को उनके ऊपर न थोपे । हालांकि आपको धन मिलने में देरी हो सकती है परन्तु ये धन आपको मिलने की उम्मीद है ।

वृष (ई, उ, ए, जो, वा, वी, वू, वे, वो,)

छोटी छोटी परेशानियां और असहमतियां दिन भर सामने आती रहेंगी । आपको इन छोटी छोटी बातों की उपेक्षा कर देनी है,नही तो आप अपनी मानसिक शांति को नष्ट कर लेंगे । अपनी समस्याएँ किसी के साथ बांटने की कोशिश करें,आपको अच्छा अनुभव होगा । एकांत की गतिविधियाँ आज बहुत अच्छी रहेंगी ।

मिथुन (का, की, कू, घ, ड, छ, के, को, ह,)

लम्बे समय के बाद आज आपको रहत महसूस होगी । किसी महत्वपूर्ण खबर से ख़ुशी मिलेगी । यदि माता-पिता हैं तो बेटे/बेटी के लिए सुयोग्य वर मिल सकता है । किसी लंबित अदालती मामले का फैसला आपके पक्ष में हो सकता है । करियर के मामले में छोटे से प्रयास से बड़ी सफलता मिलनी तय है ।

कर्क (ही, हू ,हे , हो, डा , डी, डू, डे, डो,)

आज चलते हुए सावधान रहें । हलकी खरोचें आ सकती हैं | न चाहते हुए भी आप किसी करीबी को बातों-बातों में नाराज कर सकते हैं । आज केवल अपने काम से ही मतलब रखना उपयुक्त रहेगा । सिनेमा या किसी और मनोरंजक कार्यकलाप में समय बिता सकते हैं ।

सिंह (मा, मी ,मू ,मे, मो, टा, टी ,टू ,टे,)

घर पर पवित्रता का वातावरण बना रहेगा और चिंताएं नही रहेंगी । इसीलिए अपने परिवार के साथ रहें और खुशियाँ बाँटें । आपको जीवन में निराशा से दो दो हाथ करने का नया तरीका निकलना होगा ,जो आपके भीतर कई कारणों से भरी हुई है । आपकी भीतरी शक्ति समाधान तलाशने में मदद करेगी ।

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो)

काफी समय से जिन्दगी एक ही ढर्रे पर चल रही है,कुछ मजेदार भी नही हो रहा । अपनी नीरस जिंदगी में कुछ साहसिक गतिविधि शामिल करें । अपने पसंदीदा पर्यटन स्थल पर जा सकते हैं या कहीं भी बाहर घूम आयें | महत्वपूर्ण कामों को पूरा करने के लिए कुछ समय तक खुद को कुछ सामाजिक और निजी गतिविधियों से दूर कर लें ताकि एकाग्रता से काम कर पायें ।

तुला (रा, री, रू ,रे ,रो , ता, ती, तू ,ते,)

आज आप खुद को उलझन में फंसा हुआ महसूस करेंगे । अपना भला चाहने वाले लोगों से उन चीजों के बारे में भी खुलकर बात करें,जो आपको परेशान कर रही हैं । अनिश्चितता के बादल एक सप्ताह में छंट जायेंगे । किसी परिजन या अन्तरंग दोस्त का साथ मिलेगा । बोलते हुए सावधान रहें । किसी की आपके शब्दों से ग़लतफ़हमी हो सकती है ।

वृश्चिक (तो,ना,नी, ने,नू, नो, या, यी ,यू,)

अगर किसी के साथ इन दिनों आपके सम्बन्ध सही नही हैं तो आज उनसे इस बारे में बात कर सकते हैं । उनकी भी बात ध्यानपूर्वक सुनें । सामने वाले को ना तो इतनी छूट दें की आपको रोंदकर आगे बढ़ जाए,ना ही बहुत रुखा व्यवहार करना ठीक होगा । ऑफिस में आज किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति से मुलाकात सम्भव है,सतर्क और सक्रिय रहें ।

धनु (ये, यो,भा, भी, भू धा ,फा, ढा, भे)

आपके मिलनसार स्वभाव के कारण आपके बहुत सारे दोस्त हैं लेकिन ये सभी विश्वसनीय नही हैं । आज किसी भी दोस्त पर विश्वास करने से पहले उसके बारे में अच्छी तरह से जान लें । आज आप बिलकुल स्पष्ट सोच रहे हैं और आप मुश्किल योजना बनायेंगे और उसे बहुत अच्छी तरह कार्यान्वित भी कर पायेंगे । अपने अधूरे काम आज पूरे कर दें और चिंतामुक्त हो जाएँ ।

मकर (भो, जा, जी, खो, खू, खे, खो, गा, गी)

आपको थोडा सा अधिक लचीला रुख अपनाना चाहिए ,लेकिन आज आप ना तो कोई अच्छी सलाह और ना ही अपने मन की आवाज सुनना चाहते हैं । आपका यह अड़ियल रवैया आपके लिये घर और कार्यस्थल दोनों ही जगह पर आपके लिए नुक्सान का कारण बनेगा । इसका एक ही समाधान है कि आप अपना दिमाग खुला रखें और दूसरों की भी बातें सुनें ।

कुंभ (गू, गे ,गो, सा, सी, सू, से, सो, दा,)

आज आप हर किसी पर विश्वास करने के मूड में रहेंगे । इसका नुक्सान यह है की आप किसी ऐसे आदमी के साथ भी अपनी बाते साझी कर सकते हैं जो दिल से आपका भला नही चाहता । इसीलिए पहले इस आदमियो के बारे सही से छानबीन कर लें । अगर आप पिछले कुछ समय से कार्यस्थल या घर पर किसी की बातो से असहमत हैं तो आज दोस्ती का हाथ बढाने के लिए अच्छा समय है।

मीन (दी, दू,थ, झ, ञ, दे, दो, चा,ची)

आज आप खुद को अधिक समर्पित अनुभव करेंगे और सारा लंबित काम निपटा लेंगे । ये सारा काम ख़त्म करके आपको एक तरह की संतुष्टि मिलेगी जिसे आपके अन्य करीबी भी नोट करेंगे । इसका नतीजा यह होगा की आपको घर और कार्यस्थल ,दोनों ही जगह अधिक सराहना मिलेगी ।

श्री पंचागुली ज्योतिष केन्द्र

केजरीवाल संग हेमंत सोरेन चलेंगे एक ही 'दांव'

झारखंड चुनाव से पहले भाजपा को 'पटखनी' देने का प्लान तैयार!

रांची, 14 सितंबर (एजेंसियां)। जमीन घोटाले के आरोप में झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन पांच महीने जेल में रहे। झारखंड हाईकोर्ट ने उन्हें जमानत दे दी। जमानत देते वक्त प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) पर हाईकोर्ट ने गंभीर टिप्पणी भी की। दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल भी शराब घोटाले में तकरीबन छह महीने जेल में रहे। सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें भी जनात दे दी। सुप्रीम कोर्ट ने केडरीवाल को जमानत देते समय टिप्पणी की कि सीबीआई को साबित करना चाहिए कि वह सरकारी तोता नहीं है। इसी साल झारखंड में विधानसभा का चुनाव होना है। कुछ ही महीने बाद 2025 के आरंभ में दिल्ली में भी विधानसभा का चुनाव संभावित है। दोनों नेताओं को फिलहाल जमानत मिली है, लेकिन चुनावी मौसम में दोनों इसे ऐसे भुनाने की कोशिश कर रहे, जैसे उन्हें अदालतों ने क्लीन चिट दे दी है।

जिस तरह इंडिया ब्लॉक में शामिल आम आदमी पार्टी और झारखंड मुक्ति मोर्चा के नेता हेमंत सोरेन जांच एजेंसियों की कार्रवाई को कठघरे में खड़ा करते रहे हैं, उससे एक बात तो साफ हो गई है कि चुनाव में दोनों दल इसे भुनाने का भरपूर प्रयास करेंगे। वैसे भी इंडिया ब्लॉक की पार्टियां केंद्रीय जांच एजेंसियों की कार्रवाई पर सवाल उठाती रही हैं। पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी, झारखंड के सीएम हेमंत सोरेन और दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल समेत दूसरी विपक्षी पार्टियां जांच एजेंसियों की भूमिका पर अदालत का दरवाजा भी खटखटा चुकी हैं। अब उन्हें यह कहने का मौका मिल जाएगा कि केंद्र सरकार जान-बूझकर विपक्षी नेताओं को केंद्रीय जांच एजेंसियों की मदद से परेशान करती है। इतना तो तय है कि अब विपक्षी नेता दोनों नेताओं की जमानत के दौरान अदालतों की टिप्पणी को आधार बनाकर केंद्र सरकार पर हमलावर होंगे। हेमंत सोरेन को मनी लांड्रिंग मामले में जमानत देते समय झारखंड हाईकोर्ट ने कहा था- 'प्रथमदृष्टया सबूतों को देख कर यह मानने के पर्याप्त कारण हैं कि हेमंत सोरेन कथित अपराधों के लिए दोषी नहीं हैं। बरामद रजिस्टरों और रेवेन्यू रिकॉर्ड में हेमंत सोरेन और उनके परिवार के सदस्यों के नाम ही नहीं हैं। जिस 8.86 एकड़ भूमि के अधिग्रहण और कब्जे की बात है, उसमें हेमंत शामिल नहीं लगते हैं। अपराध से हुई आय छिपाने में भी शामिल नहीं दिखते हैं। किसी भी रिकॉर्ड में ज़मीन के अधिग्रहण और कब्ज़े में याचिकाकर्ता की प्रत्यक्ष भागीदारी का जिक्र नहीं है।' अरविंद केजरीवाल ने सुप्रीम कोर्ट में बेल के लिए अपील तो की ही थी, साथ ही गिरफ्तारी को चुनौती भी दी थी। सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें सशर्त जमानत दी है, पर सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी काफी गंभीर है। सुप्रीम कोर्ट ने बेल अरविंद केजरीवाल को 10 लाख रुपये के मुचलके और दो जमानत राशियों के भुगतान पर जमानत दी है। अदालत ने केजरीवाल को यह भी हिदायत दी है कि वह इस मामले में कोई सार्वजनिक टिप्पणी नहीं करेंगे।

ट्रायल में ही दुर्ग-विशाखापट्टणम वंदे भारत ट्रेन पर पत्थरबाजी

पांच गिरफ्तार, कांग्रेस नेता का भाई भी शामिल

महासमुंद, 14 सितंबर (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ में वंदे भारत ट्रेन पर पथराव हुआ है। यह घटना शुक्रवार को उस समय हुई जब ट्रेन विशाखापट्नम से दुर्ग के बीच ट्रायल रन पर थी। पथराव के कारण ट्रेन के तीन कोच के शीशे टूट गए। रेलवे पुलिस ने इस मामले में कांग्रेस पार्षद के भाई सहित पांच लोगों को गिरफ्तार किया है। इस ट्रेन को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हरी झंडी दिखाने वाले थे। यह घटना शुक्रवार रात लगभग 9 बजे की है, जब वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन महासमुंद के बागबाहरा रेलवे स्टेशन से गुजर रही थी। इसी दौरान कुछ लोगों ने ट्रेन पर पथराव कर दिया। इस पथराव में सी2-10, सी4-1 और सी9-78 कोच के शीशे टूट गए। घटना की सूचना मिलते ही रेलवे पुलिस हरकत में आई और शनिवार को पांच आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया।

पुलिस के हाथ लोहे जैसे और दिल मोम जैसा

रिव्यू मीटिंग में रायपुर की कानून व्यवस्था पर बोले सीएम विष्णुदेव साय

रायपुर, 14 सितंबर (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने शुक्रवार को राज्य के पुलिस अधिकारियों के साथ दो दिवसीय बैठक की। रिव्यू मीटिंग के दूसरे दिन सीएम ने कहा कि अपराधियों के मन में कानून का भय हो तथा पीड़ितों को त्वरित न्याय मिले। सीएम ने कहा कि पुलिस के हाथ लोहे की तरह और दिल मोम जैसा होना चाहिए। वहीं, एसपी को लेकर कहा कि शहर में अवैध शराब, जुआ सट्टा और नशे की शिकायत मिलने पर वे ही जिम्मेदार होंगे।

दरअसल, प्रदेश में हो रहे क्राइम को रोकने, बेसिक पुलिसिंग और कानून व्यवस्था को लेकर शुक्रवार के दिन लंबी रिव्यू मीटिंग हुई। इसमें साय ने कहा कि अपराधियों के मन में कानून का भय हो तथा पीड़ितों को तुरंत न्याय मिले। आम जनता में पुलिस प्रशासन के प्रति विश्वास कायम रहे। बेवजह किसी नागरिक को परेशान न किया जाए। पुलिस का व्यवहार आम नागरिकों के साथ मित्रवत हो। पुलिस थानों का वातावरण ऐसा हो कि आम नागरिक को वहां आते समय सहयोग की उम्मीद हो।

सीएम ने कहा कि राज्य में अपराध पर नियंत्रण के लिए जिलाधिकारी और एसपी आपसी कोऑर्डिनेशन करते हुए प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करें। केंद्र सरकार ने दंड संहिता को बदल कर न्याय संहिता कर दिया है। इसका जमीनी क्रियान्वयन सुनिश्चित करते हुए पुलिस को इन नए कानूनों के अनुरूप कार्य करने के लिए स्वयं को ढालना होगा। हमारी सरकार सुशासन देने के लिए प्रतिबद्ध है और पिछले वर्षों की तुलना में अपराध की संख्या में कमी आई है।

समीक्षा बैठक में सीएम ने राज्य में नये सिरे से सोशल पुलिसिंग को बढ़ावा दिए जाने की वकालत की। साय ने काह कि सोशल पुलिसिंग से अपराधों को रोकने में मदद मिलेगी। लोगों को जागरूक करना और उन्हें इस बात का भरोसा दिलाना होगा कि पुलिस उनके साथ है। सोशल पुलिसिंग के साथ ही प्रदेश में अवैध शराब के परिवहन, बिक्री, जुआ सट्टा और गांजा तस्करी को रोकने के लिए अभियान चलाने के साथ दोषियों पर कानून के अनुसार कार्रवाई करने की बात कही। पुलिस समाज में अशांति फैलाने वालों, अफवाह फैलाने वालों पर कड़ी नजर रखें और उनके खिलाफ त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित करें। हत्या जैसे मामले में कार्रवाई में देरी नहीं होनी चाहिए तथा ऐसे मामलों में प्राथमिकता से त्वरित गति से कार्रवाई सुनिश्चित करें।

कांग्रेस संवाद कार्यक्रम में हुआ हंगामा

जिलाध्यक्ष और कार्यकारी अध्यक्ष के खिलाफ की गई नारेबाजी

गिरिडीह, 14 सितंबर (एजेंसियां)। गिरिडीह के होटल संगम गार्डन में कांग्रेस की ओर से संवाद आपके साथ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश कुमार उपस्थित थे। इस दौरान कार्यक्रम की शुरुआत के कुछ देर बाद हंगामा हो गया। इस दौरान जमुआ और बगोदर के कुछ कार्यकर्ताओं ने जिलाध्यक्ष और कार्यकारी अध्यक्ष पर अपेक्षा और मनमानी का लगाते हुए हंगामा के साथ नारेबाजी करने लगे। हंगामा में खुलकर गुटबाजी भी सामने आई। मौके पर हंगामा करनेवालों में जमुआ प्रखंड अध्यक्ष महशर इमाम ने कहा कि जिलाध्यक्ष और कार्यकारी अध्यक्ष लगातार कार्यकर्ता की उपेक्षा कर रहे हैं। 2019 के विधानसभा चुनाव में जमुआ में पार्टी प्रत्याशी दूसरे स्थान पर रही थी। इसके बाद भी जमुआ में एक भी बैठक नहीं हुई है। कहा कि लगातार उपेक्षा से कार्यकर्ता नाराज हैं, इस कारण हंगामा कर रहे हैं।

22 सितंबर से गिरिडीह में शुरु होगा परिवर्तन यात्रा

भाजपा लगा रही पूरी ताकत, केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी होंगे शामिल, तैयारी को लेकर बैठक

गिरिडीह, 14 सितंबर (एजेंसियां)। गिरिडीह भाजपा ज़िला कार्यालय में परिवर्तन यात्रा को सफल बनाने को लेकर गुरुवार को संगठनात्मक बैठक हुई। इसमें मुख्य रूप से पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सह राज्यसभा सांसद दीपक प्रसाद उपस्थित थे। बैठक में परिवर्तन यात्रा को सफल बनाने को लेकर विचार विमर्श किया गया। बैठक में पार्टी के कार्यकर्ता और पदाधिकारियों को कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई। जानकारी दी गई कि आगामी 22 सितंबर से भाजपा का गिरिडीह में परिवर्तन यात्रा की शुरुआत जमुआ विधानसभा क्षेत्र के झारखंडधाम से होगी।

जहां एक विशाल जनसभा का भी आयोजन किया जाएगा। जिसमें केंद्रीय पथ एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी के अलावा भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी, कोडरमा सांसद सह महिला बाल विकास मंत्री अन्नपूर्णा शामिल होगी। इसके अलावा 23 सितंबर को पूर्व केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी गांडेय में आयोजित परिवर्तन यात्रा में शामिल होगी और जनता से रुबरू होंगी। वहीं 24 सितंबर को केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह का धनवार में जनसभा के साथ रोड शो होगा।

एक और उत्पाद सिपाही अभ्यर्थी की हुई मौत

जमशेदपुर के बर्मामाइंस का था मुरामुल्ला सूर्या 52 मिनट में पूरी की दौड़, मैदान में हुआ बेहोश

रांची/जमशेदपुर, 14 सितंबर (एजेंसियां)। उत्पाद सिपाही नियुक्ति परीक्षा के दौड़ में एक और उम्मीदवार की मौत हो गई। मरने वाले उम्मीदवार का नाम मुरामुल्ला सूर्या है। वह जमशेदपुर के बर्मामाइंस का रहने वाला था। उसकी मौत आज अहले सुबह पांच बजे के करीब रिम्स में हो गई। प्राप्त जानकारी के मुताबिक मरने वाले छात्र की तबीयत दौड़ के क्रम में खराब हुई थी। जिसके बाद उसे रिम्स में भर्ती कराया गया था। मिली जानकारी के अनुसार मुरामुल्ला सूर्या के दौड़ का सेंटर रांची स्मार्ट सिटी में था। वह गुरुवार को दौड़ में शामिल होने आया था। उसके साथ दौड़े साथियों के मुताबिक उसने 52 मिनट में अपनी दौड़ पूरी कर ली थी। इसी बीच वह मैदान में ही बेहोश हो गया था। मौके पर उसकी जांच की गई। इसके बाद बेहतर इलाज के लिए उसे रिम्स रेफर किया गया। जहां इलाज के क्रम में मौत हो गई। डॉक्टरों ने ब्रेन स्ट्रोक को मौत की वजह माना है। हालांकि अभी आधिकारिक पुष्टि नहीं हो सकी है। अपने तीन भाईयों में मुरामुल्ला सूर्या सबसे बड़ा था। उसके घर का बोझ उसके ही कंधों पर था। उसके चले जाने से अब परिवार के सदस्यों की कमर ही टूट गई है। परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है। उत्पाद सिपाही के लिए राज्य के अलग-अलग सेंटर पर दौड़ कराए जा रहे हैं। हालांकि इस बार सेंटर्स पर कई तरह की सुविधा उम्मीदवारों को दी जा रही है। जानकारी के मुताबिक अब तक उत्पाद सिपाही नियुक्ति दौड़ में आधिकारिक रूप से 13 मौत हो चुकी है। सबसे अधिक मौत पलामू सेंटर पर हुई है। उम्मीदवारों के मौत की बात करें तो जगुआर में एक, गिरिडीह में दो, हजारीबाग में दो, पलामू में चार, सीटीसी मुसाबनी में एक मौत हुई है।

चेन छिनतई की घटना बढ़ी

तीन दिन में हुई तीन वारदात, छात्र से छीने मोबाइल फोन और चांदी का ब्रेसलेट

देवघर, 14 सितंबर (एजेंसियां)। देवघर शहर में चेन छिनतई की घटना में काफी इजाफा हुआ है। आए दिन शहर के गली मोहल्ले में घटना सुनने को मिलता है। बीते तीन दिन में चेन छिनतई की तीन घटना हो चुकी है। घटना के बाद पुलिस को सूचना भी दी जाती है, लेकिन पुलिस न चीजें बरामद कर पा रही हैं और न ही घटना पर लगाम लगा पा रही है। ऐसे में पुलिस के खिलाफ स्थानीय लोगों में काफी आक्रोश देखने को मिल रहा है। जानकारी के मुताबिक दो दिन पहले करणीबाद अंबे गार्डन के समीप एक महिला मॉर्निंग वॉक करने आई थी। बदमाशों ने गले से चेन छीन कर ले भागा। वहीं बरमसिया में मॉर्निंग वॉक करती महिला के साथ ऐसी ही घटना को अंजाम दिया गया। नगर थाना क्षेत्र के आंबेडकर पुस्तकालय के पास शुक्रवार की शाम एक छात्र से बदमाशों ने मोबाइल फोन व चांदी का ब्रेसलेट छीनकर भागने की कोशिश की। छात्र ने शोर मचाया, जिससे स्थानीय लोग एकत्रित होकर बदमाश को पकड़ लिया। बदमाश के पास से छात्र का मोबाइल फोन और चांदी का ब्रेसलेट बरामद हुआ। बदमाश अपना नाम शिव कुमार एवं घर सालोना टाढ बताया है। नगर थाने की पुलिस के पहुंचने पर लोगों ने अपराधी को सौंप दिया गया। पुलिस उससे पूछताछ कर रही है। छिनतई के शिकार बेलाबगान निवासी छात्र लिखित शिकायत दर्ज कराई है।

सरकार की लखपति दीदी योजना ने बना दिया 'लखपति दीदी'

कौन हैं छत्तीसगढ़ की कविता बराल?

सरगुजा, 14 सितंबर (एजेंसियां)। महिलाएं हमारे समाज की रीढ़ कही जातीं हैं लेकिन अक्सर उन्हें अपने सपनों को पूरा करने के लिए जीवन में भारी संघर्ष करना पड़ता है। अब, भारत सरकार की लखपति दीदी योजना ने महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए एक नई उम्मीद जगाई है। इस योजना के जरिए महिलाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है, जिससे वे अपने व्यवसाय की शुरुआत कर अपने पैरों पर खड़ी हो रही हैं।

ऐसी ही एक कहानी है अम्बिकापुर विकासखंड की रहने वाली कविता बराल की, जिन्होंने उदाहरण पेश करते हुए घरेलू कामकाज के साथ ही अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को इतना मजबूत कर दिया है कि अब इन्हें किसी के सामने हाथ फैलाने की जरूरत नहीं है। तो आईए जानते हैं कविता बराल की लखपति दीदी तक के सफर तक

पहुंचने की सक्सेस स्टोरी-

घर की माली हालत से लखपति दीदी बनने तक के सफर को जानने सरगुजा जिले के डिगमा गांव में, जहां हमने राह चलते एक व्यक्ति से जब लखपति दीदी कविता बराल का पता पूछा तो उसने बडे ही मुस्कुराते हुए हमसे कहा कि समूह वाली दीदी के बारे में पूछ रहे हैं, जो सबकी मदद करती हैं।

पता पूछकर हम पहुंचे उनके व्यवसायिक स्थल और उनके घर, जहां उन्होंने हमें अपने संघर्ष के बारे में बताया। बताते हुए वह काफी भावुक हुईं और सरकार से मिलने वाली योजनाओं के कारण लखपति दीदी का दर्जा प्राप्त करने की कहानी बताने लगीं।

परिवार ने किया फुल सपोर्ट

उन्होंने बताया कि वो अपने शादी के बाद जब ससुराल आईं तो उनके परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी और उनका ज्वाइंट परिवार था। इसके साथ ही वे सभी कच्चे मकान में ही रहा करते थे। धीरे-धीरे उन्हें ये एहसास होने लगा कि अगर ऐसा ही चलता रहा तो आगे और तकलीफ आ सकती है, जिसके बाद इन्होंने अपने आप को मजबूत बनाते हुए कुछ करने का मन बनाया। सबसे पहले अपने ससुर से कुछ करने की जिज्ञासा लेकर उनके पास पहुंची। ससुर ने उनका सपोर्ट करते हुए कुछ करने की बात की और मोटिवेट किया। इसके बाद कविता में एक अलग ही एनर्जी का संचार हो गया। उसी वक्त शासन की चल रही योजना के तहत स्वयं सहायता समूह से जुडने की बातें काफी तेजी से लोगों तक पहुंच रही थी, जिसे लेकर इन्होंने एक स्वयं सहायता समूह बनाने की ठान ली और इसकी शुरूआत कर दी।

ये बताती हैं कि शुरूआत में तो कोई समूह में नहीं जुड रहा था लेकिन धीरे धीरे समझाने के बाद दस लोगों का एक समूह बन गया, जिसका नाम साईं बाबा स्वयं सहायता समूह रखा गया। इसके बाद सभी ने ये फैसला लिया कि महीने में सभी पचास रूपए अपने समूह को मजबूत करने के लिये जमा करेंगी लेकिन इन महिलाओं के पास पचास रूपये भी महीने के जमा करने के लिये नहीं हो पाते थे। इन्होंने पन्द्रह रूपए सप्ताह के जमा करना शुरू किया और महीने के आखिरी में जिस भी सदस्य का पैसा कुछ कम होता था, वो उसे आखरी समय में पैसा दे देता था।

छत्तीसगढ़ एसआई भर्ती परीक्षा हाईकोर्ट ने खारिज की अपील

सीजे बोले-असफल परीक्षार्थी भर्ती निरस्त करने की अपील नहीं कर सकते, सिंगल बेंच का फैसला सही

बिलासपुर, 14 सितंबर (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ में सब इंस्पेक्टर भर्ती परीक्षा निरस्त करने की अपील हाईकोर्ट चीफ जस्टिस की डबल बेंच ने खारिज कर दी है। कोर्ट ने सिंगल बेंच के फैसले को सही बताया है। चीफ जस्टिस ने कहा कि, असफल परीक्षार्थी भर्ती निरस्त करने की अपील नहीं कर सकते हैं। हाईकोर्ट के इस फैसले से परीक्षा में चयनित उम्मीदवारों को बड़ी राहत मिली है। इससे पहले सिंगल बेंच ने भर्ती प्रक्रिया को 45 दिन में पूरा करने के लिए निर्देश दिया था। इसके बाद भी नियुक्ति आदेश नहीं जारी होने से नाराज अभ्यर्थी इन दिनों रायपुर में आंदोलन कर रहे हैं। दरअसल, हाईकोर्ट की सिंगल बेंच ने एसआई भर्ती परीक्षा 2018 में चयनित अभ्यर्थियों को 90 दिनों में नियुक्ति पत्र जारी करने का आदेश दिया है। साथ ही कोर्ट ने कहा है कि, प्लाटून कमांडर की भर्ती में महिला उम्मीदवारों को हटाया जाए। उनकी जगह वंचित पुरुष अभ्यर्थियों का फिजिकल टेस्ट लेकर मेरिट के आधार पर नियुक्ति आदेश जारी करें। भर्ती परीक्षा में असफल उम्मीदवारों ने हाईकोर्ट की सिंगल बेंच के फैसले के खिलाफ डिवीजन बेंच में अपील की थी। इसमें कहा गया था कि जब भर्ती के लिए विज्ञापन जारी किया गया था, जिसमें 975 पद रिक्त बताए गए थे। इसमें से 247 पद प्लाटून कमांडर के लिए आरक्षित था। इस आधार पर 1235 पुरुष उम्मीदवारों को परीक्षा में शामिल करना था। नियमानुसार प्लाटून कमांडर पद के लिए अलग से मैरिट सूची जारी करना था। महिला उम्मीदवार पात्र नहीं थे। इसके बाद भी उन्हें इस पद में शामिल किया गया, जिसकी वजह से पात्र पुरुष उम्मीदवार मुख्य परीक्षा से वंचित हो गए।

तहसीलदार का आरोप-मंत्री ने पैसे लेकर किए ट्रांसफर

रायपुर, 14 सितंबर (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ सरकार ने गुरुवार को राजस्व विभाग के 169 अफसरों का तबादला किया है। इसमें 55 तहसीलदार भी शामिल हैं। इसके बाद तहसीलदारों ने इसके खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। सिमगा के तहसीलदार नीलमणि दुबे ने राजस्व मंत्री पर पैसे लेकर ट्रांसफर करने का आरोप लगाया है। ट्रांसफर में क्राइटेरिया का पालन नहीं किया गया। नीलमणि ने आरोप लगाया कि यह सब राजस्व मंत्री टंकराम वर्मा के बंगले से हो रहा है। नीलमणि ने तहसीलदार अंजलि शर्मा के ट्रांसफर का भी जिक्र किया। इस पर अंजलि शर्मा ने कहा है कि उन्हें इससे कोई लेना-देना नहीं है। मेरी जानकारी के बिना मेरा नाम इस्तेमाल किया जा रहा है। दैनिक भास्कर ने इस संबंध ने मंत्री टंकराम वर्मा का पक्ष भी जानने का प्रयास किया, लेकिन उनसे संपर्क नहीं हो सका। महिला तहसीलदार का 9 महीने में 3 बार तबादला किया है। आरोप है कि जब उसने पारिवारिक कारणों से ट्रांसफर के लिए आवेदन किया तो 15 लाख रुपए मांगे गए। इसी तरह सिमगा तहसीलदार नीलमणि दुबे का 2 साल में 6 बार ट्रांसफर हो चुका है। खास बात यह है कि 4 माह में ही उनका 4 बार तबादला किया जा चुका है। वहीं एक अन्य तहसीलदार ने कहा कि, उन्हें बस्तर संभाग में 5 साल हो गए हैं। लगातार तीन वर्षों से दुर्गम अनुसूचित क्षेत्र में पदस्थ हैं। उनका नाम ट्रांसफर सूची में था, लेकिन कल जारी आदेश में उनका नाम गायब है। सिमगा तहसीलदार कनिष्ठ प्रशासनिक सेवा संघ के प्रदेश अध्यक्ष भी हैं। उन्होंने कहा कि, मंत्री महोदय कोई क्राइटेरिया बता दें कि 2 साल से ऊपर वाले का ट्रांसफर किया गया है या 3 साल के ऊपर वाले का किया गया है। ट्रांसफर पोस्टिंग को लेकर तो कोई नियम होगा, मंत्री जी उसे बताएं। उन्होंने कहा कि, अगर सरकार और शासन ही नियम-कानून नहीं मानेंगे तो यह बहुत बड़ी विडंबना है। ऐसे में प्रदेश में कैसे सुशासन आएगा? सुशासन केवल नीति और नियम बनाने से नहीं होता उसका पालन करने से सुशासन आता है। नीलमणि दुबे ने बताया कि 2 साल में मेरा 6 बार ट्रांसफर किया गया है। मेरा भी परिवार है, बच्चे हैं।

हर व्यक्ति जिसका ट्रांसफर एक-दो साल के अंदर लगातार हुआ है, वह अपने आप को प्रताड़ित महसूस कर रहा है। यह कैसी नीति है, जो ट्रांसफर पोस्टिंग को मंत्रियों को बिजनेस बनाने पर मजबूर कर देती है। संघ के अध्यक्ष ने कहा कि, हम हाईकोर्ट के माध्यम से अपनी बात रखेंगे। 3 महीने पहले 150 लोगों की सूची निकली थी। हमारी अपील पर उसे हाईकोर्ट ने निरस्त किया था। लोग विधानसभा चुनाव से 2-3 महीने पहले स्थनांतरित हुए थे।

झारखंड के 4 जिलों में बारिश का ऑरेंज अलर्ट

आकाशीय बिजली गिरने से 2 की मौत साइक्लोनिक सर्कुलेशन का प्रदेश में दिख रहा असर

रांची, 14 सितंबर (एजेंसियां)। मौसम विभाग ने आज चार जिलों में भारी बारिश का ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। रांची, रामगढ़, बोकारो और धनबाद में बहुत भारी बारिश हो सकती है। वहीं दुमका, गोड्डा, साहिबगंज, पाकुड़, गढ़वा और पलामू को छोड़ कर अन्य जिलों के लिए यलो अलर्ट जारी किया गया है। इन जिलों में हल्की बारिश की संभावना है। मौसम विभाग ने रविवार को रांची, खूंटी, पश्चिमी सिंहभूम, गुमला और सिमडेगा में कुछ स्थानों पर भारी बारिश का अलर्ट जारी किया गया है। इसके अलावा संथाल परगना के छह जिलों, कोडरमा, गिरिडीह और धनबाद को छोड़ कर दूसरे जिलों में भारी बारिश का पूर्वानुमान मौसम केंद्र ने किया है। 16 सितंबर को सिमडेगा, गुमला, लोहरदगा, लातेहार, गढ़वा और पलामू में कुछ स्थानों पर भारी बारिश का अनुमान है। साइक्लोनिक सर्कुलेशन का प्रदेश में असर दिख रहा है। वहीं शुक्रवार को आकाशीय बिजली की चपेट में आने से 2 लोगों की मौत हो गई है। मौसम वैज्ञानिक अभिषेक आनंद ने बताया कि साइक्लोनिक सर्कुलेशन और साउथवेस्ट मॉनसून झारखंड में सक्रिय है। साइक्लोनिक सरकुलेशन का असर राज्य में अच्छा खासा पड़ने वाला है। कुछ जिलों में तेज बारिश के साथ आकाशीय बिजली गिरने की आशंका जाहिर की गई है। रांची में पिछले 24 घंटे में हल्की बारिश हुई। वहीं, पिछले 24 घंटे में सबसे अधिकतम तापमान 37.7 डिग्री गोड्डा और सबसे कम न्यूनतम तापमान 24 डिग्री रांची का रहा। सबसे अधिक वर्षा 29.4 मिमी हजारीबाग में दर्ज की गई है। पलामू जिले के छत्तरपुर थाना क्षेत्र के कऊअल गांव में शुक्रवार की देर शाम आकाशीय बिजली की चपेट में आने से पुरुषोत्तम विश्वकर्मा (28वर्ष) की मौत हो गई। वे धान के खेत में गए थे। तभी बारिश के साथ आकाशीय बिजली गिरी। वहीं छत्तरपुर थाना क्षेत्र के नौडीहा (खजुरी) गांव के लालजी विश्वकर्मा की पत्नी चिंता देवी (50 वर्ष) की मौत हो गई। चिंता देवी शुक्रवार शाम को पशुओं को चरा रही थीं। इसी दौरान आकाशीय बिजली गिरी और उनकी मौत हो गई। आज के संभावित तापमान की बात करें तो देवघर, साहिबगंज में अधिकतम 28 व न्यूनतम 25 डिग्री, चतरा में अधिकतम 30 डिग्री व न्यूनतम 25 डिग्री, बोकारो, रामगढ़, रांची, खूंटी, गुमला में अधिकतम 28 डिग्री व न्यूनतम 25 डिग्री और पश्चिमी व पूर्वी सिंहभूम, सरायकेला में अधिकतम 31 डिग्री व न्यूनतम 25 डिग्री तापमान दर्ज किया जा सकता है।

नाबालिग रेप पीड़िता बोली-वीडियो वायरल करने की धमकी मिली

छत्तीसगढ़ में पड़ोसी ने किया रेप, पत्नी ने भी दिया साथ, रोते हुए एसपी ऑफिस पहुंची

बिलासपुर, 14 सितंबर (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में पड़ोसी ने 15 साल की नाबालिग लड़की से रेप की वारदात को अंजाम दिया। पीड़िता ने आरोप लगाया कि पुलिस ने शिकायत के 15 दिन बाद भी एफआईआर दर्ज नहीं की। इसके बाद परेशान होकर पीड़िता रोते हुए एसपी कार्यालय पहुंची। मामला सिविल लाइन इलाके का है। पीड़िता ने आरोप लगाया कि आरोपी के फोन से अश्लील वीडियो डिलीट करने पर मारपीट भी की। परिजनों ने जब चोट देखकर पूछा तो लड़की ने आप बीती बताई। पीड़िता का कहना है आरोपी की पत्नी ने भी अपने पति का साथ दिया है। लड़की की बात सुनकर परिजन उसे लेकर परिजन तत्काल थाने पहुंचे, लेकिन केस दर्ज नहीं हुआ। पीड़िता के मुताबिक, पुलिस ने कहा कि आरोपी के पकड़े जाने के बाद मामला दर्ज करेंगे। यह कहकर नाबालिग और उसकी मां को थाने से भगा दिया। रेप पीड़िता 15 दिन तक थाने का चक्कर काटते रही। इसके बाद भी कोई कार्रवाई नहीं की गई। नाबालिग की मां ने बताया कि गुरुवार को एसपी रजनेश सिंह से शिकायत के बाद एफआईआर दर्ज की गई है। नाबालिग ने बताया कि आरोपी आए दिन मारपीट करता था। अश्लील वीडियो वायरल करने की धमकी देकर आए दिन मिलने के लिए दबाव बनाता था।

मुठभेड़ में जवानों ने एक नक्सली को मार गिराया

सुकमा, 14 सितंबर (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ के सुकमा में शुक्रवार सुबह जवानों ने मुठभेड़ में एक नक्सली को मार गिराया। मारे गए नक्सली का शव बरामद हो गया है। शव के पास से ही भारी मात्रा में हथियार, विस्फोटक और अन्य सामग्री बरामद हुई है। शुक्रवार देर शाम सुकमा-बीजापुर बॉर्डर पर नक्सलियों ने सुरक्षाबलों के कैंप पर हमला किया था। जानकारी के मुताबिक, पुलिस को सूचना मिली थी कि, चिंतागुफा क्षेत्र में तुमालपाड़ की पहाड़ी पर नक्सली मौजूद हैं। इसके बाद जिला बल, डीआरजी और बस्तर फाइटर्स के जवानों को सर्च ऑपरेशन पर भेजा गया था। जवान जब नक्सलियों के ठिकाने पर पहुंचे तो माओवादियों ने फायरिंग शुरू कर दी। जवाबी कार्रवाई में एक नक्सली को ढेर किया गया है। सुरक्षाबलों ने मौके से एक पुरुष माओवादी का शव बरामद किया है। सूत्र बता रहे हैं कि मारा गया नक्सली एसीएम रैंक का है। फिलहाल इसकी पुष्टि नहीं हुई है। अफसरों का कहना है सर्च ऑपरेशन जारी है। जवान लौटेंगे तो ज्यादा जानकारी मिल पाएगी। इससे पहले सुकमा-बीजापुर बॉर्डर पर शुक्रवार रात नक्सलियों ने सुरक्षाबलों के कैंप पर हमला कर दिया। बताया जा रहा है कि जंगल की ओर से जमकर गोलीबारी की गई है। जवानों की जवाबी कार्रवाई में नक्सली भाग निकले। हमले में किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। जानकारी के मुताबिक, जगरगुंडा क्षेत्र के पूर्वती गांव में सीआरपीएफ, डीआरजी, एसटीएफ और कोबरा का संयुक्त कैंप हाल ही में खोला गया है।

बच्चों को मिलीं इंसास-एमएमके राइफल की गोलियां

छोकरा नाला में मछली पकड़ने गए थे बच्चे, पुलिस ने जब्त किए 84 कारतूस

रायपुर, 14 सितंबर (एजेंसियां)। रायपुर में मछली पकड़ने गए बच्चों को कारतूस का पैकेट मिला है। इसमें अलग-अलग बंदूक की 84 बुलेट मिले हैं। बताया जा रहा है कि यह गोलियां इंसास-एमएमके जैसे राइफल में लगती हैं। मामला तेलीबांधा के छोकरा नाला का है।

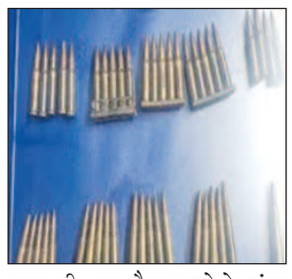

सिटी एएसपी लखन पटले बताया कि शुक्रवार शाम 7 बजे बच्चे मछली पकड़ रहे थे। कुछ देर बाद उन्हें एक बिनडोरी (पाउच) मिला। बच्चों ने उसमें बंदूक की गोलियां देखीं तो वह हड़बड़ा गए। बच्चों ने इसकी जानकारी आसपास के लोगों को दी। सूचना मिलने पर डायल-112 की टीम मौके पर पहुंच गई। जिस जगह से बच्चों को बुलेट्स मिली थी, वहां पर पुलिस टीम ने तलाश शुरू की। इस दौरान नाले के अंदर से पुलिस को और भी गोलियां मिली हैं। पुलिस ने सभी बुलेट्स जब्त कर लिए हैं। कारतूस 303 बोर, एमएमके और इंसास जैसी राइफल में लगती हैं। पुलिस कारतूस को जांच कर मेकिंग और बैच नंबर देख रही है। साथ ही टारगेट प्रैक्टिस वाले कारतूस के एंगल से भी जांच की जा रही है। बटालियन और पुलिस ट्रेनिंग सेंटर से जानकारी जुटाई रही है।

पुतिन पर सवाल पूछा तो पत्रकार को डांटने लगे बाइडेन

बोले- उनके बारे में ज्यादा नहीं सोचता, यूक्रेन को नहीं मिली रूस में मिसाइल दागने की इजाजत

वाशिंगटन, 14 सितंबर (एजेंसियां)। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन शुक्रवार को रूसी राष्ट्रपति पुतिन से जुड़ा सवाल पूछने पर एक ब्रिटिश पत्रकार पर बुरी तरह से नाराज हो गए। दरअसल, पुतिन ने पश्चिमी देशों को धमकी दी थी कि अगर यूक्रेन को लंबी दूरी तक हमला करने वाली मिसाइल का इस्तेमाल करने की अनुमति दी गई तो इसका अंजाम बहुत बुरा होगा।

रॉयटर्स की रिपोर्ट के मुताबिक स्काई न्यूज के एक रिपोर्टर ने इसे लेकर बाइडेन से पूछा कि क्या यूक्रेन को इसकी इजाजत मिल रही है? इस सवाल पर बाइडेन ने आपा खो दिया। उन्होंने कहा- 'जब तक मैं बोल रहा हूं तब तक खामोश रहें। यही ठीक होगा।'

इसके बाद भी जब रिपोर्टर ने अपना सवाल जारी रखा तो बाइडेन और नाराज हो गए। उन्होंने कहा- 'अब आपको चुप रहना ही होगा। मैं अब बयान देने जा रहा हूं।'

यह घटना उस समय हुई जब बाइडेन और ब्रिटेन के प्रधानमंत्री

कीर स्टार्मर वॉशिंगटन में व्हाइट हाउस में एक अहम बैठक कर रहे थे। बाइडेन ने बाद में कहा कि वह पुतिन के बारे में ज्यादा नहीं सोचते। बाइडेन ने कहा कि अमेरिका, यूक्रेन की मदद के लिए ब्रिटेन के साथ खड़ा रहेगा। उन्होंने कहा कि पुतिन इस जंग को कभी नहीं जीत पाएंगे। यूक्रेन के लोगों की जीत होगी। वहीं, ब्रिटिश पीएम ने कहा कि आने वाले कुछ दिन यूक्रेन के लिए अहम हो सकते हैं। आजादी की इस लड़ाई में हमें यूक्रेन का साथ देना होगा। स्टार्मर और बाइडेन के बीच व्हाइट हाउस में काफी देर बातचीत हुई मगर उन्होंने यूक्रेन को लंबी दूरी तक हमला करने वाली मिसाइल का इस्तेमाल करने की अनुमति देने को लेकर कोई संकेत नहीं दिया। जब एक पत्रकार ने स्टार्मर से पूछा कि क्या वे स्टॉर्म शैडो (लंबी दूरी तक हमला करने वाली मिसाइल) का इस्तेमाल करने के लिए बाइडेन को राजी कर पाए? इससे पहले रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने पश्चिमी देशों को चेतावनी दी थी कि अगर यूक्रेन को लंबी दूरी की मिसाइलों का इस्तेमाल करने की इजाजत मिली तो समझा जाएगा कि नाटो, रूस के खिलाफ जंग में उतर चुका है। पुतिन की इस धमकी के बाद जर्मनी के चांसलर ओलाफ शोल्ज ने कहा कि वे यूक्रेन को लंबी दूरी की मिसाइलें नहीं भेजेंगे। उन्होंने कहा कि जर्मनी इसे लेकर अपना फैसला नहीं बदलेगा। उन्होंने कहा कि जेलेंस्की इसके लिए लंबे समय से मांग कर रहे हैं। जर्मनी के उलट कनाडा ने यूक्रेन को उन्नत मिसाइल भेजे जाने का पूरा समर्थन किया है। शुक्रवार को पत्रकारों से बात करते हुए ट्रूडो ने कहा कि यूक्रेन की हिफाजत करने के लिए उसे इसका इस्तेमाल करने की अनुमति मिलनी चाहिए।

रिपोर्ट के मुताबिक यूक्रेन लंबे समय से अमेरिका और ब्रिटेन से लंबी दूरी तक हमला करने वाले हथियारों का इस्तेमाल करने की इजाजत मांग रहा है। यूक्रेन को लंबी दूरी की मिसाइलें दी गई हैं, लेकिन वह इसका इस्तेमाल दुश्मनों के खिलाफ अपनी ही सीमा के भीतर कर सकता है।

चीन ने कहा- गलवान समेत चार इलाकों से सेनाएं हटीं

दावा- लद्दाख में एलएसी पर देपसांग-डेमचोक का मुद्दा अनसुलझा, 3 साल में कोई सुधार नहीं

बीजिंग, 14 सितंबर (एजेंसियां)। चीन के विदेश मंत्रालय ने कहा है कि पूर्वी लद्दाख में लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल (एलएसी) पर गलवान घाटी समेत 4 इलाकों से दोनों देशों की सेनाएं हटी हैं। चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता माओ निंग के कहा कि बॉर्डर पर हालात स्थिर और कंट्रोल में हैं। चीनी विदेश मंत्रालय का यह बयान एनएसए अजीत डोभाल की चीनी विदेश मंत्री वांग यी से रूस में मुलाकात के बाद आया है। इससे पहले गुरुवार को विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा था कि पूर्वी लद्दाख में गतिरोध के 75% मामले सुलझा लिए गए हैं।

हालांकि, एएनआई ने एक रिपोर्ट में सूत्रों के हवाले से दावा किया है कि पूर्वी लद्दाख में देपसांग और डेमचोक का मसला अभी भी अनसुलझा है। पिछले 3 साल में दोनों पक्षों के बीच इन पॉइंट्स को लेकर कोई डेवलपमेंट नहीं हुआ है। एनएसए अजीत डोभाल ने गुरुवार 12 सितंबर को रूस में बीआरआईसीएस देशों के एनएसए की मीटिंग के दौरान

चीनी विदेश मंत्री वांग यी से मुलाकात की थी। इस दौरान अजीत डोभाल ने दोनों देशों के बीच संबंधों को सामान्य करने लिए सीमा पर शांति और स्थिरता बनाए रखने पर जोर दिया था। उन्होंने वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) का सम्मान करने के लिए भी कहा। इस बैठक में दोनों देशों ने जल्द से जल्द बाकी इलाकों से भी सेना की वापसी में तेजी लाने पर सहमति जताई।

एनएसए डोभाल ने जोर देते हुए कहा कि दोनों देशों को द्विपक्षीय समझौते, प्रोटोकॉल और आपसी सहमतियों का पूरी तरह से पालन करना चाहिए। जिनेवा में एक समिट के दौरान बात करते हुए जयशंकर ने भी चीन के मुद्दे पर बयान दिया था। उन्होंने कहा था कि 2020 में चीन और भारत के बीच गलवान में हुई झड़प ने दोनों देशों के रिश्तों को बुरी तरह प्रभावित किया है। सीमा पर हिंसा होने के बाद या नहीं हो सकता कि इससे दोनों देशों पर असर नहीं पड़ेगा। दोनों देशों के बीच बातचीत जारी है। सीमा पर दोनों देशों की सेनाओं का एक-दूसरे के आमने-सामने होना एक बड़ा मुद्दा है। अगर सीमा विवाद का समाधान हो जाता है, तो भारत-चीन संबंधों में सुधार संभव है। भारतीय और चीनी सेनाओं के बीच मई 2020 से टकराव चल रहा है। दोनों देशों के बीच सीमा विवाद का अभी तक कोई नतीजा नहीं निकला है। हालांकि, दोनों देशों की सेनाएं एलएसी के कई पॉइंट्स से अलग हो गई हैं। जून 2020 में गलवान घाटी में हुई हिंसक झड़प के बाद दोनों देशों के संबंध भी बिगड़े।

भारत हमेशा यह कहता रहा है कि जब तक बॉर्डर एरिया में शांति नहीं होगी, चीन के साथ उसके संबंध सामान्य नहीं हो सकते। दोनों देशों की सेनाओं के बीच सीमा पर टकराव विवाद को हल करने के लिए अब तक कोर कमांडर-लेवल की 21 दौर की चर्चा हो चुकी है। 15 जून 2020 को चीन ने ईस्टर्न लद्दाख के सीमावर्ती इलाकों में एक्सरसाइज के बहाने सैनिकों को जमा किया था। इसके बाद कई जगह पर घुसपैठ की घटनाएं हुई थीं।

चीन बनाम अमेरिका की लड़ाई का शिकार बना पाकिस्तान

'इंडिया किलर' शाहीन-3 परमाणु मिसाइल को बड़ा झटका

इस्लामाबाद, 14 सितंबर (एजेंसियां)। भारत के आखिरी छोर तक मिसाइल दागने की सनक लिए बैठे पाकिस्तान को अमेरिका ने बड़ा झटका दिया है। अमेरिका ने चीन की कंपनयिों के खिलाफ कड़े प्रतिबंध लगा दिए हैं जो पाकिस्तान के मिसाइल कार्यक्रम से जुड़ी हुई थीं। अमेरिका ने मिसाइल तकनीक के अप्रसार के अभियान के तहत यह कदम उठाया है। अमेरिका ने एक बयान जारी करके कहा है कि वह चीनी शोध संस्थान पर प्रतिबंध लगा रहा है। इस संस्थान पर आरोप है कि वह पाकिस्तान के मिसाइल कार्यक्रम को उपकरणों की सप्लाई कर रहा है। बताया जा रहा है कि चीनी संस्थान पाकिस्तान के शाहीन-3 मिसाइल, अबाबील सिस्टम और संभावित लंबी दूरी तक मार करने वाली मिसाइल के लिए रॉकेट मोटर टेस्टिंग के उपकरण मुहैया करा रहा था। पाकिस्तान का दावा है कि शाहीन मिसाइल की रेंज 2750 किमी है और यह भारत के किसी भी शहर को परमाणु बम या परंपरागत विस्फोटक से निशाना बना सकती है।

अमेरिकी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता मैथ्यू मिलर ने कहा कि पाकिस्तान के राष्ट्रीय विकास परिसर और बीजिंग के आटोमेशन फॉर मशीन बिल्डिंग शोध संस्थान के बीच यह सहयोग चल रहा था। शाहीन-3 एक दो स्टेज वाली मिडियम रेंज की बलिस्टिक मिसाइल है जो ठोस ईंधन से चलती है। यह पाकिस्तान के हथियारों के जखीरे में सबसे लंबी दूरी तक मार करने वाली मिसाइल है। वहीं दूसरी ओर अबाबील मिसाइल 2200 किमी तक मार कर सकती है और इसमें तीन चरण हैं। अमेरिका ने मिसाइल तकनीक सीमा के तहत चीन और पाकिस्तान की कई कंपनियों पर प्रतिबंध लगाया है। अमेरिका ने कहा कि यह कदम दिखाता है कि वह हथियारों का प्रसार करने वाले किसी भी देश या कंपनी को निशाना बनाएगा।

अमेरिका के इस कदम का चीन ने कड़ा विरोध किया है। वॉशिंगटन में चीनी दूतावास ने कहा कि चीन इन एकतरफा प्रतिबंधों का कड़ा विरोध करता है। चीन अपनी कंपनियों और लोगों की पूरी तरह से रक्षा करेगा। अभी कुछ समय पहले ही अमेरिका ने पाकिस्तान के मिसाइल कार्यक्रम से जुड़ी चीनी और बेलारूस की कंपनियों पर प्रतिबंध लगाया था। अमेरिका ने कहा कि इन कंपनियों ने पाकिस्तान की लंबी दूरी तक मार करने वाली मिसाइलों के लिए उपकरणों की सप्लाई की।

भूस्खलन से उठी 650 फीट ऊंची सुनामी

9 दिन तक पृथ्वी पर लगे झटके वैज्ञानिकों ने रहस्य का किया खुलासा

ग्रीनलैंड, 14 सितंबर (एजेंसियां)। पृथ्वी पर पिछले साल एक आश्चर्यजनक भूकंपीय घटना देखने को मिली थी। 9 दिनों तक इससे पृथ्वी हिली थी। अब एक शोधकर्ता ने बताया कि इसके पीछे ग्रीनलैंड फजॉर्ड में बर्फ पिघलने के कारण पैदा हुई सुनामी थी। साइंटिफिक जर्नल साइंस में हाल ही में छपी एक रिपोर्ट के मुताबिक सितंबर 2023 में दर्ज किए गए झटके ग्रीनलैंड के सुदूर पूर्व में डिक्सन फजॉर्ड में आगे और पीछे हिलती हुई विशाल लहरों से पैदा हुए थे। रिपोर्ट के लेखकों में से एक डेनमार्क और ग्रीनलैंड के भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के क्रिस्टियन स्वेनविग ने बताया, 'इस घटना के बारे में पूरी तरह से अनोखी बात यह है कि भूकंपीय संकेत कितनी देर रहे और उनकी फ्रीक्वेंसी कितनी स्थिर रही।'

उन्होंने कहा, 'अन्य भूस्खलन और सुनामी से भी भूकंपीय संकेत निकलते हैं। लेकिन केवल कुछ घंटों के लिए और बहुत ही स्थानीय स्तर पर। लेकिन इसे वैश्विक स्तर पर पूरे अंटार्कटिक तक देखा गया।' इस घटना ने शुरू में वैज्ञानिकों को हैरान कर दिया। इसे अज्ञात भूकंपीय वस्तु कहा गया, जिसका स्रोत भूस्खलन माना जा रहा था। सितंबर 2023 में 882 मिलियन क्यूबिक फीट चट्टान और बर्फ टूटकर फ्योर्ड में गिर गई।

इतनी विशाल चट्टान के अचानक गिरने से भूस्खलन के कारण इसके केंद्र में 650 फीट ऊंची सुनामी पैदा हो गई। यहां से लगभग 65 किमी दूर 10-12 फीट की ऊंचाई वाली सुनामी की लहरों ने एला द्वीप पर एक रिसर्च बेस को तबाह कर दिया। पृथ्वी विज्ञान में डॉक्टरेट और रिपोर्ट में शामिल वैज्ञानिक स्टीफन हिक्स ने बीबीसी न्यूज को बताया, 'जब सहकर्मियों ने पिछले साल पहली बार इसका संकेत देखा तो यह भूकंप जैसा नहीं लग रहा था।

सुनीता विलियम्स स्पेस स्टेशन से अमेरिकी चुनाव में वोट डालेंगी

पृथ्वी से 400 किमी दूर से प्रेस कॉन्फ्रेंस की, कहा- मुझे स्पेस में रहना पसंद

वाशिंगटन, 14 सितंबर (एजेंसियां)। 100 दिन से अंतरिक्ष में फंसीं भारतीय मूल की एस्ट्रोनॉट सुनीता विलियम्स और उनके साथी बुच विलमोर ने इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन (आईएसएस) से एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की। यह भारतीय समयानुसार शुक्रवार देर रात 12.15 बजे से हुई। सुनीता और बुच ने कई सवालों के जवाब दिए। दोनों ने कहा कि वे अमेरिकी चुनाव में स्पेस से वोटिंग करेंगे।

वोटिंग को लेकर पूछे गए एक सवाल के जवाब में बुच ने कहा, 'उन्होंने आज ही वोट देने से जुड़ी चुनावी प्रक्रिया शुरू की है। यह एक जरूरी ड्यूटी है। नासा इस पर काम कर रहा है कि कैसे हम वोट दे सकें। सुनीता विलियम्स ने कहा कि वह स्पेस से वोटिंग करने को लेकर

उत्साहित हैं। 400 किलोमीटर दूर स्पेस सेंटर से सुनीता और बुच ने कहा कि उन्होंने अमेरिकी चुनाव में वोट डालने के लिए नासा से पोस्टल बैलट का अरेंजमेंट करने की रिक्वेस्ट की है। सुनीता और बुच ने 5 जून को स्पेस स्टेशन के लिए उड़ान भरी थी। वे 6 जून को अंतरिक्ष स्टेशन पहुंचे थे। इन्हें 13 जून को वापस आना था। लेकिन, नासा के बोइंग स्टारलाइनर स्पेसक्राफ्ट में तकनीकी खराबी के कारण इनकी वापसी टाल दी गई। अब दोनों के 2025 में ही वापस आने की संभावना है।

सुनीता और विल्मोर ने क्या-क्या कहा

सुनीता ने कहा कि खराब हो चुके स्टारलाइनर को उनके बिना आईएसएस से रवाना होते देखना दुखदायी था। हालांकि, उन्हें ऐसे हालात में रहने की ट्रेनिंग मिली है। उन्होंने कहा, 'मुझे स्पेस में रहना बहुत पसंद है। ये मेरी पसंदीदा जगहों में से एक है।'

सुनीता ने कहा कि आईएसएस उनके लिए खुशी की जगह है। अगर जरूरत पड़ती है तो हम यहां 8 महीने, 9 या 10 महीने भी रुक सकते हैं। लेकिन, परिवार और पेट डॉग्स की याद आती है।

सुनीता ने कहा कि वह एक ही मिशन पर दो अलग-अलग अंतरिक्ष यान उड़ाने को लेकर उत्साहित हैं। उन्होंने कहा, "हम टेस्टर हैं, यही हमारा काम है।"

आसमान में होंगे दो चंद्रमा!

सितंबर से नवंबर तक पृथ्वी को मिलेगा नया मिनी मून

वॉशिंगटन, 14 सितंबर (एजेंसियां)। सौर मंडल में कई ग्रह हैं, जिनके एक से ज्यादा चंद्रमा होते हैं। शनि के तो 146 ज्ञात चंद्रमा हैं। लेकिन पृथ्वी के पास एक ही चंद्रमा है। वैज्ञानिकों का कहना है कि जल्द ही एक अस्थायी मिनी मून हमें मिल सकता है। यानी तब पृथ्वी के पास कुछ समय के लिए दो चंद्रमा होंगे। यह एक दुर्लभ खगोलीय घटना होगी, जो पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण की ताकत दिखाएगा। लेकिन यह चंद्रमा ऐसा नहीं होगा, जैसा हम आसमान में देखते हैं। बल्कि यह एक एस्टेरॉयड के रूप में बहुत छोटा होगा। मिनी-चंद्रमा बनाने वाले एस्टेरॉयड का नाम 2024 पीटी5 होगा। इस एस्टेरॉयड को 7 अगस्त 2024 को खोजा गया है। इसका व्यास लगभग 10 मीटर है। 29 सितंबर से 25 नवंबर कर के लिए इसे पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण पकड़ लेगा। इस दो महीने की अवधि के दौरान एस्टेरॉयड पृथ्वी का चक्कर लगाएगा। लेकिन यह पृथ्वी की एक परिक्रमा नहीं कर पाएगा। 25 नवंबर 2024 के बाद यह पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से बाहर निकल जाएगा और एक बार फिर सूर्य की परिक्रमा करने लगेगा। अमेरिकन एस्ट्रोनॉमिकल सोसायटी की ओर से इससे जुड़ा पेपर प्रकाशित हुआ है, जिसमें शोधकर्ताओं ने निष्कर्षों का विवरण दिया। पेपर में लिखा है, 'नियर अर्थ ऑब्जेक्ट यानी पृथ्वी के निकट की वस्तुएं घोड़े के नाल जैसे पथ का अनुसरण करती हैं।

पोप बोले- अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में कम शैतानी उम्मीदवार चुनें

कहा- एक प्रवासियों को निकालता है दूसरा अबॉर्शन का समर्थक, दोनों ही जीवन के खिलाफ

वाशिंगटन, 14 सितंबर (एजेंसियां)। दुनिया के सबसे बड़े ईसाई धर्मगुरु पोप फ्रांसिस ने राष्ट्रपति चुनाव में अमेरिकी कैथोलिक ईसाइयों को कमला हैरिस और डोनाल्ड ट्रम्प में से 'कम शैतानी उम्मीदवार' को चुनने की सलाह दी है।

एशिया के चार देशों के दौरे से रोम वापस लौटते समय फ्रांसिस ने शुक्रवार को प्लेन में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इसमें उन्होंने बिना नाम लिए कमला और ट्रम्प की आलोचना की। पोप ने कहा, "वोट न करना बुरी बात है। बस आपको वोटिंग के समय कम शैतानी उम्मीदवार को चुनना होगा। कम शैतानी कौन है? वह महिला (कमला) या वह सज्जन (ट्रम्प)? मैं नहीं जानता। हर किसी को अपने विवेक का इस्तेमाल कर इसकी पहचान

करनी होगी।" पोप ने कहा कि दोनों ही उम्मीदवार जीवन के खिलाफ हैं। चाहे वह (ट्रम्प) हों जो प्रवासियों को देश से बाहर निकालते हों, या कमला हैरिस, जो बच्चों को गर्भ में मारने का समर्थन करती हैं।

पोप ने कहा कि प्रवासियों को देश से बाहर निकालना एक 'गंभीर पाप' है। उन्होंने कहा कि प्रवासियों को भगाना और उन्हें बेहतर जीवन जीने से रोकना कहीं से ठीक नहीं है। यह एक तरह की नीचता है। इससे पहले पोप फ्रांसिस ने 2016 में भी ट्रम्प पर प्रवासियों के स्टैंड को लेकर निंदा की थी। उन्होंने कहा था कि जो कोई भी प्रवासियों को बाहर रखने के लिए दीवार बनाता है वह 'सच्चा ईसाई' नहीं है। पोप पहले भी अबॉर्शन के मुद्दे पर कई बार टिप्पणी कर चुके हैं। उन्होंने अक्टूबर 2018 में कहा था कि किसी भी समस्या का हल निकालने के लिए मानव जीवन को खत्म करना सही नहीं है। चाहे उसकी उम्र कितनी भी कम क्यों न हो।

पोप फ्रांसिस से गाजा जंग को लेकर भी सवाल पूछा गया। उन्होंने ने कहा, "जब आप मारे गए बच्चों के शव देखते हैं, जब आप सुनते हैं कि स्कूलों पर बमबारी की गई है तो यह सुनकर बहुत दुख होता है। यह बहुत भयानक है।"

बांग्लादेश में हिंदुओं को न्याय दिलाने में फेल हुए मोहम्मद यूनुस

हिंदू संगठनों ने 8 मांगों के साथ किया प्रदर्शन- कहा अपनी जमीन नहीं छोड़ेंगे

ढाका, 14 सितंबर (एजेंसियां)। बांग्लादेश की मोहम्मद यूनुस सरकार कट्टरपंथियों पर एक्शन लेने के चाहे जितने दावे करे, लेकिन इसमें यह पूरी तरह फेल हुई है। यही कारण है कि बांग्लादेश में हिंदुओं को अपनी सुरक्षा के लिए सड़कों पर उतरना पड़ रहा है। पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना की सरकार 5 अगस्त को गिर गई थी। इसके बाद हिंदुओं के खिलाफ हिंसा हुई। शुक्रवार को राजधानी ढाका और बांग्लादेश की वाणिज्यिक राजधानी चटगांव में हजारों हिंदू सड़कों पर उतरे। बारिश के बावजूद प्रदर्शनकारियों ने आठ सूत्री मांगों वाले पोस्टर हाथ में ले रखे थे। इसमें हमलावरों को फास्ट ट्रैक ट्रिब्यूनल के जरिए सजा देने की मांग की गई है। प्रदर्शन में बच्चे और महिलाएं भी अपने अधिकारों के लिए शामिल हुए। प्रदर्शन से ठीक दो दिन पहले मोहम्मद यूनुस ने सरकारी टेलीविजन पर कहा था कि किसी को भी धार्मिक सद्भाव को ठेस पहुंचाने की इजाजत नहीं मिलनी चाहिए। चटगांव में हिंदुओं ने अल्पसंख्यक मामलों से निपटने के लिए एक अलग मंत्रालय की मांग की।

अल्पसंख्यकों के लिए सीटें आरक्षित करने की मांग और छात्रों के विरोध प्रदर्शन के लीड करने वालों को उनके साथ बैठने को कहा। उन्हें कार्रवाई के लिए 15 दिनों का समय दिया गया है। प्रदर्शनकारियों ने मुआवजा और पुनर्वास की मांग करते हुए कहा कि जब तक उनकी डिमांड पूरी नहीं हो जाती तब तक वे वापसी नहीं करेंगे। बांग्लादेश में हिंदू जब भी अपने अधिकारों की आवाज उठाते हैं तो उन्हें तरह-तरह के आरोपों का सामना करना पड़ता है। उन्होंने जोर देकर कहा कि वे किसी एजेंट के रूप में काम नहीं कर रहे हैं। चटगांव में महिलाओं समेत प्रदर्शनकारी दोपहर तीन बजे जमाल खान क्षेत्र में इकट्ठा हुए। खुद को बंगाली बताते हुए उन्होंने घोषणा की कि वह इस जमीन को नहीं छोड़ेंगे। कुछ प्रदर्शनकारियों ने मीडिया की भूमिका पर नाराजगी जताई। उन्होंने कहा कि मेन स्ट्रीम मीडिया ने उनकी आवाज नहीं सुनी। प्रदर्शनकारियों ने ढाका में शाम 4:30 बजे के करीब इसी तरह की मांगों के साथ ऐतिहासिक शाहबाग चौराहे को घेर लिया। इससे यातायात बाधित हो गया।

अल्बर्ट आइंस्टीन का पत्र 32 करोड़ रुपये में नीलाम

दुनिया के सबसे प्रभावशाली पत्र में ऐसा क्या है

वॉशिंगटन, 14 सितंबर (एजेंसियां)। महान भौतिक विज्ञानी अल्बर्ट आइंस्टीन का हस्ताक्षरित पत्र एक नीलामी में 32 करोड़ रुपये में नीलाम हुआ है। यह पत्र आइंस्टीन ने साल 1939 में अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति फ्रैंकलिन रूजवेल्ट को भेजा था। इस पत्र में आइंस्टीन ने परमाणु हथियारों के विकास को लेकर चेतावनी दी थी। यह पत्र न्यूयॉर्क में फ्रैंकलिन डी रूजवेल्ट की लाइब्रेरी से मिला था।

इस पत्र में अल्बर्ट आइंस्टीन ने अमेरिका के राष्ट्रपति को चेताते हुए बताया था कि जर्मनी परमाणु हथियारों का विकास कर रहा है। पत्र में आइंस्टीन ने बताया कि 'परमाणु भौतिकी में हाल ही में जो काम किया गया है, उससे

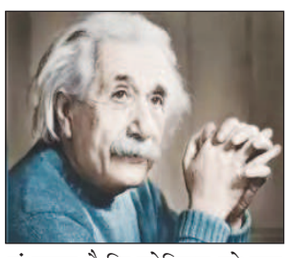

संभावना है कि यूरेनियम को एक नए और अहम ऊर्जा स्त्रोत में तब्दील किया जा सकता है।' आइंस्टीन ने चेताते हुए कहा कि 'इस ऊर्जा को बेहद ताकतवर विस्फोटक बनाने में इस्तेमाल किया जा सकता है।

आइंस्टीन ने इसी पत्र में अमेरिकी सरकार से भी परमाणु फ्यूजन को लेकर रिसर्च करने और परमाणु बम बनाने की सलाह दी थी।

'दुनिया के सबसे प्रभावशाली पत्रों में से एक'

आइंस्टीन के पत्र की नीलामी करने वाली कंपनी क्रिस्टीज से जुड़े वरिष्ठ विशेषज्ञ पीटर क्लारनेट ने इस पत्र को 'दुनिया के इतिहास का सबसे प्रभावशाली पत्रों में से एक' करार दिया।

इस पत्र को आइंस्टीन ने साल 1939 की गर्मियों में लिखा था। साल 2002 में माइक्रोसॉफ्ट के सह-संस्थापक पॉल एलन ने 21 लाख डॉलर में एक कलेक्शन खरीदा था।

आइंस्टीन का यह पत्र भी उसी कलेक्शन का हिस्सा था। इससे पहले यह पत्र प्रकाशक मैल्कम फॉर्ब्स के पास था, जिसे मैल्कम फोर्ब्स ने हंगरी के भौतिक विज्ञानी लियो जिलार्ड से खरीदा था।

पड़ोसियों को सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखना चाहिए

भारत से संबंधों पर बोले जमात के डिप्टी अमीर

ढाका, 14 सितंबर (एजेंसियां)। बांग्लादेश की जमात-ए-इस्लामी पार्टी ने कहा कि ढाका और नई दिल्ली को क्षेत्र में शांति व स्थिरता बनाए रखने के लिए सौहार्दपूर्ण ढंग से काम करना चाहिए। पार्टी के डिप्टी अमीर सैयद अब्दुल्ला मोहम्मद ताहिर ने एक इंटरव्यू में कहा कि बांग्लादेश इसको लेकर हमेशा ईमानदार रहा है। ताहिर ने कहा, कोई भी अपने पड़ोसियों को नहीं बदल सकता है। इसलिए, सभी पड़ोसियों को सौहार्दपूर्ण और सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखना चाहिए, ताकि शांति और स्थिरता बनी रहे।

इमरान की पार्टी के गिरफ्तार सांसदों के लिए नेशनल असेंबली की लॉज होंगी उप-जेल

स्पीकर का एलान

इस्लामाबाद, 14 सितंबर (एजेंसियां)। पाकिस्तान की नेशनल असेंबली के स्पीकर ने यहां संसद लॉज को जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पार्टी के सांसदों के लिए उप-जेल घोषित किया। गौरतलब है, हाल ही में इन सांसदों को आतंकवाद विरोधी अधिनियम और हाल ही में लागू किए गए शांतिपूर्ण सभा तथा सार्वजनिक व्यवस्था अधिनियम 2024 के तहत गिरफ्तार किया गया था।

नेशनल असेंबली सचिवालय के एक अधिकारी ने शुक्रवार को गृह मंत्रालय के सचिव को लिखे पत्र में कहा, 'मुझे हाल ही में गिरफ्तार किए गए 10 पीटीआई सांसदों के संबंध में नेशनल असेंबली के स्पीकर द्वारा 11

सितंबर को जारी किए गए आदेश का संदर्भ देने का निर्देश दिया गया है ताकि वे राष्ट्रीय असेंबली के 9वें सत्र की बैठक में भाग ले सकें। स्पीकर ने प्रत्येक विधानसभा बैठक के बाद सांसदों को हिरासत में रखने के लिए इस्लामाबाद स्थित संसद लॉज को उप-जेल घोषित कर दिया है।' संगजानी में पार्टी की सार्वजनिक सभा के बाद विभिन्न आरोपों में गिरफ्तार किए गए पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के सांसद शेर अफजल खान, मलिक मोहम्मद आमिर डोगर, मोहम्मद अहमद चट्ठा, मखदून जैन हुसैन कुरैशी, वकास अकरम, जुबैर खान वजीर, अवैस हैदर जाखड़, सैयद शाह अहद अली शाह, नसीम अली शाह और यूसुफ खान हैं। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि सांसदों को संसद लॉज में उन्हें आवंटित कमरों में हिरासत में रखा गया था।

बाद में, इन सांसदों को संगजानी और नून पुलिस थानों में विभिन्न आरोपों के तहत दर्ज मामलों के सिलसिले में गिरफ्तार किया गया । उन्होंने आगे बताया कि उप-जेलों के भीतर और बाहर कोई विशेष व्यवस्था नहीं की गई है और न ही कोई विशेष तैनाती है क्योंकि पुलिस पहले से ही वहां मौजूद है। उन्होंने कहा कि गृह सचिव को जारी स्पीकर के लिखित निर्देशों के तहत, आवंटित कमरों को उप-जेल घोषित किया गया था और अब तक, इस संबंध में राजधानी प्रशासन या पुलिस से कोई आवश्यक अधिसूचना जारी नहीं की गई है।

पाकिस्तान की नेशनल असेंबली (एनए) के स्पीकर अयाज सादिक ने बुधवार को पांच सुरक्षा अधिकारियों को निलंबित किया था। यह कार्रवाई संसद भवन से विपक्षी सांसदों की गिरफ्तारी के मामले में की गई थी। ये सांसद जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पार्टी से जुड़े हैं।

लड़की बनकर हाईवे पर खड़े होते लड़के, फिर करते लूट

> झाड़ियों में ले जाकर करते थे मारपीट > सरगना का भागते हुए पैर टूटा

उदयपुर, 14 सितंबर (एजेंसियां)। उदयपुर-अहमदाबाद नेशनल हाइवे पर लूटपाट करने वाली गैंग को पकड़ा गया है। गैंग ज्यादातर ट्रक ड्राइवरों को निशाना बनाते थे। एक सदस्य लड़की के कपड़े पहनकर ट्रक को रूकवाता था। इसके बाद बातों में फंसाकर झाड़ियों में ले जाकर लूट करता था। उदयपुर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) गोपाल स्वरूप मेवाड़ा ने बताया- उदयपुर शहर के गोवर्धनविलास थाना पुलिस ने बदमाशों को खरपीणा में लूट की योजना बनाते हुए पकड़ा है। पूछताछ में गैंग ने कई वारदात करना कबूला है। पुलिस ने गैंग के 6 बदमाशों को पकड़ा है। उनके कब्जे से बाइक, महिला के कपड़े, 4 छुरी, रस्से, टार्च, हंटर, लट्ठ, मिर्ची पाउडर और लूटे गए 6 मोबाइल को जब्त किया है।

लूटपाट करने से पहले ही पकड़ा

गोवर्धन विलास थानाधिकारी भवानी सिंह राजावत ने बताया- हाईवे पर रात में वाहन चालकों से लगातार लूट की घटना होने पर पुलिस ने गश्त और निगरानी शुरू की थी। इस बीच पुलिस को सूचना मिली कि गैंग के कुछ लड़के खरपीणा में लूटपाट की योजना बना रहे हैं। मुखबीर के बताए गए स्थान से कुछ दुरी पर जाकर रैकी की। तब कुछ लड़के हाईवे के किनारे झाड़ियों में बैठकर लूटपाट की योजना बनाते मिले। पुलिस ने उन्हें घेरकर पकड़ा।

गैंग के सरगना का टूटा पैर

थानाधिकारी ने बताया- गैंग के डागल फला खारा टीडी निवासी नारायण खराड़ी (19), गोरेला नाई हाल खरपीणा निवासी मनीष उर्फ मनीषा गमेती (19), नाई थाना का गौरेला निवासी मनीष गमेती (18), गणगौर फला खरपीणा निवासी शांतिलाल खराड़ी (18), कानूवाड़ा फला बिलखाईदरा केसरियाजी निवासी गोविंद कलासुआ (21) और बावलवाड़ा थाना क्षेत्र के काकण सागवाड़ा फला निवासी नारायण पटेला (35) को पकड़ा। गैंग का सरगना गोविंद कलासुआ और मनीष है। पुलिस ने दबिश दी तो गोविंद ने भागने की कोशिश की। इस दौरान गिरने से उसका पैर टूट गया।

लड़की बनकर करता था लूट

थानाधिकारी ने बताया कि गैंग का सरगना गोविन्द मीणा और मनीष उर्फ मनीषा है।

सभी एक गैंग बनाकर नेशनल हाईवे पर वाहन चालकों के साथ लूटपाट की घटनाओं को अंजाम देते है। मनीष रात के समय लड़की के कपड़े पहनकर हाईवे के किनारे खड़ा हो जाता था। गोविंद वाहनों पर टॉर्च से रुकने का इशारा करता था। वाहन के रुकने के बाद मनीष ट्रक ड्राइवर को बातों में उलझाकर सड़क के किनारे झाड़ियों की तरफ लेकर जाता था। इसके बाद रुपए और सामान लेकर छोड़ा जाता था।

करंट ने ली मां-बेटी की जान

जैसलमेर, 14 सितंबर (एजेंसियां)। जैसलमेर के भैरवा गांव में बिजली का तार एक परिवार पर कहर बनकर टूटा। करंट की चपेट में आने से मां-बेटी की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं पिता झुलस गया। भैरवा गांव के पास एक खेत में पीपाड़ के रहने वाले मुकेश का परिवार खेती का काम करता था। रोज की तरह खेत का काम खत्म कर परिवार के सदस्य खुले आसमान के नीचे चारपाई बिछाकर सो गया।

रात करीब 10 बजे ऊपर से गुजर रही बिजली की लाइन का एक तार टूटकर नीचे गिरा। लोहे की चारपाई होने से करंट फैलने से मुकेश की पत्नी शोभा (27) व बेटी गुड़िया (5) की मौके पर ही मौत हो गई। मुकेश करंट लगने से झुलस गया। इसके बाद सभी को जवाहिर हॉस्पिटल लाया गया। डॉक्टरों ने मां-बेटी को मृत घोषित किया तथा मुकेश को भर्ती किया।

डेढ़ महीने बाद 6 बमों का हुआ निस्तारण

सेना के बम निरोधक दस्ते ने किए डिफ्यूज, तेज धमाकों से दहला इलाका

जैसलमेर, 14 सितंबर (एजेंसियां)। जैसलमेर के सरहदी इलाके म्याजलार की कीरत सिंह की ढाणी के आसपास मिले 6 बम भारतीय सेना के बम निरोधक दस्ते ने डिफ्यूज किए। सभी बमों को अलग-अलग जगह वायर के साथ जोड़कर रिमोट के माध्यम से डिफ्यूज किया गया। इस दौरान तेज धमाके हुए जो दूर-दूर तक सुनाई दिए। छह बमों के निस्तारण के दौरान भारतीय सेना के जवान, म्याजलार थाना की टीम के साथ थाना प्रभारी नरेंद्र सिंह व ग्रामीण मौजूद रहे।

म्याजलार थाना प्रभारी नरेंद्र सिंह ने बताया कि करीब डेढ़ महीने पहले म्याजलार गांव के कीरत सिंह की ढाणी के आसपास के इलाके में चरवाहों को बिखरे हुए बम मिले। सर्च ऑपरेशन में दो जीवित बम, दो एंटी पर्सनल लैंडमाइन, एक मोर्टार बम और एक हैंड ग्रेनेड मिला था। इन सबको पुलिस की सुरक्षा में रखा गया था, ताकि कोई हादसा ना हो। करीब डेढ़ महीने के बाद भारतीय सेना का बम निरोधक दस्ता म्याजलार पहुंचा और सभी बमों का निस्तारण किया।

वायर लगाकर रिमोट से किया डिफ्यूज

भारतीय सेना के बम निरोधक दस्ते ने म्याजलार गांव की कीरत सिंह की ढाणी पहुंचकर सभी बमों अलग अलग एक गड्ढे में डाला। इसके बाद बमों को वायर की मदद से रिमोट से जोड़ा। इसके बाद एक एक करके सभी बमों को तेज धमाके के साथ उड़ाया गया। इस दौरान धमाकों से ग्रामीण सहमे, मगर बमों के निस्तारण होने के बाद सभी ने राहत की सांस ली।

खतरे से खाली नहीं थे बम

पुलिस के मुताबिक एक साथ लगातार इस तरह विस्फोटक सामग्रियों का मिलना खतरे से खाली नहीं था। अगर किसी का पैर इन पर आ जाता तो उनके चिथड़े उड़ जाते।

संभावना यह भी है कि युद्धाभ्यास के दौरान यहां एंटी लैंड माइन व हैंड ग्रेनेड गिरे होंगे। बताया जा रहा है कि जमीन में दबी लैंड माइन और बम बारिश के बाद मिट्टी के हटने से बाहर आए हैं। ऐसे में इलाके में और भी बम होने की संभावना हो सकती है।

प्रॉपर्टी विवाद में दो बुजुर्ग बहनों की किडनैपिंग

एसयूवी में 3 घंटे घुमाते रहे, रिवॉल्वर दिखाकर डराया मारपीट की; नाकाबंदी कर 1 आरोपी पकड़ा

अजमेर, 14 सितंबर (एजेंसियां)। प्रॉपर्टी विवाद में 4 बदमाशों ने 2 बुजुर्ग बहनों का घर में घुसकर किडनैप कर लिया। दोनों को घसीटकर काले रंग की सूव में डाल कर शहर में 3 घंटे घुमाते रहे।

पड़ोसियों की सूचना पर 3 थानों की पुलिस पीछे लगी तो उन्हें छोड़कर फरार हो गए। आरोप है कि बदमाशों ने उन्हें रिवॉल्वर दिखा कर धमकाया और मारपीट करते हुए राजीनामा कर लेने का दबाव बनाया। मामले में पुलिस ने 1 आरोपी को डिटेन कर लिया है और सूव जब्त कर ली है। मामला अजमेर के क्रिश्चियन गंज थाना क्षेत्र का सुबह 7.30 बजे का है।

नाकाबंदी कर एक आरोपी पकड़ा, सूव जब्त

एडिशनल एसपी दुर्ग सिंह ने बताया- क्रिश्चियन गंज थाना क्षेत्र में शनिवार सुबह दो बहनों डॉ. रमारानी जैन (72) और रिटायर्ड प्रिंसिपल कुमकुम जैन (62) का अपहरण कर लिया गया। मामला प्रॉपर्टी विवाद से जुड़ा बताया जा रहा है। पुलिस को मामले की सूचना मिलते ही जिले में नाकाबंदी करवाई गई। क्रिश्चयनगंज, सिविल लाइन व कोतवाली थाना पुलिस ने आरोपियों का पीछा किया। इसके बाद दोनों बहनों को सुरक्षित बचा लिया। वहीं कायड़ कायड़ चौराहे पर नाकाबंदी कर एक आरोपी मुकेश को डिटेन किया गया है। अन्य तीन आरोपी फरार हैं। जिनकी तलाश जारी है। मामला प्रॉपर्टी विवाद से जुड़ा हुआ है। मुख्य आरोपी का नाम आदिल शेख बताया जा रहा है। प्रॉपर्टी का लेकर पूर्व में क्रिश्चियन गंज थाने पर मुकदमा भी दर्ज है।

हत्या के मामले में फरार इनामी आरोपी पुलिस गिरफ्त में

अलवर, 14 सितंबर (एजेंसियां)। अलवर में अकबरपुर थाना पुलिस ने हत्या के मामले में फरार चल रहे दो इनामी बदमाशों को गिरफ्तार किया है। दोनों बदमाश दो माह से फरार चल रहे थे। पुलिस ने बताया कि पारिवारिक रंजिश का बदला लेने के लिए इन लोगों ने एक व्यक्ति की पीट-पीटकर हत्या कर दी थी। मामले में चार लोग पहले ही गिरफ्तार हो चुके हैं।

अकबरपुर थाना प्रभारी ओमप्रकाश ने बताया कि करीब ढाई माह पहले पुरानी रंजिश को लेकर आसम व ईसार ने अपने अन्य साथियों के साथ अलापुर के रहने वाले सूबेदार नाम के एक व्यक्ति की पीट-पीटकर निर्मम हत्या कर दी थी। इस मामले में चार आरोपी पहले ही गिरफ्तार हो चुके हैं। पुलिस पकड़े गए आरोपियों की सरगर्मी से तलाश कर रही थी।

हाईकोर्ट में फर्जी साइन पर याचिका दायर, एफआईआर दर्ज

अपील करने वाले 101 लोगों में से 85 साइन फर्जी होने का संदेह

जोधपुर, 14 सितंबर (एजेंसियां)। जोधपुर हाईकोर्ट में फर्जी साइन पर संयुक्त दर्ज करने का मामला सामने आया है। इसको लेकर कोर्ट के आदेश पर याचिका दर्ज करने वालों के खिलाफ कुड़ी भगतासनी पुलिस थाने में रिपोर्ट दर्ज करवाई गई है। जिसके जांच पुलिस करने वाली है। सबसे बड़ी बात यह है कि कोर्ट ने पहली सुनवाई में ही इस मामले में संदेह जता दिया था। और मामला दर्ज करने के आदेश दे दिए थे।

यह संयुक्त रिट याचिका सेवानिवृत्ति के बाद देय वार्षिक ग्रेड वेतन वृद्धि प्रदान करने की मांग को लेकर की गई है। इसमें जोधपुर, नागौर, अलवर, जयपुर जिलों अलावा उत्तरप्रदेश व हरियाणा सहित अन्य राज्य के लोग भी शामिल है। यह सभी राज्य के विभिन्न विभागों में सेवा देने के बाद सेवानिवृत्त हुए हैं। कुड़ी पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार 12 सितंबर को जोधपुर हाईकोर्ट रजिस्ट्रार देवेंद्रसिंह भाटी ने पत्र से थाने में मामला दर्ज करवाया है। उन्होंने रिपोर्ट में बताया कि हाईकोर्ट में 4870/2024 एकल दीवानी याचिका दायर की गई थी। इस दीवानी याचिका व वकालातनामे में करीब 85 साइन

फर्जी माने गए है। थाने में दर्ज करवाई गई रिपोर्ट में सभी के साइन के नमूने व अन्य दस्तावेज भी उपलब्ध करवाए गए थे।

यह है मामला

इसी साल 19 अप्रैल को हाई कोर्ट में दणजीतसिंह चौहान व अन्य 101 लोगों ने याचिका दायर की थी। इस याचिका की सुनवाई 23 अप्रैल को की गई थी। इसमें कार्ट में दायर याचिका व वकालातनामे में अपील किए गए प्रार्थियों के साइन में गड़बड़ी पाई गई। कोर्ट ने जब इस मामले में गहनता से जांच की तो करीब 85 अपील करने वालों के साइन फर्जी होने का संदेह हुआ।

हाईकोर्ट ने यह दिए कथन

1. यह न्यायालय यह समझने में असमर्थ है कि इस तरह की संयुक्त याचिका कैसे दायर की जा सकती है। याचिका के ज्ञापन में इस बात का कोई विवरण नहीं है कि किस याचिकाकर्ता ने किस विभाग में सेवा की थी और वह कब सेवानिवृत्त हुआ था।
2. इसके अलावा, राज्य/देश के विभिन्न भागों में फैले ये 101 व्यक्ति याचिकाकर्ताओं के विद्वान वकील के कार्यालय में कैसे एकत्र हुए और एक सूची के प्रिंटआउट पर हस्ताक्षर किए तथा याचिकाकर्ता संख्या 1 को हलफनामा दाखिल करने और शपथ लेने के लिए अधिकृत किया, यह एक जांच का प्रश्न है।
3. रिट याचिका के साथ दायर वकालतनामा पर सरसरी नजर डालने से पता चलता है कि अधिकांश हस्ताक्षर एक ही कलम और हाथ से, एक जैसी लिखावट में किए गए हैं।
4. रजिस्ट्रार (न्यायिक) को निर्देश दिया जाता है कि वे सभी याचिकाकर्ताओं को बुलाकर मामले की जांच शुरू करें और पता लगाएं कि वकालतनामे पर हस्ताक्षर याचिकाकर्ताओं द्वारा स्वयं किए गए हैं या नहीं।

जयपुर के आईटीआई में स्टूडेंट से रैगिंग

चाकू दिखाकर जमकर पीटा, मुर्गा बनाया कहा-भाई साहब बोला कर

जयपुर, 14 सितंबर (एजेंसियां)। जयपुर के औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) में रैगिंग का मामला सामने आया है। कॉलेज के दो सीनियर स्टूडेंट युवराज (26) और पुष्पेंद्र (27) ने जूनियर स्टूडेंट को चाकू दिखाकर जमकर पीटा। उसे मुर्गा भी बनाया। उससे कहा कि 'भाई साहब बोला कर।'बनीपार्क थाना क्षेत्र के आईटीआई में 12 सितंबर को यह घटना हुई है। सीनियर स्टूडेंट ने इसका वीडियो भी बनाया था। 23 साल के पीड़ित स्टूडेंट ने युवराज और पुष्पेंद्र के खिलाफ मामला दर्ज कराया है।

कॉलेज के पहले दिन भी की थी मारपीट

बनीपार्क थाना अधिकारी महेश शर्मा ने बताया- रिपोर्ट में पीड़ित ने बताया कि वह फर्स्ट ईयर का स्टूडेंट है। इसी महीने में एडमिशन लिया था। 2 सितंबर को उसका कॉलेज में पहला दिन था। युवराज और पुष्पेंद्र सेकेंड ईयर के स्टूडेंट हैं। वह उन्हें पहले से जानता भी नहीं है। कॉलेज के पहले दिन युवराज और पुष्पेंद्र उसके पास आए और धक्का-मुक्की करने लगे। वहां मौजूद टीचर ने बीच-बचाव कर मामला शांत कराया। 12 सितंबर को पीड़ित स्टूडेंट आईटीआई पहुंचा। एक बार फिर उसका सामना पुष्पेंद्र और युवराज से हुआ। आरोप है कि दोनों ने पीड़ित को एक कमरे में बुलाया। इसके बाद मारपीट शुरू कर दी। इस दौरान चाकू भी दिखाया। इस दौरान मुर्गा भी बनाया।

पति पर माता-पिता से अलग होने का दबाव बनाना क्रूरता

फैमिली कोर्ट ने 11 साल पुरानी शादी को किया खत्म; सुसाइड की धमकी देती थी पत्नी

जयपुर, 14 सितंबर (एजेंसियां)। जयपुर की फैमली कोर्ट ने पत्नी के आचरण को पति के खिलाफ क्रूरता मानते हुए करीब साढ़े 11 साल पुरानी शादी को खत्म कर दिया है। जज तसनीम खान ने पति पर माता-पिता से अलग रहने का दबाव बनाने, मांग नहीं मानने पर आत्महत्या की धमकी देने सहित अन्य आचरण को क्रूरता की श्रेणी में माना। दरअसल, बिजली विभाग में कार्यरत पति ने फरवरी 2022 में पत्नी से तलाक की याचिका कोर्ट में दायर की थी। इस पर सुनवाई के बाद कोर्ट ने सितंबर 2024 में पति की याचिका को स्वीकार करते तलाक की डिक्री पारित कर दी है।

शादी के बाद से ही अलग होने का दबाव बनाने लगी

मामले से जुड़े एडवोकेट डीएस शेखावत ने बताया कि जयपुर के रहने वाले युवक-युवती की शादी 17 जनवरी 2013 को हुई थी। शादी के बाद 26 सितंबर 2014 को दोनों के एक बेटा हुआ। पति द्वारा दायर तलाक याचिका में कहा गया था कि शादी के बाद से ही उसकी पत्नी उस पर माता-पिता से अलग होने का दबाव बनाने लगी। मांग नहीं मानने पर वह पति को फंसाने की धमकी देती थी।

पत्नी ने पति के सभी आरोपों को नकारा

पति के आरोपों पर पत्नी ने अपने जवाब में कहा कि उस पर लगाए गए पति के सभी आरोप गलत और झूठे हैं। उलटा पत्नी ने पति और उसके माता-पिता पर प्रताड़ित करने का आरोप लगाया। पत्नी ने कहा कि उसका पति हमेशा शक करता था कि जो बेटा उन्हें हुआ है, वह उसका नहीं है। वह हमेशा डीएनए कराने की बात उससे कहता था। उसके साथ मारपीट करता था। दहेज के लिए उसे प्रताड़ित किया जाता था। अदालत ने अपने आदेश में कहा कि पत्नी ने जो भी आरोप पति पर लगाए, वह उन्हें साबित नहीं कर सकी है। पत्नी ने कहा कि पति बच्चे को अपना नहीं मानता था। लेकिन पति ने डिलीवरी से लेकर बच्चे के लालन-पालन के सभी तथ्य पेश किए।

रामगढ़ विधायक जुबेर खान का इंतकाल

गांधी परिवार के नजदीकी रहे हैं खान

जयपुर, 14 सितंबर (एजेंसियां)। राजस्थान के एक वरिष्ठ कांग्रेसी नेता का शनिवार 14 सितंबर की सुबह निधन हो गया। अलवर जिले के रामगढ़ विधानसभा सीट से कांग्रेस के विधायक जुबेर खान का निधन हो कहा है। वे पिछले कई दिनों से बीमार थे। करीब एक साल पहले उनका लिवर ट्रांसप्लांट हुआ था।

उसके बाद उनके स्वास्थ्य में कुछ सुधार हुआ लेकिन वे पूरी तरह स्वस्थ नहीं हुए। कई बीमारियों ने उन्हें घेर लिया। करीब छह महीने पहले उनकी तबीयत ज्यादा बिगड़ने पर उन्हें मेदांता अस्पताल में भर्ती कराया गया। 15 दिन पहले डॉक्टरों ने जवाब दे दिया और उन्हें अस्पताल से छुट्टी दे दी। शनिवार अल सुबह उनका निधन हो गया। अंतिम सांस लेने के दौरान वे अलवर शहर के पास स्थित अपने फार्म हाउस पर ही थे। आज शनिवार शाम 5.50 बजे उनकी पार्थिव देह को सुपुर्द ए खाक किया जाएगा।

डिग्गी कल्याण मंदिर में समलैंगिक विवाह से आक्रोश, गढ़ प्रशासन पर उठे सवाल

टोंक, 14 सितंबर (एजेंसियां)। राजस्थान के डिग्गी कल्याण मंदिर, जो कि हजारों श्रद्धालुओं के लिए आस्था का केंद्र है, वहां समलैंगिक विवाह के आयोजन का लोगों ने कड़ा विरोध किया। हाल ही में डिग्गी गढ़ में मोहित (जयपुर) और एंड्रयू (पश्चिमी देश) के बीच हुए समलैंगिक विवाह ने आमजन में आक्रोश पैदा कर दिया है। धार्मिक और सामाजिक मान्यताओं पर सवाल उठने लगे हैं कि ऐसी पवित्र धरा पर इन विवाहों की अनुमति कैसे दी जा सकती है। डिग्गी कल्याण मंदिर में हर साल हजारों लोग धार्मिक आयोजनों और मेले के लिए आते हैं।

वहां पर इस तरह समलैंगिक विवाह के आयोजन से स्थानीय लोग नाराज हैं। इस मामले को लेकर गढ़ प्रशासन सवालों के घेरे में है, क्योंकि स्थानीय लोगों का मानना है कि समलैंगिक विवाह जैसे आयोजन डिग्गी की पवित्रता और धार्मिक महत्व को ठेस पहुंचा रहे हैं। भारतीय कानून के तहत समलैंगिक विवाह अभी भी मान्यता प्राप्त नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने 2018 में समलैंगिक संबंधों को वैध कर दिया था, लेकिन विवाह को लेकर कोई कानूनी समर्थन नहीं है। इसके बावजूद राजस्थान जैसे पारंपरिक और धार्मिक राज्य में ऐसी घटनाएं बढ़ती जा रही हैं।

जयपुर में खौफनाक हादसा : पिकअप ने बाइक सवार दंपति और बच्चे को कुचला

जयपुर, 14 सितंबर (एजेंसियां)। राजस्थान के जयपुर में एक दर्दनाक सड़क हादसा हो गया. यहां एक बाइक सवार तेज रफ्तार पिकअप की चपेट में आ गया. बाइक पर एक महिला और बच्चा भी सवार था. टक्कर लगने के बाद पिकअप चालक बाइक को करीब 20 फीट तक घसीटता हुआ ले गया. इस घटना का खौफनाक सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है। जानकारी के अनुसार, यह घटना जयपुर के शिवदासपुरा रिंग रोड पर शनिवार को हुई.

यहां पिकअप गाड़ी तेज रफ्तार में जा रही थी. उसी दौरान सड़क पर एक बाइक सवार अपनी पत्नी और बच्चे के साथ जा रहा था. बाइक सवार पिकअप की चपेट में आ गया. टक्कर लगने के बाद बाइक उछल गई और 20 फीट तक घसीटती रही. इसके बाद पिकअप चालक मौके से फरार हो गया. यह हादसा सीसीटीवी में कैद हो गया है। शिवदासपुरा थाना अधिकारी रणजीत सिंह ने बताया कि यह दर्दनाक हादसा रिंग रोड पर कानोता टोल प्लाजा के पास हुआ. यहां बाइक पर सवार हंसराज सैनी, पत्नी संतोष सैनी और बेटा गंभीर रूप से घायल हो गए. तीनों को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उनका इलाज चल रहा है. डॉक्टरों का कहना है कि सभी की हालत गंभीर बनी हुई है।

थानाधिकारी की गैर मौजूदगी में दूसरे इलाके में जाना महंगा पड़ा

लवाण थाने के 4 पुलिसकर्मी सस्पेंड

दौसा, 14 सितंबर (एजेंसियां)। दौसा जिला पुलिस अधीक्षक रंजीता शर्मा ने लवाण थाने के चार पुलिसकर्मियों को पहले लाइन हाजिर किया और बाद में सस्पेंड करने के आदेश जारी कर दिए। जानकारी के अनुसार पिछले दिनों जब लवाण थाना अधिकारी गोपाल शर्मा छुट्टी पर थे तब इन चारों पुलिसकर्मियों का लवाण थाना इलाका छोड़कर दूसरे इलाके में बिना किसी सूचना के जाना पाया गया है।

बताया जा रहा है कि लवाण थाने के 4 पुलिसकर्मी जिसमें हेड कांस्टेबल रामबाबू बैरवा, कालू सिंह, कांस्टेबल रमेश मीणा और कजोड़ बैरवा शामिल हैं, लवाण थाना अधिकारी गोपाललाल शर्मा के छुट्टी पर जाने के बाद लवाण सीमा से बाहर तुंगा थाना सीमा में जा पहुंचे।

सूत्रों की मानें तो ये चारों पुलिसकर्मी यहां अवैध वसूली के चक्कर में पहुंचे थे। पुलिसकर्मियों की इस हरकत की जानकारी मिलने पर नांगल डिप्टी एसपी चारुल गुप्ता को इसकी जांच सौंपी गई, जहां अभी तक जांच लंबित है लेकिन कुछ दिनों पूर्व एसपी रंजीता शर्मा के आदेश के बाद इन चारों पुलिसकर्मियों को पहले तो लाइन हाजिर किया गया और फिर इन्हें सस्पेंड किया जाना बताया जा रहा है। उधर लवाण थाना क्षेत्र के लोगों की मानें तो जब से यहां थाने की अवैध वसूली पर लगाम लगी है, पुलिसकर्मियों ने अवैध वसूली के चक्कर में खुद के थाना क्षेत्र की सीमाएं पार कर डाली हैं। बहरहाल जिला पुलिस अधीक्षक ने ठोस कदम उठाते हुए पुलिसकर्मियों को सस्पेंड कर दिया है।

शब्बीर अली ने नई टीपीसीसी इकाई में कमजोर वर्गों को अधिक प्रतिनिधित्व देने की मांग की

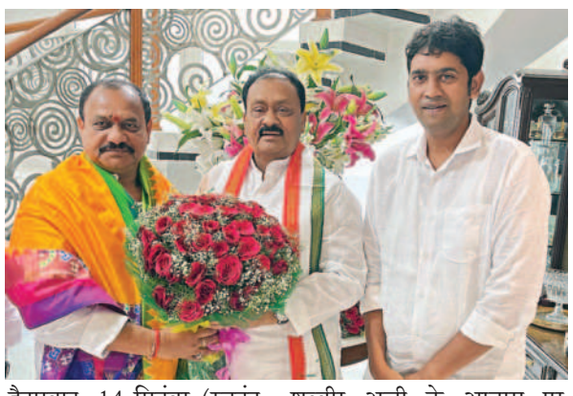

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना सरकार के सलाहकार (एससी, एसटी, ओबीसी और अल्पसंख्यक) मोहम्मद अली शब्बीर ने नवनियुक्त तेलंगाना प्रदेश कांग्रेस कमेटी (टीपीसीसी) के अध्यक्ष महेश कुमार गौड़ से नई टीपीसीसी इकाई में कमजोर वर्गों को अधिक प्रतिनिधित्व देने की मांग की है। शनिवार को जुबली हिल्स में शब्बीर अली के आवास पर शिष्टाचार मुलाकात के दौरान दोनों नेताओं ने राज्य के मौजूदा राजनीतिक परिदृश्य समेत कई अहम मुद्दों पर चर्चा की। उन्होंने नई टीपीसीसी की संरचना पर भी विचार-विमर्श किया, जिसे कांग्रेस हाईकमान द्वारा मंजूरी दी जानी है। शब्बीर अली ने नई टीम में दलितों, आदिवासियों, ओबीसी और अल्पसंख्यकों के प्रतिनिधियों को शामिल करने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि नई टीपीसीसी को सरकार की कल्याणकारी योजनाओं को सीधे लोगों तक ले जाने और मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार की नीतियों का बचाव करने की दोहरी चुनौती का सामना करना पड़ेगा। इसलिए उन्होंने अनुभव और ऊर्जा के बीच संतुलन बनाने के लिए टीम में वरिष्ठ और युवा दोनों नेताओं को शामिल करने का सुझाव दिया। महेश कुमार गौड़ के नेतृत्व में विश्वास जताते हुए शब्बीर अली ने कहा कि उन्हें विश्वास है कि नए टीपीसीसी अध्यक्ष पार्टी को आगे बढ़ाएंगे और आगामी चुनावों में सफलता की ओर ले जाएंगे। जवाब में महेश कुमार गौड़ ने शब्बीर अली को आश्वासन दिया कि वह वरिष्ठ नेताओं से मार्गदर्शन लेंगे और पार्टी को मजबूत करने के लिए युवाओं के साथ मिलकर काम करेंगे।

कांग्रेस ने कौशिक के दुर्व्यवहार पर केटीआर की चुप्पी की निंदा की

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। सरकारी सचेतक आदि श्रीनिवास ने शनिवार को बीआरएस के कार्यकारी अध्यक्ष केटी रामा राव पर विधायक कौशिक रेड्डी द्वारा साथी विधायक अरेकापुडी गांधी के साथ दुर्व्यवहार और महिलाओं के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी पर चुप्पी साधने के लिए तीखा हमला किया। शनिवार को विधानसभा परिसर में मीडिया कॉन्फ्रेंस हॉल में पत्रकारों से बात करते हुए आदि श्रीनिवास ने कांग्रेस विधायकों भूपति रेड्डी और मेडिपल्ली सत्यम के साथ कौशिक रेड्डी से मिलने के पीछे केटीआर के मकसद पर सवाल उठाया, जिन्होंने पहले महिलाओं के खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणी की थी। आदि श्रीनिवास ने कौशिक रेड्डी पर पागल हाथी की तरह व्यवहार करने और युवा या बूढ़े में भेद किए बिना लोगों पर अंधाधुंध हमला करने का आरोप लगाया। आंध्र प्रदेश से आए लोगों का अपमान करने और पुलिस अधिकारियों को धमकाने के कौशिक के बयानों में खामी ढूंढते हुए कांग्रेस विधायक ने मांग की कि केटीआर को इस तरह के व्यवहार का समर्थन करने के लिए माफी मांगनी चाहिए। इसी तरह, चोपडांडी के विधायक मेदिपल्ली सत्यम ने केटीआर की प्राथमिकताओं की आलोचना की। केटीआर ने अमेरिका में 10 दिन बिताए और अब बहुत शोर मचाते हुए लौटे हैं। जबकि खम्मम, सूर्यपेट और महबूबाबाद में लोग बाढ़ के कारण पीड़ित हैं, वह उनके लिए एक शब्द भी नहीं बोलते। सत्यम ने आरोप लगाया। उन्होंने केटीआर और पूर्व मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव पर राज्य के नुकसान के प्रति उदासीनता का आरोप लगाया और कहा कि उनका एकमात्र ध्यान मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी की प्रतिष्ठा को धूमिल करना है। निजामाबाद ग्रामीण के विधायक भूपति रेड्डी ने भी केटीआर पर कटाक्ष करते हुए बीआरएस नेताओं की तुलना अवसरवादी गिरगिट से की।

केंद्र ने आयात शुल्क बढ़ाए जाने से तेलंगाना के पाम तेल किसानों को बड़ी राहत

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना के मंत्री तुम्मला नागेश्वर राव के अनुरोध के जवाब में, केंद्र सरकार ने कच्चे पाम तेल पर आयात शुल्क 5.5 से बढ़ाकर 27.5 प्रतिशत करने का आदेश जारी किया है। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान से मंत्री की अपील के बाद आए इस फैसले से घरेलू पाम तेल किसानों, खासकर तेलंगाना के किसानों को फायदा होने की उम्मीद है। इससे पहले, कच्चे पाम तेल पर आयात शुल्क हटाने से पाम तेल की कीमतों में उल्लेखनीय गिरावट आई थी, जिससे मौजूदा किसान और नए पाम तेल की खेती पर विचार करने वाले किसान दोनों प्रभावित हुए थे। इसका मुकाबला करने के प्रयास में, मंत्री तुम्माला ने केंद्र सरकार से आयात शुल्क को बहाल करने, किसानों के लिए बेहतर मूल्य सुनिश्चित करने और राज्य में पाम ऑयल की खेती के विस्तार को बढ़ावा देने का आग्रह किया था।

इसके अलावा, फलों की कीमतों में वृद्धि से अधिक किसानों को पाम ऑयल की खेती करने के लिए प्रोत्साहित होने की संभावना है। मंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला कि भारत पाम ऑयल के आयात पर सालाना लगभग 80,000 करोड़ रुपये खर्च करता है और आयात शुल्क बढ़ाने से घरेलू किसानों, विशेष रूप से तेलंगाना में, को महत्वपूर्ण लाभ मिलेगा। उन्होंने राष्ट्रीय खाद्य तेल मिशन-ऑयल पाम (एनएमईओ-ओपी) सहित विभिन्न पहलों के माध्यम से खाद्य तेल उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने पर सरकार के फोकस पर भी जोर दिया। वर्तमान में, तेलंगाना सरकार 31 जिलों में पाम ऑयल की खेती का विस्तार करने के लिए काम कर रही है, इस उद्देश्य के लिए 14 कंपनियों को अनुमति दी गई है।

अनुमान है कि तेलंगाना में पहले ही 2 लाख एकड़ पाम ऑयल की खेती की जा चुकी है। शनिवार को यहां एक विज्ञप्ति में, मंत्री तुम्माला नागेश्वर राव ने पाम ऑयल किसानों के पक्ष में निर्णय लेने के लिए केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान को धन्यवाद दिया।

उपेक्षित पड़ा है प्रकृति प्रेमियों का स्वर्ग गांधारी वनम

जैव विविधता को दर्शाता है यह पार्क * 3.5 करोड़ की लागत से 2015 में बना था पार्क
11,000 पूरी तरह से विकसित पेड़ प्रजातियां हैं पार्क में

मंचेरियल, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। राष्ट्रीय राजमार्ग 363 से सटे मंडमरी मंडल के बोक्कलगुट्टा गांव के बाहरी इलाके में स्थित शहरी वन पार्क गांधारी वनम, अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करने की मांग कर रहा है। 2015 में 3.5 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से 137 हेक्टेयर में निर्मित यह पार्क जैव विविधता को दर्शाता है। यह कई वन पौधों की प्रजातियों, पक्षी समुदाय, तितलियों, जंगली सूअरों और बंदरों की एक चौंका देने वाली श्रृंखला का घर है। इसमें 11,000 पूरी तरह से विकसित पेड़ प्रजातियां हैं जैसे नीम, पाला (ऑक्सीस्टेल्मा एस्कुलेंटम), सागौन टेक्टोना ग्रैंडिस, रेगु (जिजिफस न्यूमुलेरिया) और सैकड़ों हर्बल पौधे। 2023 में हैदराबाद के शिल्पारामम की तर्ज पर इस लंग स्पेस को विकसित करने के लिए प्रस्ताव तैयार किए गए थे लेकिन उन्हें ठंडे बस्ते में डाल दिया गया है। विकास के हिस्से के रूप में एक कन्वेंशन सेंटर, बच्चों के खेलने का क्षेत्र, फूड कोर्ट, बोटिंग, शिल्प स्टॉल, कॉटेज, सांस्कृतिक संग्रहालय आदि सुविधाओं पर विचार किया गया था। काम की अनुमानित लागत 20 करोड़ रुपये थी। इसी तरह, पार्क के एक तालाब में पिछले दिनों शुरू की गई पैडल बोटिंग सुविधा को कोविड-19 महामारी के दौरान निलंबित कर दिया गया था। तब से इसे फिर से शुरू नहीं किया गया। पार्क में मनोरंजक गतिविधियां बनाने में अधिकारियों की उदासीनता से आगंतुक और बच्चे परेशान हैं। उन्होंने अधिकारियों से अनुरोध किया कि वे इस जगह को नया रूप देने और इसे पर्यटन केंद्र में बदलने के लिए कदम उठाएं।

गांधारी वनम सिर्फ़ एक शहरी वन पार्क नहीं है, बल्कि यह न सिर्फ़ मंचेरियल, बल्कि क्यथानपल्ली, कोटेश्वरपल्ली, कुरमापल्ली, थिम्मापुर और बोक्कलगुट्टा के फिटनेस फ्रीक, सुबह की सैर करने वालों और प्रकृति प्रेमियों के लिए स्वर्ग है। इसमें 3 किलोमीटर का वॉकिंग ट्रैक है जिसका इस्तेमाल रोजाना जॉगर्स और पुलिस की नौकरी के इच्छुक लोग करते हैं। यह एक योग शेड से सुसज्जित है। सुबह की सैर करने वालों ने बताया कि ट्रैक के दोनों ओर उगे खरपतवार और बेकार पौधों के कारण उन्हें असुविधा का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने अधिकारियों से खरपतवार को हटाने के लिए कदम उठाने का आग्रह किया। वे चाहते थे कि पार्क परिसर में अनधिकृत व्यक्तियों के प्रवेश को रोकने के लिए एक सुरक्षा गार्ड हो।

जिला वन अधिकारी शिव आशीष सिंह ने बताया कि पार्क में आगंतुकों की सुविधा के लिए बुनियादी सुविधाएं बनाने और मनोरंजक गतिविधियां शुरू करने के प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि वे जल्द ही इन गतिविधियों को शुरू करने के लिए स्वयंसेवी संगठनों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं।

वीएच ने अभिनेत्री कंगना रनौत के खिलाफ पुलिस की निष्क्रियता पर विरोध की चेतावनी दी

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। पूर्व सांसद और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता वी. हनुमंत राव ने अभिनेत्री और भाजपा सांसद कंगना रनौत के खिलाफ शिकायत पर कार्रवाई न करने पर पुलिस को विरोध प्रदर्शन करने की चेतावनी दी है। शनिवार को यहां गांधी भवन में मीडिया से बात करते हुए वी हनुमंत राव ने कहा कि उन्होंने कांग्रेस नेता राहुल गांधी के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी के बाद हैदराबाद के अंबरपेट पुलिस स्टेशन में कंगना रनौत के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है। उन्होंने पुलिस की देरी से प्रतिक्रिया पर सवाल उठाया और चेतावनी दी कि अगर कोई कार्रवाई नहीं की गई तो कांग्रेस कार्यकर्ता पुलिस स्टेशन के बाहर विरोध प्रदर्शन (धरना) करेंगे। उन्होंने सभी नागरिकों के साथ समान व्यवहार करने के महत्व पर जोर दिया, चाहे उनकी राजनीतिक संबद्धता कुछ भी हो। क्या भाजपा नेता अमित शाह के लिए एक नियम है और राहुल गांधी के लिए दूसरा? राहुल का अपमान किया गया है और कंगना रनौत के खिलाफ कार्रवाई की जानी चाहिए। उनके खिलाफ तुरंत मामला दर्ज किया जाना चाहिए, वीएच ने मांग की।

हैदराबाद मुक्ति दिवस समारोह परेड मैदान में आयोजित किया जाएगा

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय के तत्वावधान में, 17 सितंबर, 1948 को निजाम के चंगुल से हैदराबाद संस्थान की मुक्ति के उपलक्ष्य में 17 सितंबर, 2024 को परेड ग्राउंड, सिकंदराबाद में हैदराबाद मुक्ति दिवस समारोह आयोजित किया जा रहा है। समारोह के हिस्से के रूप में अर्ध-सैन्य बल और रक्षा बल राष्ट्रीय ध्वज फहराने के बाद परेड का आयोजन करेंगे। इस अवसर पर केंद्रीय कोयला और खान मंत्री जी. किशन रेड्डी मुख्य अतिथि होंगे। ऐतिहासिक हैदराबाद संघर्ष को दर्शाने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम समारोह का हिस्सा होंगे। 17 सितंबर, 2024 को निर्धारित समारोह की प्रस्तावना के रूप में, 14 सितंबर, 2024 को सुबह 9 बजे परेड ग्राउंड में पूरे कार्यक्रम का पूर्वाभ्यास आयोजित किया जा रहा है। डॉ.के. लक्ष्मण, सदस्य, राज्यसभा और भाजपा ओबीसी मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष परेड रिहर्सल का जायजा लेंगे और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की तैयारियों की जांच करेंगे।

सीपी ने नवनिर्मित नियंत्रण कक्ष का उद्घाटन किया

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। राचकोंडा आयुक्त जी. सुधीर बाबू ने अंबरपेट में सीएआर मुख्यालय में नवनिर्मित नियंत्रण कक्ष, महिला गार्ड कक्ष और सलामी बेस का उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम में बोलते हुए आयुक्त ने बताया कि एआर विभाग राचकोंडा क्षेत्र में शांति और सुरक्षा की रक्षा के लिए देशद्रोह विरोधी ताकतों से निपटने में बहुत कुशलता और साहसपूर्वक काम कर रहा है। उन्होंने कई समस्याग्रस्त स्थितियों में झड़पों की रोकथाम, त्योहारों के प्रबंधन, चुनाव प्रबंधन, गणेश विसर्जन जुलूस और अन्य कर्तव्यों में सशस्त्र रिजर्व पुलिस के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि भविष्य में भी उनके कल्याण के लिए और कार्यक्रम चलाये जायेंगे। इस कार्यक्रम में कमिश्नरेट के अंतर्गत आने वाले सभी जोन और डिविजन के डीसीपी अधिकारी और ए.आर एडिशनल डीसीपी श्याम सुंदर, वेंकट रेड्डी, विनोद कुमार और एसीपी इमैनुएल, महेश्वर, शैलेश, सुरेश और आरआई आरएसआई और कर्मचारियों ने भाग लिया।

सांसद ने कर्नाटक के सीएम से मुलाकात की

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। सांसद मल्लू रवि ने तेलंगाना में शुरू की गई सफल कल्याणकारी योजनाओं पर चर्चा करने के लिए कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया जी से मुलाकात की।

यह बैठक स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और सामाजिक कल्याण में प्रभावशाली कार्यक्रमों पर अंतर्दृष्टि साझा करने और दोनों राज्यों के बीच सार्थक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने का एक शानदार अवसर था।

एसीएम स्टूडेंट चैप्टर लॉन्च

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। एमएलआर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमएलआरआईटी) में सीएसई-एआईएमएल विभाग ने शनिवार को यहां एसोसिएशन फॉर कंप्यूटिंग मशीनरी (एसीएम) स्टूडेंट चैप्टर का शुभारंभ किया। इस अध्याय का उद्देश्य छात्रों को अपने तकनीकी कौशल को बढ़ाने, अत्याधुनिक अनुसंधान में संलग्न होने तथा वैश्विक कंप्यूटिंग समुदाय में पेशेवरों और साथियों के साथ नेटवर्क बनाने के अवसर प्रदान करना है।

एचसीएल टेक्नोलॉजीज, हैदराबाद के एंटरप्राइज़ आर्किटेक्ट गोपाल कृष्ण बेहरा ने प्रौद्योगिकी के भविष्य को आकार देने में जनरेटिव एआई के बढ़ते महत्व पर अंतर्दृष्टि साझा की और छात्रों को अपने करियर को आगे बढ़ाने के लिए एसीएम प्लेटफॉर्म द्वारा प्रस्तुत अवसरों का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित किया।

एनएमडीसी लिमिटेड मुख्यालय हैदराबाद को मिला राजभाषा कीर्ति पुरस्कार

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। हिंदी दिवस समारोह के दौरान एनएमडीसी लिमिटेड, हैदराबाद को राजभाषा कार्यान्वयन के लिए नई दिल्ली में आयोजित राजभाषा कीर्ति , द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया । यह पुरस्कार केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय, राज्यसभा के उप सभापति हरिवंश , राज्यसभा के सांसद सुधांशु त्रिवेदी की उपस्थिति में श्रीमती जी प्रियदर्शिनी, मुख्य महाप्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन) एनएमडीसी लिमिटेड मुख्यालय ने प्राप्त किया ।

व्यवसायिकता केवल अनुभव से ही संभव है : टी. रबी शंकर

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के डिप्टी गवर्नर टी. रबी शंकर ने कहा है कि छात्र किसी भी क्षेत्र में डिग्री लेकर विशेषज्ञ नहीं बन सकते और विशेषज्ञता केवल अपने चुने हुए क्षेत्र में विषयों का अध्ययन, आपसी विचार-विमर्श और अनुभव के माध्यम से ही संभव है। उन्होंने कहा कि बीमा और जोखिम प्रबंधन करना आसान काम नहीं है और कहा कि इस पेशे में विश्वास, प्रबंधन में प्रतिबद्धता और समर्पण उनके विकास में योगदान देगा। बीमा और जोखिम प्रबंधन संस्थान (आईआरएम) का दीक्षांत समारोह, जिसे आईआरडीएआई और तेलंगाना सरकार द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया जा रहा है, शनिवार को गच्चीबोवली में आयोजित किया गया। आईआरएम निदेशक अतनु के दास ने स्वागत भाषण दिया, जबकि आईआर (वित्त और निवेश) सदस्य, आईआरएम निदेशक राज कुमार सिन्हा, आरबीआई के क्षेत्रीय निदेशक कमल पटनायक, आईआरडीएआई के स्थायी सदस्य बी.ई.सी. पटनायक, आईआरडीएआई सदस्य सत्यजीत त्रिपाठी, एसबीआई लाइफ तेलंगाना के क्षेत्रीय निदेशक अभिषेक खर मजूमदार और अन्य उपस्थित थे।

रबी शंकर ने 2022-2024 शैक्षणिक वर्ष के दौरान विभिन्न पाठ्यक्रमों में स्नातक पूरा करने वाले छात्रों को डिग्री प्रदान की और सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले छात्रों को स्वर्ण पदक और प्रशंसा पत्र दिए। इस अवसर पर बोलते हुए, रबीशंकर ने कहा कि जीवन और पेशे में समस्याओं का सामना करना कॉलेज में पाठ्यक्रम सुनने और सीखने, परीक्षा लिखने और परीक्षा पास करने जितना आसान नहीं है। उन्होंने छात्रों को ऐसे जटिल मुद्दे को समझने के लिए कहा क्योंकि बाजार के किसानों को उनकी उपज का लाभकारी मूल्य नहीं मिलता है, फिर भी वे खेती करना जारी रखेंगे। उन्होंने छात्रों से आह्वान किया कि बीमा क्षेत्र में काम करने वालों को न केवल अपने मुनाफे को ध्यान में रखते हुए बल्कि उपभोक्ताओं के हितों को ध्यान में रखते हुए नई योजनाएं बनाने के बारे में सोचना चाहिए।

उन्होंने कहा कि बड़ा पद मिलने के बाद नए विचारों के साथ आने की इच्छा के बजाय उन्हें अपने करियर की शुरुआत से ही ऐसे रचनात्मक विचार करने चाहिए ताकि वे पेशे में अधिक ऊंचाइयों को छू सकें। उन्होंने यह भी कहा कि जो लोग इस क्षेत्र में काम करते हैं, उन्हें अपने साथ काम करने वाले सहकर्मियों को भी उच्च पदों पर ले जाना चाहिए, यदि वे नेता बनना चाहते हैं। अपने स्वागत भाषण में निदेशक के दास ने कहा कि बीमा क्षेत्र को 2030 तक 25,000 पेशेवरों की आवश्यकता होने की उम्मीद है। उन्होंने कहा, "इन आवश्यकताओं और मांग के अनुरूप, संस्थान ने घोषणा की है कि वह अगले साल से नए पाठ्यक्रम शुरू करेगा। यह बहुत गर्व की बात है कि अमेरिका में आईआरएम के चार छात्र हाल ही में बीमा और जोखिम प्रबंधन कार्यशाला के विजेता बनकर उभरे हैं।

डीकेजेड टेक्नोलॉजीज के खिलाफ वित्तीय धोखाधड़ी का केस

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। हैदराबाद पुलिस ने डीकेजेड टेक्नोलॉजीज के खिलाफ निवेशकों को उनके निवेश पर आकर्षक मुनाफा देने के बहाने कथित तौर पर कई करोड़ रुपये की धोखाधड़ी करने का मामला दर्ज किया है। पुलिस के अनुसार, कंपनी ने आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक और महाराष्ट्र में कई हज़ार लोगों से उनके निवेश पर 8 से 12 प्रतिशत के बीच लाभ का वादा करके पैसे एकत्र किए और उन्हें ठगा। 2018 में शुरू हुई इस कंपनी ने निवेशकों को बताया कि उनका पैसा अलग-अलग व्यवसायों में निवेश किया गया है और उन्हें मासिक लाभ दिया जाएगा। जून से कंपनी ने निवेशकों को पैसे देना बंद कर दिया है। निवेशकों ने जब माधापुर स्थित कार्यालय से संपर्क किया तो पता चला कि कार्यालय बंद है। इसके बाद निवेशकों ने हैदराबाद सीसीएस से संपर्क किया और शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और जांच कर रही है। कंपनी में अलग-अलग पदों पर काम करने वाले अशफाक राहिल, इकबाल, उमैर, मोइज, असलम, बिलाल, नजीर और अन्य के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। पुलिस ने धोखाधड़ी की जांच के लिए छह टीमें बनाई हैं। धोखाधड़ी के पीड़ितों ने कंपनी के खिलाफ हैदराबाद सीसीएस कार्यालय पर प्रदर्शन किया था और पुलिस से प्रबंधन के खिलाफ कार्रवाई करने तथा उन्हें उनका पैसा दिलाने में मदद करने की मांग की थी।

हिंदी दिवस पर कांग्रेस के गांधी भवन में भाषाई अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ अध्यक्ष प्रेमलता अग्रवाल द्वारा माइनारिटी कमीशन के पूर्व सदस्य गौतम जैन का हिंदी की सेवा के लिए सम्मानित किया गया। अवसर पर राजेंद्र यादव, प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी मणिलाल शाह,एम नरसिंह राव आदि उपस्थित थे।

वाणिज्यिक परिसरों की पहचान कर रही है डिस्कॉम्स

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। बार-बार ट्रिपिंग और कम वोल्टेज की समस्या से निपटने के लिए, तेलंगाना दक्षिणी विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड (टीजीएसपीडीसीएल) ने अपने स्वयं के ट्रांसफार्मर का रखरखाव किए बिना सीधे 20 किलोवाट (केडब्ल्यू) से अधिक बिजली खींचने वाले आवासीय अपार्टमेंट और वाणिज्यिक परिसरों की पहचान करने के लिए एक विशेष अभियान शुरू किया है। अधिकारियों के अनुसार, कंपनी ने अलग से ट्रांसफॉर्मर लगाए बिना 20 किलोवाट से अधिक बिजली की खपत करने वाले आवासीय अपार्टमेंट और व्यावसायिक परिसरों की पहचान करना शुरू कर दिया है। सूत्रों का कहना है कि मुख्यालय ने सभी सर्किलों के अधीक्षण अभियंताओं को विशेष अभियान चलाकर ऐसे कनेक्शनों की पहचान करने के लिए परिपत्र जारी किया है।

कंपनी ने अपने शुरूआती सर्वेक्षण के दौरान कुकटपल्ली, मियापुर, बालानगर, येलारेड्डीगुडा, यूसुफगुडा, मोती नगर, गोपनपल्ली जर्नलिस्ट कॉलोनी और सिकंदराबाद की सीमाओं में सार्वजनिक वितरण ट्रांसफार्मर पर बड़े पैमाने पर ओवरलोड की समस्या पाई है। सूत्रों का कहना है कि साइबर सिटी क्षेत्र आवासीय अपार्टमेंट और वाणिज्यिक परिसरों की सूची में सबसे ऊपर है, जहां अलग से ट्रांसफार्मर नहीं हैं, उसके बाद सरूरनगर और मेडचल का स्थान है।

अधिकारियों ने अकेले मणिकोंडा इलाके में ही करीब 150 अपार्टमेंट और व्यावसायिक परिसरों की पहचान की है जो सार्वजनिक वितरण ट्रांसफॉर्मर से 20 किलोवाट से अधिक बिजली ले रहे हैं। सूत्रों ने बताया कि कंपनी के कर्मचारियों ने अब तक शहर में 2000 से अधिक अपार्टमेंट और व्यावसायिक परिसरों की पहचान की है, जिनमें अलग से ट्रांसफॉर्मर नहीं हैं और जो 20 किलोवाट से अधिक बिजली का उपयोग कर रहे हैं।

सूत्रों ने बताया कि एसपीडीसीएल अधिकारी जल्द ही उन आवासीय अपार्टमेंटों और वाणिज्यिक परिसरों को नोटिस जारी करेंगे जो बिना ट्रांसफार्मर लगाए 20 किलोवाट से अधिक बिजली ले रहे हैं। बिजली अधिकारियों ने कहा कि जब भी लोड 15 किलोवाट से अधिक हो जाता है, तो अपार्टमेंट को अलग से ट्रांसफॉर्मर लगाने की जरूरत होती है, लेकिन उनमें से अधिकांश ऐसा नहीं करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप ट्रिपिंग होती है।

सूत्रों ने कहा कि अपार्टमेंट एसोसिएशन निचले स्तर के बिजली अधिकारियों को मैनेज करते हैं और अलग से ट्रांसफॉर्मर लगाने से बचते हैं।

स्वतंत्र वार्ता
Email :
svaarttha2006@gmail.com
svaarttha@rediffmail.com
svaarttha2006@yahoo.com
Epaper :
epaper.swatantravaartha.com
For Advertisement :
swadds1@gmail.com

हॉकी एशियन चैंपियंस ट्रॉफी

भारत ने पाकिस्तान को 2-1 से हराया

> हरमनप्रीत ने दो गोल दागे > टीम इंडिया की लगातार पांचवीं जीत

हुलुनबुइर (चीन), 14 सितंबर (एजेंसियां)। भारतीय हॉकी टीम ने एशियन चैम्पियंस ट्रॉफी 2024 में अपनी जीत का सिलसिला जारी रखा है. शनिवार (14 सितंबर) को चीन के हुलुनबुइर में गए मुकाबले में भारत ने चिर-प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को 2-1 से हरा दिया. भारत की ओर से कप्तान हरमनप्रीत सिंह (13वें मिनट और 19वें मिनट) ने दोनों गोल दागे. उधर पाकिस्तान की ओर से इकलौता गोल अहमद नदीम (7वें मिनट) ने किया।

मुकाबले के दौरान पहले क्वार्टर में दोनों टीमों के बीच कांटे की टक्कर देखने को मिली. खेल के सातवें ही मिनट में पाकिस्तान ने बढ़त बना ली, जब हन्नान शाहिद तेजी से भारतीय सर्कल में पहुंचे और अहमद नदीम को पास दिया. नदीम ने भारतीय गोलकीपर कृष्ण बहादुर पाठक को छकाते हुए गोल दाग दिया. लगभग 6 मिनट बाद ही भारतीय कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने पेनल्टी कॉर्नर पर गोल करके बराबरी दिला दी. दूसरा क्वार्टर भारत के नाम रहा, जिसमें हरमप्रीत कौर पेनल्टी कॉर्नर के जरिए एक और गोल दागने में कामयाब रहे।

विदेश खेलने गए 3 पाकिस्तानी खिलाड़ी लौटे ही नहीं, लगा आजीवन बैन

मुकाबले में हाफटाइम के समय तक भारत 2-1 से आगे था. फिर तीसरे क्वार्टर में पाकिस्तान ने बराबरी की कोशिश की, इस दौरान उसे कुछ पेनल्टी कॉर्नर भी मिले. मगर भारतीय डिफेंस ने मौकों को नाकाम कर दिया. भारतीय टीम के पास भी इस क्वार्टर में गोल करने के मौके बने थे, लेकिन वो भुना नहीं सके. इसके बाद चौथे क्वार्टर में दोनों ही टीमें कोई गोल नहीं कर पाईं.

भारत की लगातार पांचवीं जीत, पहले ही सेमी में पहुंच चुका

यह भारतीय हॉकी टीम की मौजूदा टूर्नामेंट में लगातार पांचवीं जीत रही. भारतीय टीम ने इससे पिछले मैच में कोरिया को 3-1 से हराया था. उससे पहले भारत ने मलेशिया को 8-1 से हराकर सेमीफाइनल में एंट्री की थी. इसके भी पहले भारतीय हॉकी टीम ने चीन को 3-0 और जापान को 5-0 से करारी शिकस्त दी थी.हालिया समय में पाकिस्तान के खिलाफ भारत का पलड़ा काफी भारी रहा है. हांगझोउ एशियन गेम्स में पिछले साल भारत ने पाकिस्तान को 10-2 से हराया था. उससे पहले चेन्नई में एशियाई चैम्पियंस ट्रॉफी में भारत ने पाकिस्तान पर 4-0 से जीत दर्ज की थी. जकार्ता में 2022 एशिया कप में युवा भारतीय टीम ने पाकिस्तान को 1-1 से ड्रॉ पर रोका, जबकि 2021 के एशियन चैम्पियंस ट्रॉफी में भारत ने पाकिस्तान को 4-3 से हराकर कांस्य पदक जीता था।

बता दें कि इस टूर्नामेंट में भारत समेत कुल छह टीमें भाग ले रही हैं. ग्रुप स्टेज में सभी टीमों को पांच-पांच मैच खेलने हैं. सेमीफाइनल और फाइनल क्रमशः 16 एवं 17 सितंबर को खेले जाएंगे. भारत इस टूर्नामेंट में चैम्पियन बनने का प्रबल दावेदार है. भारत ने पिछले साल घरेलू मैदान पर खिताब जीता था, जिससे वह टूर्नामेंट के इतिहास में सबसे ज्यादा 4 खिताब जीतने वाली टीम बन गई.

भारत ने इस मामले में पाकिस्तान को पछाड़ दिया था, जिसने तीन मौके पर टाइटल जीता था. भारत-पाकिस्तान के अलावा कोरिया ही एक मौके पर इस टूर्नामेंट को जीत पाया है. कोरिया ने साल 2021 के सीजन में खिताब जीता था।

भारतीय हॉकी टीम का स्क्वॉड

गोलकीपर : कृष्ण बहादुर पाठक, सूरज करकेरा

डिफेंडर : जरमनप्रीत सिंह, अमित रोहिदास, हरमनप्रीत सिंह (कप्तान), जुगराज सिंह, संजय, सुमित.

मिडफील्डर : राज कुमार पाल, नीलकंठ शर्मा, विवेक सागर प्रसाद, मनप्रीत सिंह, मोहम्मद राहील मौसीन.

फॉरवर्ड : अभिषेक, सुखजीत सिंह, अरजीत सिंह हुंदल, उत्तम सिंह, गुरजोत सिंह।

डायमंड लीग फाइनल में अविनाश नौवें स्थान पर रहे

स्टीपलचेज 3000 मीटर रेस में 8:17.09 सेकेंड का समय लिया

ब्रुसेल्स, 14 सितंबर (एजेंसियां)। डायमंड लीग 2024 के स्टीपलचेज 3000 मीटर फाइनल में अविनाश साबले नौवें स्थान पर रहे। शनिवार को ब्रुसेल्स के किंग बौडॉइन स्टेडियम में उन्होंने रेस पूरा करने के लिए 8:17.09 सेकेंड का समय लिया। केन्या के अमोस सेरेम ने मोरक्को के पेरिस ओलिंपिक चैंपियन सौफियान एल बक्काली को हराकर डायमंड लीग का खिताब अपने नाम कर लिया। उन्होंने 8:06.90 सेकेंड का समय लिया। जबकि मोरक्को के सौफियान एल बक्काली 8:08:60 के समय के साथ दूसरे स्थान पर रहे।

अविनाश की शुरुआत अच्छी नहीं रही

स्टीपलचेज के इस फाइनल में 10 रेसर ने क्वालीफाई किया था। रेस की शुरुआत से ही अविनाश 10 रेसर में सबसे पीछे थे। उन्होंने बीच में लीड लेने की कोशिश की लेकिन इसमें उन्हें सफलता नहीं मिली। नेशनल रिकॉर्ड होल्डर अविनाश ने अपनी रेस नौवें स्थान पर समाप्त की। वहीं केन्या के अमोस ने दौड़ के अंतिम 400 मीटर में अपनी बढ़त बनाए रखी और एल बक्काली को पीछे छोड़ दिया।

दलीप ट्रॉफी 2024 में प्रथम सिंह ने शतक लगाया

तीसरे दिन लंच तक इंडिया ए का स्कोर 260/2

नई दिल्ली, 14 सितंबर (एजेंसियां)। दलीप ट्रॉफी 2024 दूसरे राउंड के तीसरे दिन शनिवार को इंडिया ए की ओर से प्रथम सिंह ने शतक लगाया। अनंतपुर में खेले जा रहे मैच में टीम ने लंच तक दूसरी पारी में 2 विकेट पर 260 रन बना लिए हैं। इंडिया ए ने इंडिया डी के खिलाफ 367 रन की बढ़त ले ली है। तिलक वर्मा 60 और रियान पराग 19 रन बनाकर नाबाद है। एक अन्य मुकाबले में इंडिया सी ने इंडिया बी के 525 रन के जवाब में पहली पारी में 2 विकेट पर 139 रन बना लिए हैं। कप्तान अभिमन्यु ईश्वरन 60 रन और रिंकू सिंह 4 रन बनाकर नाबाद लौटे। दूसरी पारी में इंडिया ए ने शानदार शुरुआत की। तीसरे दिन दूसरी पारी में टीम के बल्लेबाज प्रथम सिंह ने शतक लगाया।

उन्होंने 189 बॉल पर 122 रन की पारी खेली। इस दौरान 12 चौके और एक सिक्स लगाया। उनके अलावा तिलक वर्मा 60 रन बनाकर नाबाद है। कप्तान मयंक अग्रवाल ने 8 चौके की मदद से 56 रन बनाए। मयंक और प्रथम ने पहले विकेट के लिए 125 रन जोड़े। इससे पहले, इंडिया ए के खिलाफ इंडिया डी ने टॉस जीतकर पहले बॉलिंग चुनी। इंडिया ए ने पहली पारी में 290 रन बनाए। टीम के लिए शम्स मुलानी (89) और तनुष कोटियान (53) ने अर्धशतक लगाया। इंडिया डी की ओर से हर्षित राणा ने 4 विकेट झटके। विद्वत कावेरप्पा और अर्शदीप सिंह ने 2-2 विकेट लिए।

सारांश जैन और सौरभ कुमार को 1-1 विकेट मिला। 290 रन के जवाब में इंडिया डी 183 रन पर ऑलआउट हो गई। टीम की तरफ से सबसे ज्यादा 92 रन देवदत्त पडिक्कल ने बनाए। इंडिया ए की तरफ से खलील अहमद और आकिब खान ने 3-3 विकेट लिए। भारतीय टीम के स्टार बल्लेबाज और इंडिया डी के कप्तान श्रेयस को खलील अहमद ने 0 के स्कोर पर पवेलियन भेजा। वे हेलमेट के अंदर चश्मा लगाकर खेलने उतरे थे।

प्रथम सिंह के बाद तिलक वर्मा ने भी खेली शतकीय पारी

नई दिल्ली, 14 सितंबर (एजेंसियां)। दलीप ट्रॉफी 2024 के दूसरे चरण के मुकाबले में मयंक अग्रवाल की कप्तानी में इंडिया ए का सामना इंडिया डी के साथ हो रहा है जिसकी कप्तानी श्रेयस अय्यर कर रहे हैं। इस मैच की दूसरी पारी में इंडिया ए के लिए ओपनिंग करते हुए पहले प्रथम सिंह ने शतक लगाया और फिर इसके बाद तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी करने आए तिलक वर्मा ने भी अपनी टीम के लिए शतकीय पारी खेली। कप्तान मयंक अग्रवाल ने भी दूसरी पारी में अर्धशतक लगाया।

इस मैच की पहली पारी में इंडिया ए ने बल्लेबाजी करते हुए शम्स मुलानी के 89 रन और तनुष कोटियान के 53 रन की पारी के दम पर 290 रन बनाए। इसके जवाब में इंडिया डी ने पहली पारी में 193 रन बनाए। पहली पारी में इंडिया डी के लिए देवदत्त पडीक्कल ने सर्वाधिक 92 रन की पारी खेली, लेकिन पहली पारी में इंडिया ए को 97 रन की बढ़त मिली।

इंग्लैंड ने दूसरे टी-20 में ऑस्ट्रेलिया को हराया

लियाम लिविंगस्टोन प्लेयर ऑफ द मैच, सीरीज 1-1 से बराबर

कार्डिफ, 14 सितंबर (एजेंसियां)। इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के बीच खेली जा रही 3 मैचों की टी-20 सीरीज के दूसरे मुकाबले में इंग्लैंड ने ऑस्ट्रेलिया को 3 विकेट से हरा दिया। इसी के साथ सीरीज 1-1 से बराबर हो गई है। पहला मैच ऑस्ट्रेलिया 28 रन से जीता था। कार्डिफ के सोफिया गार्डन्स स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में इंग्लैंड के कप्तान फिल सॉल्ट ने टॉस जीतकर गेंदबाजी चुनी। ऑस्ट्रेलिया ने जेक फ्रेजर-मैकगर्क की पहली हाफ सेंचुरी और जोश इंग्लिश के 42 रन की मदद से 6 विकेट खोकर 193 रन बनाए।

लक्ष्य का पीछा करते हुए इंग्लिश ऑलराउंडर लियाम लिविंगस्टोन ने शानदार बल्लेबाजी की। उनके 87 और जैकब बेथेल के 44 रन की मदद से इंग्लैंड ने 19वें ओवर में 7 विकेट में 194 रन बनाकर जीत दर्ज की।

पावरप्ले में दोनों टीम ने 10 के रनरेट से रन बनाए

ऑस्ट्रेलिया ने पावरप्ले के 6 ओवर में 1 विकेट खोकर 67 रन बनाए। यहां दोनों ओपनर्स, मैथ्यू शॉर्ट और ट्रैविस हेड ने पहले विकेट के लिए 26 बॉल पर 52 रन जोड़े। ऑस्ट्रेलिया ने अपने पहले 50 रन महज 4 ओवर में बनाए। इंग्लैंड के कप्तान फिल सॉल्ट ने शानदार शुरुआत दी। उन्होंने 23 बॉल पर 39 रन बनाए जिसकी मदद से टीम ने शुरुआती 6 ओवर में 2 विकेट खोकर 65 रन बनाए।

जैक फ्रेजर मैकगर्क की पहली फिफ्टी

22 वर्षीय ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज जैक फ्रेजर मैकगर्क ने इंग्लैंड के खिलाफ अपनी पहली हाफ-सेंचुरी लगाई। उन्होंने 161 के स्ट्राइक रेट से बल्लेबाजी करते हुए 31 बॉल पर 50 रन बनाए। पारी में मैकगर्क ने 4 चौके और 2 छक्के लगाए। उनके अलावा विकेटकीपर जोश इंग्लिस ने भी 42 रन की तेज पारी खेली। कप्तान ट्रेविस हेड ने 14 बॉल में 31 रन बनाए। इंग्लैंड की तरफ से ब्रीडन कार्स और लायम लिविंगस्टोन ने 2-2 विकेट लिए। जबकि सैम करन और आदिल रशीद को 1-1 विकेट मिला।

लायम लिविंगस्टोन ने मैच जिताया 194 रन के टारगेट का पीछा करते हुए कप्तान फिल सॉल्ट ने टीम को शानदार शुरुआत दिलाई। सॉल्ट ने 23 गेंद में 39 रन बनाए। इसके बाद विल जैक्स और जॉर्डन कॉक्स जल्दी आउट हो गए। चौथे नंबर पर उतरे लायम लिविंगस्टोन ने पारी को संभाला और विस्फोटक बल्लेबाजी करते हुए 185 के स्ट्राइक रेट से 47 बॉल में 87 रन ठोके। उन्होंने अपनी इस पारी में 6 चौके और 5 छक्के भी लगाए। इसके अलावा जैकब बेथैल ने 24 गेंद पर 44 रन ठोके। दोनों ने मिलकर 47 बॉल पर 90 रन जोड़े।

'खेल अदालत के फैसले को चुनौती नहीं देना चाहती थीं विनेश फोगाट'

वकील हरीश साल्वे का बयान

नई दिल्ली, 14 सितंबर (एजेंसियां)। वकील हरीश साल्वे ने खुलासा किया है कि विनेश फोगाट पेरिस ओलंपिक 2024 में संयुक्त रजत पदक देने की उनकी अपील के खिलाफ कोर्ट ऑफ आर्बिट्रेशन फॉर स्पोर्ट (सीएएस) द्वारा दिए गए फैसले को चुनौती नहीं देना चाहती थीं।

विनेश को महिला फ्रीस्टाइल 50 किग्रा कुश्ती स्पर्धा के फाइनल से अयोग्य घोषित कर दिया गया था क्योंकि उन्हें फाइनल के दिन निर्धारित वजन सीमा से 100 ग्राम अधिक भारी पाया गया था। वह न सिर्फ फाइनल से बल्कि पदक की दौड़ से भी पूरी तरह से बाहर हो गईं और अंतिम स्थान पर धकेल दी गईं। फैसले से व्यथित फोगाट ने इसके खिलाफ खेल पंचाट में अपील दायर की और बाद में अदालत में हरीश साल्वे ने उनका प्रतिनिधित्व किया जो भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) की ओर से उनका मामला लड़ रहे थे।

हालांकि, एक हफ्ते तक चली सुनवाई के बाद भी विनेश का फैसला उनके पक्ष में नहीं आया और उन्हें पेरिस से खाली हाथ लौटना पड़ा। हाल ही में विनेश ने भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) अध्यक्ष पीटी उषा पर निशाना साधा था और आईओए से समर्थन न मिलने का आरोप लगाया था। उन्होंने वकीलों को लेकर भी निराशा व्यक्त की थी। उनका मानना था कि इसी वजह से उनका पदक छिन गया। उनके आरोपों का जवाब देते हुए साल्वे ने मामले की कार्यवाही का खुलासा करने के लिए सार्वजनिक रूप से सामने आए और विनेश के वकीलों से समन्वय की कमी का आरोप लगाया। साल्वे ने टाइम्स नाउ को बताया, 'शुरुआत में कुछ समय तक समन्वय का पूरी तरह अभाव रहा। ऐसा इसलिए है क्योंकि भारतीय ओलंपिक संघ द्वारा नियुक्त की गई बहुत अच्छी कानूनी फर्म को विनेश द्वारा नियुक्त किए गए कुछ वकीलों ने कहा था कि 'हम आपके साथ कुछ भी साझा नहीं करेंगे, हम आपको कुछ भी जानकारी नहीं देंगे।

सरफराज और मुशीर के बाद रिंकू सिंह भी हुए फेल

नई दिल्ली, 14 सितंबर (एजेंसियां)। दलीप ट्रॉफी 2024 के दूसरे चरण के मुकाबले में इंडिया बी टीम का सामना इंडिया सी टीम के साथ हो रहा है। इस मुकाबले में इंडिया सी ने पहले बल्लेबाजी की थी और इशान किशन की 111 रन की शतकीय पारी की मदद से 525 रन बनाए। इसके जवाब में इंडिया बी की शुरुआत तो अच्छी रही, लेकिन बाद में इस टीम के कुछ बेहतरीन बल्लेबाज रन बनाने में कामयाब नहीं रहे जिसमें मुशीर खान, सरफराज खान, रिंकू सिंह और नितीश रेड्डी शामिल रहे। हालांकि इंडिया बी के कप्तान अभिमन्यु ईश्वरन ने गजब का इंटेंट पहली पारी में दिखाया और टीम के लिए शतकीय पारी खेली।

टीम इंडिया का गेंदबाजी कोच बनना मेरे लिए खास पल : मोर्ने मोर्कल

नई दिल्ली, 14 सितंबर (एजेंसियां)। भारतीय पुरुष टीम के गेंदबाजी कोच बनने के बाद मोर्ने मोर्कल ने अपने पिता के साथ हुई बातचीत के बारे में खुलकर बात की। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा की अगुवाई में टीम इंडिया ने बांग्लादेश टेस्ट से पहले अभ्यास शुरू कर दिया है। टीम इंडिया के साथ मोर्ने मोर्कल भी बतौर गेंदबाजी कोच जुड़ चुके हैं। मोर्ने मोर्कल, जिन्होंने आधिकारिक तौर पर एक सितंबर को अपना पद संभाला था, ने मुख्य कोच गौतम गंभीर के सहयोगी स्टाफ में शामिल होने पर अपनी खुशी और सम्मान की भावना भी साझा की, जो उनकी कोचिंग यात्रा में एक बड़ी उपलब्धि है।

इस पूर्व तेज गेंदबाज का दक्षिण अफ्रीका के साथ 2006 से 2018 तक 12 साल का प्रभावशाली करियर रहा, जिसमें उन्होंने सभी प्रारूपों में 247 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले और 544 विकेट लिए। भारतीय टीम के साथ उनका पहला काम बांग्लादेश के खिलाफ आगामी दो मैचों की टेस्ट सीरीज होगी, जो 19 सितंबर से चेन्नई में शुरू होगी। टेस्ट सीरीज मौजूदा विश्व टेस्ट चैंपियनशिप चक्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जहां भारत स्टैंडिंग में शीर्ष पर है जबकि बांग्लादेश पाकिस्तान में 2-0 की शानदार सीरीज जीत के बाद चौथे स्थान पर है। बीसीसीआई द्वारा पोस्ट किए गए एक वीडियो में अफ्रीकी तेज गेंदबाज ने कहा, ₹जब मैंने कॉल खत्म की, तो मैं कमरे में लगभग पांच मिनट तक इस पर विचार करता रहा और फिर मैंने सबसे पहले अपने पिता को फोन किया।

गौतम गंभीर का बड़ा रिकॉर्ड खतरे में, विराट कोहली टेस्ट सीरीज में रच सकते हैं इतिहास

इंदौरन, 14 सितंबर (एजेंसियां)। भारत और बांग्लादेश के बीच दो टेस्ट मैचों की सीरीज खेली जाएगी। पहला मैच 19 सितंबर और दूसरा टेस्ट मुकाबला 27 सितंबर से खेला जाएगा। दोनों टीमों के स्क्वॉड का एलान हो चुका है। विराट कोहली टीम इंडिया में वापसी करते नजर आएंगे। सरफराज खान, ध्रुव जुरेल और यश दयाल को टीम में शामिल किया गया है। वहीं, नजमुल हसन शांतो की कप्तानी में बांग्लादेश टीम टेस्ट सीरीज जीतना चाहेगी। दोनों टीमों के हेड टू हेड रिकॉर्ड की बात करें तो मैन इन ब्लू का पलड़ा भारी रहा है। 13 टेस्ट मैचों में 11 मुकाबलों में भारत ने जीत हासिल की है। इस लिस्ट में सचिन तेंदुलकर पहले स्थान पर है। उन्होंने 2000 से 2010 से बीच बांग्लादेश के खिलाफ 7 टेस्ट मैच की 9 पारियों में 820 रन बनाए हैं, जिसमें 5 शतक लगाए हैं। उनका हाईस्कोर 248* रन है।

कोरिया और मलेशिया ने खेला 3-3 से ड्रा; दोनों टीमें सेमीफाइनल की दौड़ में बरकरार

मोकी, 14 सितंबर (एजेंसियां)। शनिवार को मोकी हॉकी ट्रेनिंग बेस में चल रही एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी में रोमांचक मुकाबले में कोरिया ने आखिरी क्षणों में गोल करके मलेशिया को 3-3 से बराबरी पर रोक दिया। इस मैच के बाद कोरिया अंक तालिका में तीसरे स्थान पर रहा, जबकि मलेशिया चौथे स्थान पर बना हुआ है। लीग मैचों के आखिरी दिन सप्ताहांत में दर्शकों के स्टेडियम में जल्दी पहुंचने के कारण कोरिया और मलेशिया ने उम्मीद के मुताबिक प्रदर्शन किया और दोनों टीमें आखिरी हूटर तक एक-दूसरे से भिड़ती रहीं।

अजराई अबू कमाल (28'), नोर्स्याफिक सुमंत्रि (35') और फैजल सारी (55') के गोलों से मलेशिया ने बढ़त बनाए रखी, लेकिन यांग जिहुन ने 60+ मिनट में अपना दूसरा गोल दाग दिया। उन्होंने पहले क्वार्टर में चौथे मिनट में गोल करके कोरिया को 1-0 की बढ़त दिलाई थी, जबकि चेओलियन पार्क (42') ने कोरिया के लिए दूसरा गोल किया। शुरुआत से ही मैच में मलेशिया का दबदबा रहा, क्योंकि उन्होंने सर्कल में महत्वाकांक्षी हमले किए और शुरुआती क्वार्टर में गोल पर 13 शॉट लगाए। हालांकि, कोरिया ने अपने विरोधियों की रक्षात्मक गलतियों का फायदा उठाया और खेल की शुरुआत में ही एक पीसी अर्जित किया। फॉर्म में चल रहे जिहुन यांग ने गेंद को नेट में डालने में कोई गलती नहीं की। अगले क्वार्टर में, मलेशिया खराब रूपांतरण दर में सुधार करने में सक्षम था क्योंकि उन्होंने सर्कल में बनाए गए केवल तीन मौकों पर गोल किया। कमाल अबू ने एक बेहतरीन फील्ड गोल किया और बराबरी की। उन्होंने 35वें मिनट में 2-1 की बढ़त ले ली जब सुमंत्रि ने एक और फील्ड गोल किया। कोरिया 42वें मिनट में पार्क के फील्ड गोल के माध्यम से स्कोर 2-2 करने में सक्षम था। अंतिम क्वार्टर में जाने तक मैच तनावपूर्ण बना रहा। दोनों टीमों के जीतने के लिए अंक जुटाने के प्रयास के बीच मलेशिया ने अपने आक्रमण में तेजी ला दी और लगातार पीसी जीते तथा 55वें मिनट में अपने शीर्ष ड्रैगफ्लिकर फैजल सारी के माध्यम से गोल करने में सफल रहे। लेकिन दुर्भाग्य से, मैच के अंतिम सेकंड में कोरिया ने पीसी से जिहुन के गोल से जीत हासिल की, जिससे मैच बराबरी पर समाप्त हुआ तथा दोनों टीमों को एक-एक अंक बांटना पड़ा।

तेलंगाना 2029-30 तक 20,000 मेगावाट हरित बिजली का उत्पादन करेगा: भट्टी

उप मुख्यमंत्री ने पांच सब स्टेशनों की आधारशिला रखी

धर्माराम, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। उपमुख्यमंत्री भट्टी विक्रमार्क ने घोषणा की है कि 2029-30 तक तेलंगाना में 20,000 मेगावाट हरित बिजली का उत्पादन किया जाएगा। शनिवार को पेददापल्ली जिले के धर्माराम में एक जनसभा को संबोधित करते हुए भट्टी विक्रमार्क ने कहा कि कांग्रेस सरकार राज्य में बिना किसी बिजली कटौती के गुणवत्तापूर्ण बिजली की आपूर्ति कर रही है और सरकार का प्रदर्शन और प्रतिबद्धता उन लोगों के मुंह पर तमाचा है, जो कहते थे कि अगर कांग्रेस पार्टी सत्ता में आई तो तेलंगाना में बिजली नहीं रहेगी। भट्टी ने खुलासा किया कि 25 से 30 गांवों में पायलट आधार पर सरकार के खर्च पर किसानों के पंप सेटों के लिए सौर ऊर्जा पैनल उपलब्ध कराए जा रहे हैं। भट्टी ने खुलासा किया, "इससे किसानों को अपनी फसलों के साथ-साथ सौर ऊर्जा से पैसा कमाने में मदद मिलेगी। सरकार किसानों द्वारा उत्पादित सौर ऊर्जा को ग्रिड से जोड़ेगी और उनसे इसे खरीदेगी।" उपमुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार पहले से ही 200 यूनिट तक मुफ्त बिजली की आपूर्ति कर रही है। आने वाले दिनों में सरकार कुछ चुनिंदा गांवों में घरों पर सौर ऊर्जा पैनल लगाएगी, जिससे न केवल घरों को मुफ्त बिजली मिलेगी, बल्कि अतिरिक्त बिजली भी पैदा होगी, जो पावर ग्रिड से जुड़ी होगी और सरकार खुद बिजली खरीदेगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार का प्रयास तेलंगाना को बिजली उत्पादन और वितरण में देश का एक आदर्श राज्य बनाना है।

भट्टी ने कहा कि कांग्रेस सरकार सुपर क्रिटिकल तकनीक के साथ रामागुंडम थर्मल पावर प्लांट को पुनर्जीवित करने जा रही है, जबकि पिछली सरकार ने प्लांट को ठंडे बस्ते में डाल दिया था। भट्टी ने कहा, "10,000 करोड़ रुपये के निवेश से 800 मेगावाट के रामागुंडम थर्मल पावर प्लांट की जल्द ही आधारशिला रखी जाएगी।" उन्होंने दोहराया कि कांग्रेस सरकार गरीबों और किसानों के कल्याण के लिए काम कर रही है। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार ने 15 दिनों के भीतर किसानों की कर्ज माफी के लिए 18,000 करोड़ रुपये जमा करके एक रिकॉर्ड बनाया है। उपमुख्यमंत्री ने बताया कि कांग्रेस सरकार सिर्फ किसानों की कर्ज माफी तक ही सीमित नहीं है, बल्कि रायतु भीमा और फसल बीमा योजनाएं भी लागू करेगी। उन्होंने कहा, "हम तेलंगाना में संपत्ति बनाने और आय पैदा करने और इसे गरीबों में वितरित करने के उद्देश्य से लगातार काम कर रहे हैं।" भट्टी ने 31.69 करोड़ रुपये की लागत से पेड्डापल्ली, धर्मपुरी विधानसभा क्षेत्रों में पांच सब स्टेशनों की आधारशिला रखी।

सभी थर्मल प्लांटों को हो कोयले की आपूर्ति

सिंगरेनी के सीएमडी ने अधिकारियों को दिए निर्देश

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। सिंगरेनी कोलियरीज कंपनी लिमिटेड (एससीसीएल) के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक एन बलराम ने शनिवार को अधिकारियों को राज्य में स्थित सभी थर्मल प्लांटों को कोयले की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। बलराम ने कंपनी की सभी कोयला खदानों के महाप्रबंधकों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बातचीत की और उनसे प्रतिदिन कम से कम 2 लाख टन कोयला उत्पादन करने के लिए कदम उठाने को कहा। उन्होंने कहा कि सिंगरेनी कंपनी की जिम्मेदारी है कि वह राज्य की बिजली जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त कोयला उपलब्ध कराए।

बीआरएस हैदराबाद की शांति भंग कर रही है : कांग्रेस

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता जग्गा रेड्डी ने कड़ी टिप्पणी करते हुए कहा है कि अगर कोई मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी का अपमान करता है, तो कांग्रेस कार्यकर्ता उसकी जीभ काटने में संकोच नहीं करेंगे। शनिवार को यहां गांधी भवन में मीडिया से बात करते हुए, जग्गा रेड्डी ने परिवहन मंत्री पोन्नम प्रभाकर के साथ बीआरएस नेताओं पर हैदराबाद में शांति भंग करने और अशांति भड़काने का प्रयास करने का आरोप लगाया। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा, "रेवंत रेड्डी का अपमान करने वाले किसी भी व्यक्ति को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। अगर पूर्व मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव या उनके बेटे केटी रामा राव सहित बीआरएस नेता हमारे नेता के बारे में अनुचित टिप्पणी करते हैं, तो हम कठोर कार्रवाई करेंगे।" पूर्व विधायक जग्गा रेड्डी ने आरोप लगाया कि बीआरएस नेताओं ने पहले ही हैदराबाद के शांतिपूर्ण माहौल को दूषित कर दिया है। उन्होंने कहा कि प्रतिद्वंद्वी विधायक अरेकापुडी गांधी और कौशिक रेड्डी से जुड़े मुद्दे बीआरएस पार्टी के आंतरिक मामले हैं। उन्होंने बीआरएस पर गणेश विसर्जन समारोह में हस्तक्षेप करने का आरोप लगाते हुए कहा कि राज्य सरकार विसर्जन के सुचारू संचालन को सुनिश्चित करने के लिए सभी आवश्यक सावधानी बरत रही है। जग्गा रेड्डी ने यह भी बताया कि 2014 से 2018 के बीच, जब बीआरएस ने 4 कांग्रेस सांसदों, 25 विधायकों और 18 एमएलसी को शामिल किया, तो बीआरएस नेताओं ने कोई आपत्ति क्यों नहीं जताई? क्या यह केसीआर नहीं थे जिन्होंने दलबदल करने वाले नेताओं को मंत्री पद की पेशकश की थी? उन्होंने सवाल किया कि क्या केसीआर दलबदल और राजनीतिक जोड़-तोड़ की इस संस्कृति के पीछे मास्टरमाइंड नहीं हैं। उन्होंने कहा कि जब से केसीआर तेलंगाना के मुख्यमंत्री बने थे, राजनीतिक नैतिकता खत्म हो गई है। भाजपा के प्रभाव में केसीआर कांग्रेस की पीठ में छुरा घोंप रहे हैं।

विश्व शिखर सम्मेलन को संबोधित करेंगे बीआरएस नेता पोन्नाला

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। वरिष्ठ राजनीतिज्ञ और बीआरएस नेता पोन्नाला लक्ष्मैया 18 से 21 सितंबर तक मैक्सिको के मॉन्टेरी में आयोजित होने वाले नोबेल शांति पुरस्कार विजेताओं के 19वें विश्व शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे। शिखर सम्मेलन का आयोजन विश्व मूल्य बैठक (एबीपी) द्वारा किया जाएगा, जो मेक्सिको के एक राज्य, न्यूवो लियोन की 200वीं स्थापना वर्षगांठ का जश्न मनाएगा। नोबेल शांति पुरस्कार विजेताओं के विश्व शिखर सम्मेलन के स्थायी सचिवालय की अध्यक्ष एकातेरिना जाग्लादिना ने पोन्नाला को कार्यशालाओं और ब्रेक-आउट सत्रों की श्रृंखला में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया था, जिसका उद्देश्य युवाओं को शांति और प्रगति के सक्रिय एजेंट की भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करना था।

केटीआर ने की सीएम रेवंत की आलोचना

हैदराबाद में अराजकता, हिंसा भड़काकर माहौल खराब करने का आरोप

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। हैदराबाद में अराजकता और हिंसा भड़काकर माहौल खराब करने के लिए राज्य की कांग्रेस सरकार पर तीखा हमला करते हुए बीआरएस के कार्यकारी अध्यक्ष के टी रामा राव ने शनिवार को बिगड़ते हालात के लिए मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी के अक्षम शासन को जिम्मेदार ठहराया। बीआरएस विधायक पदी कौशिक रेड्डी और उनके परिवार से मिलने उनके आवास पर पहुंचे, जहां विधायक अरेकापुडी गांधी और उनके लोगों के नेतृत्व में कांग्रेस की भीड़ ने हमला किया था। रामा राव ने शहर के बीचों-बीच दिनदहाड़े की गई गुंडागर्दी की निंदा की।

उन्होंने कहा कि पिछले 10 सालों में राज्य में ऐसी बर्बरता कभी नहीं देखी गई, उन्होंने मौजूदा हालात के लिए अक्षम मुख्यमंत्री को दोषी ठहराया, जिनके पास गृह विभाग भी है, और 30 दिनों में 28 हत्याओं को अराजकता का सबूत बताया। उन्होंने रेवंत रेड्डी के मुख्यमंत्री बने रहने की योग्यता पर सवाल उठाया, उनकी लगातार अनुपस्थिति और नई दिल्ली में पार्टी मुख्यालय के दौरे का हवाला दिया।

कौशिक रेड्डी द्वारा गांधी से पूछे गए सवालों को सही ठहराते हुए रामा राव ने गांधी की मौजूदा पार्टी संबद्धता के बारे में वही सवाल दोहराए। उन्होंने कहा कि रेवंत रेड्डी ध्यान बंटाने और सुर्खियां बटोरने के लिए हथकंडे अपना रहे हैं। उन्होंने भविष्यवाणी की कि रेवंत इतिहास में सबसे अयोग्य मुख्यमंत्री के रूप में जाने जाएंगे।

लक्ष्मण ने प्रजा पालन दिवस समारोह पर उठाए सवाल

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। 17 सितंबर 1948 को तत्कालीन हैदराबाद राज्य को भारतीय संघ में एकीकृत किया गया था, को तेलंगाना प्रजा पालन दिवस के रूप में मनाने के राज्य सरकार के फैसले पर दोष लगाते हुए वरिष्ठ भाजपा नेता और राज्यसभा सदस्य के लक्ष्मण ने आरोप लगाया कि एआईएमआईएम नेतृत्व के दबाव में मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी परेड ग्राउंड में केंद्र द्वारा आधिकारिक रूप से आयोजित तेलंगाना मुक्ति दिवस समारोह में भाग नहीं ले रहे हैं।

शुक्रवार को परेड ग्राउंड में तेलंगाना मुक्ति दिवस समारोह के लिए किए जा रहे प्रबंधों का निरीक्षण करने के बाद मीडिया को संबोधित करते हुए लक्ष्मण ने आरोप लगाया कि राज्य सरकार मजलिस पार्टी को खुश करने के लिए तेलंगाना मुक्ति दिवस समारोह से दूर रह रही है। मुख्यमंत्री पर कड़ा प्रहार करते हुए वरिष्ठ भाजपा नेता ने कहा कि रेवंत रेड्डी तेलंगाना मुक्ति दिवस के इतिहास के बारे में लोगों को गुमराह करने के लिए तेलंगाना प्रजा पालन दिवस का आयोजन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि 17 सितंबर को तेलंगाना प्रजा पालन दिवस मनाने का कोई मतलब नहीं है। यह सब नाटक मजलिस को खुश करने के लिए किया जा रहा है। कांग्रेस भी बीआरएस की इसी नीति पर चल रही है।

1.10 करोड़ रुपये से सजाई गई गणेश प्रतिमा

कोत्तागुडेम, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। जिले में एक गणेश मंडपम के आयोजकों ने अत्यधिक भव्य तरीके से भक्ति भाव प्रदर्शित करते हुए गणेश प्रतिमा को नोटों से सजाया, जिससे भक्तगण आश्चर्यचकित हो गए। पलोंचा के अंबेडकर केंद्र में गणेश मंडप बनाने वाली कापू संघम गणेश उत्सव समिति ने मूर्ति को 1.10 करोड़ रुपये के नोटों से सजाया है। आयोजकों ने फूलों की डिजाइन बनाने के लिए 500, 200 और 100 रुपये के नए नोटों का इस्तेमाल किया। यह नकदी समिति के सदस्यों ने दी। पूरे मंडप में पुष्प डिजाइन बनाए गए थे और देवता को एक विशाल माला से सजाया गया था।

समिति के प्रमुख एनपी नायुडू ने मीडिया को बताया कि सजावट शुक्रवार को की गई थी, जिसे लक्ष्मी पूजा करने के लिए शुभ दिन माना जाता है और सजावट शनिवार को हटा दी गई। नायुडू ने बताया कि समिति पिछले 28 वर्षों से अंबेडकर केंद्र में गणेश प्रतिमा स्थापित कर गणेश नवरात्रि मनाती आ रही है।

पिछले साल उन्होंने मंडप को 1 करोड़ रुपये की मुद्रा से सजाया था और इस साल इसमें 10 लाख रुपये और जोड़ दिए गए। इस नजारे को देखने के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु मंडप में आए और सेल्फी ली। दम्मापेट केंद्र के एक भक्त के. सत्यनारायण ने कहा कि वह अपने परिवार के साथ गणेश मंडपम आए थे और वे भगवान गणेश को नोटों से सजा हुआ देखकर बहुत प्रसन्न हुए।

भाजपा विधायक ने की चावल खरीद निविदाओं की सीबीआई जांच की मांग

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। आदिलाबाद भाजपा विधायक पायल शंकर ने 35 लाख टन धान के निपटान और बढ़िया चावल की खरीद के लिए बुलाई गई वैश्विक निविदाओं में कथित बहु-करोड़ रुपये के घोटाले की केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) से जांच की मांग की। शनिवार को यहां एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए शंकर ने आरोप लगाया कि कांग्रेस 35 लाख टन धान के लिए वैश्विक निविदाओं के नाम पर सरकारी धन की लूट कर रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि बोली हासिल करने वाली कंपनियों को 90 दिनों के भीतर धान उठाना था, लेकिन अभी तक उन्होंने ऐसा नहीं किया है, जिससे सरकारी खजाने को भारी नुकसान हो रहा है। उन्होंने कहा कि सरकार उन पर जुर्माना नहीं लगा रही है।

उन्होंने आरोप लगाया कि समझौते के अनुसार कंपनियों को 35 लाख टन चावल उठाना था और 90 दिनों के भीतर सरकार को 7,245 करोड़ रुपये का भुगतान करना था, लेकिन बोलीदाता स्थानीय चावल मिल मालिकों को ब्लैकमेल कर रहे थे और 2,230 रुपये प्रति क्विंटल की मांग कर रहे थे, जो उनकी निविदा दरों से 200 रुपये अधिक है, जिससे 700 करोड़ रुपये का घोटाला हुआ। उन्होंने सरकार से इस घोटाले की तत्काल सीबीआई जांच कराने की मांग की।

पुलिस ने सीएलसी नेताओं को हिरासत में लिया

कोत्तागुडेम, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। पुलिस ने सिविल लिबर्टीज कमेटी (सीएलसी) के नेताओं को उस समय हिरासत में ले लिया, जब वे उस स्थल का निरीक्षण करने जा रहे थे, जहां हाल ही में जिले के करकागुडेम पुलिस थाना क्षेत्र के अंतर्गत मोथे गांव के पास मुठभेड़ हुई थी। सीएलसी अध्यक्ष प्रोफेसर गद्दाम लक्ष्मण और महासचिव एन नारायण राव तथा बस में यात्रा कर रहे नौ अन्य लोगों को शनिवार को मनुगुर के पास पीवी कॉलोनी रोड पर श्री अभयंजनेया स्वामी मंदिर क्षेत्र में रोका गया।

उन्हें स्कूल बस में अश्वपुरम पुलिस स्टेशन ले जाया गया, बाद में उन्हें कथित तौर पर खम्मम स्थानांतरित कर दिया गया। जन संगठनों के सदस्यों ने सीएलसी नेताओं की हिरासत की निंदा करते हुए कोत्तागुडेम के बस स्टैंड क्षेत्र में विरोध प्रदर्शन किया। उन्होंने राज्य सरकार के खिलाफ नारे लगाए। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी ने तेलंगाना में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए एक लोकतांत्रिक सरकार बनाने का वादा किया था, लेकिन उनके दावों के विपरीत सीएलसी नेताओं को उस समय हिरासत में ले लिया गया जब वे तथ्य खोजने के मिशन पर थे।

हैदराबाद में मिलाद-उन-नबी की तैयारियां जोरों पर

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। 16 सितंबर को पड़ने वाले मिलाद-उन-नबी के लिए शहर भर में जोरदार तैयारियां चल रही हैं। यह दिन पैगंबर मोहम्मद की जयंती का प्रतीक है और हिजरी कैलेंडर के तीसरे महीने रबी उल अव्वल के 12वें दिन मनाया जाता है। इस दिन समुदाय समूह रक्तदान, फल वितरण, वस्त्र दान, धार्मिक बैठकें और इस्लाम से संबंधित विषयों पर प्रतियोगिताएं आयोजित करते हैं। विभिन्न स्थानों पर आयोजित शिविरों में गरीबों और बेसहारा लोगों को भोजन भी परोसा जाता है। इस अवसर पर शहर में अगले दो दिनों में लगभग दो दर्जन रक्तदान शिविर आयोजित किए जाएंगे।

सामाजिक कार्यकर्ता मोहम्मद अकरम ने बताया कि रक्तदान शिविर कई गैर-सरकारी संगठनों के सहयोग से असाफिया लाइब्रेरी अफजलगंज, प्राइम फंक्शन हॉल मल्लेपल्ली, राजेंद्रनगर, फलकनुमा, खिलवत और अन्य स्थानों पर आयोजित किए जा रहे हैं। मौलाना अहसन अल हमूमी, खतीब, शाही मस्जिद, पब्लिक गार्डन ने कहा कि लोगों को कुछ ऐसा करना चाहिए जिससे मानवता को लाभ हो। पब्लिक गार्डन में उन्होंने शुक्रवार को फलों के पौधे लगाए, जिसमें जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों ने भाग लिया। कुछ युवा संगठनों ने शहर के सरकारी स्कूलों में बच्चों के बीच शिक्षण सामग्री और स्टेशनरी वितरित करने का काम अपने हाथ में लिया है। कुछ सामाजिक संगठन कटेदान औद्योगिक क्षेत्र में जाकर कामगारों, खासकर महिलाओं के बीच नाश्ता, छाता और जूते वितरित करने की योजना बना रहे हैं। अखिरथ वेलफेयर सोसाइटी के स्वयंसेवक मोहम्मद आमिर ने कहा कि यह खुशी का अवसर है और समाज की सेवा के लिए कड़ी मेहनत करने वाले लोगों को याद किया जाना चाहिए। हम कारखानों का दौरा करने और महिला श्रमिकों के बीच जूते और छाते उपहार में देने की योजना बना रहे हैं।

इस अवसर पर मस्जिदों और समारोह हॉलों में कई सार्वजनिक बैठकें आयोजित की जाएंगी, जबकि हैदराबाद भर में मस्जिदों और सड़कों को रोशन किया जा रहा है। मंगलवार को होने वाले गणेश विसर्जन जुलूस के मद्देनजर, केंद्रीय मिलाद जुलूस के आयोजकों ने राज्य प्रशासन के अनुरोध पर अपनी रैली का कार्यक्रम गुरुवार के लिए पुनर्निर्धारित कर दिया है। यह जुलूस आमतौर पर मिलाद-उन-नबी के दिन मक्का मस्जिद से निकाला जाता है और उस दिन कई श्रद्धांजलि जुलूस मुख्य जुलूस में शामिल होते हैं।

आवारा कुत्तों के हमले में दो बच्चे घायल

पेड्डापल्ली, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। मंथनी मंडल के स्वर्णपल्ली में शनिवार को आवारा कुत्तों के हमले में दो बच्चे घायल हो गए। ग्रामीणों के अनुसार, आवारा कुत्तों ने बच्चों पर उस समय हमला किया जब वे अपने घरों के सामने खेल रहे थे। हमले में नालाबोथुला मनसा श्री (5) और कोरावेना वेदांश (3) घायल हो गए। परिजनों ने उन्हें मंथनी सरकारी अस्पताल पहुंचाया जहां उनका इलाज किया गया।

डेंगू से 7 साल की बच्ची की मौत

मेदक, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। नरसापुर कस्बे में शनिवार को सात वर्षीय एक बच्ची की डेंगू से मौत हो गई। नरसिंह और लहरी की बेटी जिकला सहस्रा (7) एक निजी स्कूल में कक्षा 1 की छात्रा है और 3 दिन पहले बीमार पड़ गई थी। सहस्रा को कस्बे के एक डॉक्टर के पास ले जाया गया, जिसने उसे कुछ दवाएं दी थीं। वह शनिवार को स्कूल गई थी। हालांकि, वह कक्षा में ही बेहोश हो गई, जिसके बाद उसे कॉर्पोरेट अस्पताल ले जाया गया, जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। उसके माता-पिता ने बताया कि डेंगू होने के बाद से उसका प्लेटलेट काउंट काफी कम हो गया था।

ट्रैक्टर धोते समय युवक की टैंक में डूबने से मौत

मेदक, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। नरसापुर मंडल के अवांचा गांव में गणेश उत्सव उस समय दुखद हो गया जब शनिवार को गणेश प्रतिमा जुलूस के लिए ट्रैक्टर धोने के दौरान एक युवक टैंक में डूब गया। गंटा श्रीनिवास (26) और उसके दोस्तों ने गांव में एक मूर्ति स्थापित की थी। वे शनिवार को मूर्ति का विसर्जन करना चाहते थे, इसलिए युवक ने ट्रैक्टर को सजाने से पहले उसे धोने के लिए एक टैंक में ले गया। श्रीनिवास पानी की गहराई से अनजान होकर पानी में थोड़ा अंदर चला गया। वह पानी में गायब हो गया। उसके दोस्तों ने उसे बचाने का प्रयास किया लेकिन बचा नहीं सके। मामला दर्ज कर लिया गया है और शव को पोस्टमार्टम के लिए नरसापुर के सरकारी अस्पताल ले जाया गया है।

जिला साइबर अपराध समन्वय केंद्र का उद्घाटन

कोत्तागुडेम, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। पुलिस अधीक्षक बी रोहित राजू ने शनिवार को यहां नव स्थापित जिला साइबर अपराध समन्वय केंद्र का उद्घाटन किया। इस अवसर पर बोलते हुए एसपी ने कहा कि चंचुपल्ली पुलिस स्टेशन में स्थापित यह केंद्र जिले भर में साइबर अपराध के पीड़ितों की सहायता करेगा और उन्हें खोई हुई धनराशि वापस दिलाने में मदद करेगा। साइबर अपराध के पीड़ितों की सहायता के लिए 28 पुलिस स्टेशनों में एक-एक साइबर योद्धा को नियुक्त किया गया है।

साइबर अपराधी समय-समय पर नई-नई तरकीबें ईजाद कर भोले-भाले लोगों के खातों से पैसे उड़ा रहे हैं। उन्होंने कहा कि साइबर अपराध समन्वय केंद्र सभी थानों में दर्ज मामलों का समाधान करने के साथ ही लोगों को साइबर अपराधों के प्रति सचेत करेगा। रोहित राजू ने बताया कि जिला पुलिस सभी थानों में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर लोगों को साइबर अपराधों से बचने के तरीके बताएगी। साइबर अपराधों के कारण पैसे गंवाने वाले लोगों को तुरंत टोल फ्री नंबर 1930 पर कॉल कर शिकायत दर्ज करानी चाहिए।

गोल्डन ऑवर के भीतर शिकायत दर्ज करना महत्वपूर्ण था क्योंकि साइबर अपराधियों के बैंक खाते फ्रीज किए जा सकते थे और प्रभावित व्यक्तियों को अपनी नकदी वापस पाने का मौका मिलता था। अब तक जिले भर में 265 साइबर अपराध के मामले दर्ज किए गए हैं। एसपी ने बताया कि साइबर अपराधियों के खातों से 2.61 करोड़ रुपये की राशि बरामद कर शिकायतकर्ताओं को वापस कर दी गई है। इस अवसर पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (संचालन) परितोष पंकज, डीएसपी अब्दुल रहमान, एसबी निरीक्षक नागराजू और श्रीनिवास, चुंचुपल्ली सीआई वेंकटेश्वरलू, साइबर अपराध निरीक्षक जितेंद्र और अन्य उपस्थित थे।

आरटीसी बस की चपेट में आने से महिला की मौत

हैदराबाद, 14 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। शुक्रवार रात माधापुर में सड़क दुर्घटना में एक महिला पैदल यात्री की मौत हो गई। बरकतपुरा की रहने वाली के माधवी (25) माधापुर की एक कंपनी में काम करती थी और ड्यूटी के बाद घर लौट रही थी। रात करीब 8.30 बजे पीड़िता माधापुर में कोत्तागुडा चौराहा पार कर रही थी, तभी आरटीसी बस ने उसे पीछे से टक्कर मार दी। माधापुर पुलिस ने बताया कि घायल पीड़िता को एक निजी अस्पताल ले जाया गया और बाद में उसे गांधी अस्पताल में स्थानांतरित कर दिया गया, जहां शनिवार तड़के इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। बस चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है और जांच जारी है।

Printed and published by Dr. Gireesh Sanghi on behalf of AGA Publications Ltd., at 396, Lower Tankbund, Hyderabad-500080 Editor: *Dhirendra Pratap Singh *responsible for selection of news under the PRB Act. Postal Licence H/SD/380/21-22, Phone:27644999. Fax:27642512, RNI No.69340/98, Regd.:No.AP/HIN/00196/01/1/97/TC.